दैनिक

जयपुर टाइम्स

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

नई सोच नई रफ्तार

jaipurtimes.org
twitter.com/JaipurTimes2
dainikjaipurtimes
youtube.com/c/JaipurTimes
instagram.com/jaipurtimesjt

वर्ष : 10 | अंक : 51 | ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 | जयपुर, बुधवार 12 मार्च, 2025 | ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 | ■ मूल्य : 1.5 रुपए | ■ पृष्ठ : 8+2

न्यूज इनबॉक्स

अरविंद केजरीवाल की नहीं थम रही मुसीबतें

एजेंसी

नई दिल्ली। राउज एवेन्यू कोर्ट ने सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के मामले में तत्कालीन सीएम अरविंद केजरीवाल और मटियाला सीट से विधायक गुलाब सिंह के खिलाफ मुकदमा दर्ज

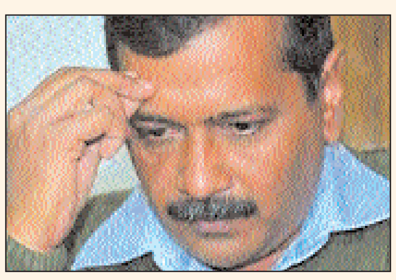

करने के निर्देश दिए हैं। अदालत ने अपने आदेश में स्पष्ट किया कि पुलिस ने शिकायत पर जांच नहीं की ऐसे में होर्डिंग किसने लगाए और क्यों लगाए इसकी जांच जरूरी है।

अदालत ने पुलिस को 18 मार्च तक मामले में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने के निर्देश दिए हैं। इससे पहले 2022 में द्वारका स्थित मजिस्ट्रेट कोर्ट ने इस मामले को खारिज कर दिया था। जिसके बाद सत्र न्यायालय ने इसे दोबारा सुनवाई के लिए मजिस्ट्रेट अदालत में भेज दिया था।

धार्मिक स्थलों को पर्यटन की दृष्टि से ओर विकसित किया जाए :ओला

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। सांसद बृजेंद्र सिंह ओला ने अतारांकित प्रश्न के माध्यम से झुंझुनूं लोकसभा के धार्मिक स्थलों को सड़कों सहित विभिन्न आधारभूत सुविधाओं की दृष्टि से ओर मजबूत करने का मुद्दा लोकसभा में उठाया।

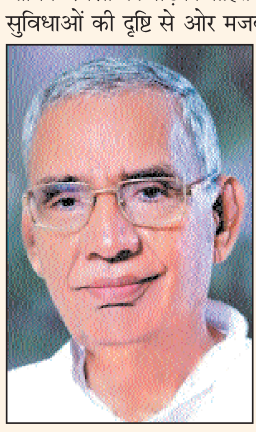

सांसद ने कहा कि उनके लोकसभा क्षेत्र झुंझुनूं में शाकंभरी माता, लोहार्गल, नरहड़ शरीफ सहित अनेक स्थल धार्मिक आस्था और पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। यहां हजारों, लाखों लोग वर्ष पर्यंत आते रहते है। उपरोक्त धार्मिक स्थलों को विकसित करने के लिए अब तक भारत सरकार की किसी भी योजना में शामिल नहीं कर रखा है। सांसद ने कहा कि शाकंभरी माता, लोहार्गल, नरहड़ शरीफ सहित अन्य धार्मिक स्थलों को भारत सरकार की स्वदेश दर्शन योजना, आध्यात्मक परिपथ, विरासत परिपथ या अन्य किसी भी योजना में शामिल कर इन स्थानों पर सड़कों सहित विभिन्न आधारभूत सुविधाओं से युक्त किया जाए। जिससे आने वाले श्रद्धालुओं, पर्यटकों को कोई असुविधा नहीं हो और पर्यटन की दृष्टि से भी ये स्थान ओर मजबूत बन सके।

जम्मू और कश्मीर इत्तिहादुल मुस्लिमीन पर लगाया प्रतिबंध

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी.)। गृह मंत्रालय ने जम्मू और कश्मीर इत्तिहादुल मुस्लिमीन को एक अवैध संघ घोषित कर दिया है और अगले पांच वर्षों तक उसे तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित कर दिया है। मंत्रालय ने आरोप लगाया है कि यह संगठन अवैध गतिविधियों में संलिप्त है, जो देश की एकता, संप्रभुता और सुरक्षा के लिए हानिकारक हैं।

गृह मंत्रालय ने जारी किए गए एक आदेश में कहा कि जेकेआईएम देश के खिलाफ कार्य कर रहा है और इसके कार्यों से राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा हो रहा है। इसके तहत संगठन की सभी गतिविधियों को प्रतिबंधित किया गया है और इसके सदस्य या सहयोगी किसी भी प्रकार की सक्रियता में लिप्त पाए गए तो उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

लखदातार के लख्खी मेले का समापन

जयपुर टाइम्स

खाटूश्यामजी। खाटूश्यामजी में हर वर्ष आयोजित होने वाले वार्षिक फाल्गुनी लक्खी मेले का मंगलवार को समापन हो गया। 12 दिन तक चले इस मेले में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा और लाखों भक्तों ने बाबा श्याम के दर्शन कर पुण्य प्राप्त किया।

मेले का समापन सूरजगढ़ के निशान चढ़ने के साथ हुआ, जो एक महत्वपूर्ण धार्मिक परंपरा का हिस्सा है। फाल्गुनी लक्खी मेला हर साल फाल्गुन माह की द्वादशी तिथि को समाप्त होता है। इस दिन सूरजगढ़ का निशान बाबा श्याम के मंदिर में चढ़ाया जाता है और इस परंपरा को लेकर यहां हर साल भक्तों का हुजूम जुटता है। मंगलवार सुबह सूरजगढ़ का 377वां निशान मंदिर के शिखर पर चढ़ाया गया। यह निशान श्याम दरबार के मंदिर पर चढ़ाने के साथ ही मेले के समापन की औपचारिकता पूरी हो गई।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का चतुर्थ फेज

राजस्थान के 1630 गांव- ढाणियों को पक्की सड़कों से जोड़ेगी सरकारः दिया कुमारी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के चतुर्थ चरण में प्रदेश की लगभग 1630 बसावटों को पक्की सड़कों से जोड़ा जाएगा। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने बताया कि अनुमानित 3 हजार 500 करोड़ की लागत से लगभग 5 हजार किमी पक्की सड़कों का निर्माण करवाकर दूरदराज के गांवों, ढ़ाणियों/बसावटों को सर्वकालिक सड़कों से जोड़ा जाएगा। उपमुख्यमंत्री ने मंगलवार को उपमुख्यमंत्री कार्यालय में सार्वजनिक निर्माण विभाग के अन्तर्गत स्थापित राजस्थान ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण की बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रदेश की सभी बसावटों को सर्वकालिक पक्की सड़कों से जोडना हमारी पहली प्राथमिकता है। इससे न केवल परिवहन सुगम व तीव्र होगा बल्कि आर्थिक विकास के भी नए द्वार खुलेंगे।

3 हजार 500 करोड़ की लागत से 5 हजार किमी बनेगी सड़कें

सर्वे में प्रथम रहे है, क्रियान्वयन में भी शीर्ष पर रहे

उपमुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिस प्रकार पीएमजीएसवाई चतुर्थ चरण में सड़कों के सर्वे में प्रदेश देश में शीर्ष पर रहा है, उसी गति से सड़क निर्माण में भी काम करवाए और प्रदेश को देश में शीर्ष स्थान पर लाए। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय से यथाशीघ्र स्वीकृतियां प्राप्त करके शीघ्र सड़कों का निर्माण शुरू करवाए। गौरतलब है कि उपमुख्यमंत्री के नेतृत्व में सार्वजनिक निर्माण विभाग की ओर से प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के चतुर्थ चरण के अन्तर्गत प्रदेश की 1630 ग्रामीण बसावटों में सड़कों के लिए सर्वे का कार्य 31 जनवरी से पूर्व ही करवाया जा चुका है। देश में राजस्थान की ओर से यह सर्वे सबसे पहले पूरा करवाया गया है।

इसके तहत 1374 मरूस्थलीय, जनजातीय व आशान्वित जिला/ब्लॉक कार्यक्रम के अन्तर्गत चिन्हित बसावटों, 500 से 999 आबादी की 191 बसावटों, 1000 एवं उससे अधिक की 30 बसावटों और धरती आभा-जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के अन्तर्गत 35 बसावटों को सर्वकालिक पक्की सड़कों से जोड़ा जाएगा। उपमुख्यमंत्री ने इस बात पर खुशी व्यक्त की प्रदेश का पीएमजीएसवाई के अन्तर्गत निर्मित सड़कों में लम्बाई के दृष्टिकोण से देश में दूसरा स्थान है। उन्होंने प्रधानमंत्री जनमन कार्यक्रम के तहत करवाये जा रहे सड़क निर्माण कार्यों को गति प्रदान करने के निर्देश भी दिए।इस दौरान अतिरिक्त मुख्य सचिव प्रवीण गुप्ता, मुख्य अभियंता व अतिरिक्त सचिव टी सी गुप्ता सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहें।

पौष्टिकता के अनुसार दिया जाए सुपोषण न्यूट्री किटः दिया कुमारी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी की अध्यक्षता में महिला व बाल विकास शासन सचिव की महेन्द्र सोनी की उपस्थिति में मंगलवार को सचिवालय में महिला व बाल विकास विभाग की वित्तीय वर्ष 2025-26 की बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन के सम्बंध में बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने वित्तीय वर्ष 225-26 की बजट घोषणा के अनुसार गर्भवती महिलाओं को पांचवे महीने से न्यूट्री किट उपलब्ध करवाए जाने के लिए सुपोषण न्यूट्री किट योजना को साकार रूप दिए जाने के लिए अधिकारियों से बिंदुवार चर्चा कर आवश्यक निर्देश दिए। दिया कुमारी ने निर्देश दिए कि गर्भवती महिलाओं के लिए गर्भावस्था के दौरान पौष्टिकता का संवर्धन करने वाले भोज्य पदार्थों को सुपोषण न्यूट्री किट में शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रतिबद्धता से गर्भवती महिलाओं के बेहतर स्वास्थ्य के लिए उन्हें पोषण युक्त खान-पान किट उपलब्ध करवाने के लिए कार्य कर रही है। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट में मुख्यमंत्री अमृत आहार योजना के तहत आंगनबाडी केंद्रों पर 3 से 6 साल तक के बच्चों के लिए सप्ताह में तीन दिन के स्थान पर अब 1 अप्रैल 2025 से पांच दिन दूध उपलब्ध करवाये जाना शुरू करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर निदेशक समेकित बाल विकास सेवाएं ओ पी बुनकर, वित्तीय सलाहकार पदमचंद, अतिरिक्त निदेशक अनुपमा टेलर, उपनिदेशक डॉ. मंजू यादव सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहें।

विधानसभा में जुली के सवाल पर बोले बेढम

राजस्थान में पुलिसकर्मियों के लिए नहीं है साप्ताहिक अवकाश का प्रावधान

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान विधानसभा में मंगलवार को प्रश्नकाल में बीजेपी विधायक भैराराम सियोल ने पुलिसकर्मियों के मेस भत्ते में बढ़ोतरी, मंत्रियों के काफिले में नई गाड़ियों को शामिल करने और राजस्थान में बढ़ते साइबर अपराधों पर रोकथाम के लिए सीडीआर एक्सेस की अनुमति को लेकर सवाल पूछा। इसके जवाब में गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढम ने कहा कि साइबर क्राइम को लेकर हेल्प लाइन नंबर जारी है और आईजी स्तर के अधिकारी को सीडीआर एक्सेस करने का अधिकार दिया गया है। बेढम ने कहा कि राजस्थान पुलिस ने साइबर अपराधों के खिलाफ बेहतर काम किया है। पुलिसकर्मियों के महंगाई भत्ते में समय-समय पर बढ़ोतरी की जाती है। पुलिस थानों के लिए नए वाहन पहले भी खरीदे गए हैं, भविष्य में जरूरत के हिसाब से और वाहन उपलब्ध कराए जाएंगे। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष सुरक्षा से जुड़ी जरूरतें महसूस होने पर सभी संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे।

इस दौरान नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने भी पुलिसकर्मियों को साप्ताहिक अवकाश दिए जाने का सवाल उठाया। जूली बोले, पिछली सरकार के समय डीजीपी उमेश मिश्रा ने अजमेर की पुलिस थाने में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर पुलिसकर्मियों को साप्ताहिक अवकाश देने की व्यवस्था की थी, जिसे बाद में पूरे राजस्थान में लागू करने की दिशा-निर्देश जारी किए गए थे। इस आदेश के बावजूद राजस्थान में पुलिस कर्मियों को साप्ताहिक अवकाश क्यों नहीं दिया जाता। जबकि वे लंबी ड्यूटी करते हैं। इस पर बेढम ने बताया कि साप्ताहिक अवकाश का प्रावधान नहीं है।

मनरेगा राशि का किया दुरुपयोग तो होगी सख्त कार्रवाई : शिवराज

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी.)। मनरेगा फंड के दुरुपयोग के आरोप पर केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि अगर मनरेगा फंड का दुरुपयोग किया गया है या योजना के दिशा-निर्देशों का पालन नहीं किया गया तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

दरअसल मंगलवार को लोकसभा में शिरोमणि अकाली दल (एसएडी) की सांसद हरसिमरत कौर बादल ने आरोप लगाया था कि पंजाब सहित कई राज्यों में मनरेगा फंड का दुरुपयोग किया जा रहा है।

उन्होंने कहा था कि पंचायतों के माध्यम से जाने के बजाय राज्य सरकारों की ओर से फंड का दुरुपयोग किया जा रहा है। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इसके जवाब में कहा कि ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई की जाएगी। जहां भी दिशा-निर्देशों का पालन नहीं किया जा रहा है, फंड का दुरुपयोग पाया जाता है और नियमों का उल्लंघन

होता है, मैं आपको आश्वासन देता हूं कि हम जांच के लिए टीमें भेजेंगे और सख्त कार्रवाई की जाएगी।

मनरेगा के मुद्दे पर हंगामा

इससे पहले लोकसभा में प्रश्नकाल के दौरान टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी ने सवाल किया कि मनरेगा योजना के लाभ उनके राज्य पश्चिम बंगाल को क्यों नहीं मिल रहे हैं।

कल्याण बनर्जी ने कहा कि लगातार मंत्रालय कह रहा है कि 25 लाख फर्जी मामलों का पता चला है। हम कह रहे हैं कि अगर फर्जी मामलों का पता चला है तो कार्रवाई करें, जांच करें और जो गिरफ्तार किए जाते हैं, उनके खिलाफ आपराधिक कार्रवाई की जाए, लेकिन आप 25 लाख मामलों के चलते 10 करोड़ लोगों का फंड नहीं रोक सकते।

कल्याण बनर्जी ने अपने संबोधन के दौरान केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि आप एक केंद्रीय मंत्री हैं, लेकिन आपका व्यवहार ऐसा है...आपको किसने मंत्री बनाया? कल्याण बनर्जी की इस टिप्पणी पर तुरंत सत्ता पक्ष ने कड़ी प्रतिक्रिया दी और टीएमसी सांसद की टिप्पणी पर आपत्ति जाहिर की। हंगामा बढ़ते देख लोकसभा अध्यक्ष ने सदस्यों से अपील की कि वे आसन को संबोधित करें और एक दूसरे पर टिप्पणी न करें।

खड़गे के बयान पर राज्यसभा में हंगामा, माफी मांगनी पड़ी

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी.)। राज्यसभा में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की एक बात पर मंगलवार को जबरदस्त हंगामा हुआ। ये हंगामा तब शुरू हुआ, जब शिक्षा मंत्रालय के कामकाज पर राज्यसभा में चर्चा शुरू हुई। चर्चा शुरू होने के पहले कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि हम चर्चा के लिए तैयारी करके आए हैं और.. इसी पर जे पी नड्डा ने आपत्ति जताते हुए कि खरगे ने अध्यक्ष की पीठ का अपमान किया है।

खरगे को इसके लिए माफी मांगनी चाहिए और असंसदीय शब्द को सदन की कार्यवाही से हटा देना चाहिए। इसके बाद कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने कहा कि अगर उनकी बात से अध्यक्ष की पीठ को ठेस पहुंची है तो माफ़ी चाहते हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने अध्यक्ष के खिलाफ़ कुछ नहीं बोला था बल्कि सरकार के खिलाफ़ बोला था। अध्यक्ष के आसन पर मौजूद उपसभापति हरिवंश ने कहा कि असंसदीय शब्द को वो कार्यवाही से हटा देंगे। दरअसल ये सब तब शुरू

जेपी नड्डा के टोकने पर खरगे ने मांगी माफी

इसके बाद माहौल को और हंगामेदार होते देख उपसभापति ने उठ खड़े हुए और माहौल का शांत कराया। तभी कांग्रेस अध्यक्ष फिर से खड़े हो गए, तब उन्होंने कहा कि मैं माफी चाहता हूं, मैं आपके लिए कुछ नहीं बोलाद्व मैं जो भी बोला वो सरकार की पॉलिसी को लेकर बोला।

मुझे माफ करिए अगर आपको मेरी बातों से ठेस लगी हैं। मेरे को ये कहना है कि देश और जनता के स्वाभिमान को ठेस लगाने की बात करेंगे और आप कहेंगे कि अनकल्चरड, अनसिविलाइज्ड और इंसान नहीं है। अगर ऐसा कहते हैं तो मंत्री से इस्तीफा लीजिए। खरगे की इस बात पर भी जोरदार हंगामा होने लगा।

हुआ जब सीनियर कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह को शिक्षा मंत्रालय पर चर्चा करनी थी। जैसे ही उपसभापति हरिवंश ने दिग्विजय सिंह का नाम पुकारा वैसे ही सदन में हंगामा होने लगा। हालांकि उपसभापति हंगाम को शांत करने की पूरी कोशिश करते रहे, लेकिन इसके बावजूद भी हंगामा होता रहा। इस बीच दिग्विजय सिंह ने कहा कि मैं क्या बोलूंगा।

इस दौरान कांग्रेस अध्यक्ष खरगे खड़े हुए उन्होंने कहा कि सुबह में एजुकेशन मिनिस्टर आए नहीं। क्या डिक्टेटरशिप हो गया, सुनिए, मैं आपसे हाथ जोड़ के विनती करता हूं, हमें बोलना है और हम बोलने के लिए तैयार भी हैं।

इस दौरान कांग्रेस अध्यक्ष ने एक ऐसा शब्द इस्तेमाल कर लिया, जिस पर तुरंत सदन में हंगामा होने लगा। जेपी नड्डा सदन में खड़े होते हुए कहा कि बहुत ही दुख कि बात है जो इतने तजुर्बेकार हैं।

लंबे समय तक जिन्होंने संसदीय कार्य के रूप में प्रदेश में भी और संसद में भी नेतृत्व किया और सदस्य के रूप में भी कार्य किया। जो भाषा का आपने इस्तेमाल किया, ये अति निंदनीय है, जिस पर विपक्षी दलों की तरफ हंगामा होता रहा। मगर जेपी नड्डा ने कहा कि उनकी भाषा माफी योग्य नहीं, लेकिन फिर भी उन्हें माफी मांगनी चाहिए।

एक देश-एक चुनाव पर सुझाव लेने के लिए लॉन्च होगी वेबसाइट

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी.)। संसदीय समिति ने 'एक देश-एक चुनाव' से जुड़े विधेयकों पर सुझाव आमंत्रित करने के लिए जल्द एक वेबसाइट लॉन्च करने की घोषणा की है। संविधान (133वां संशोधन) विधेयक, 2024 और केंद्र शासित

प्रदेश कानून (संशोधन) विधेयक, 2024 पर संयुक्त समिति के अध्यक्ष भाजपा नेता पी.पी. चौधरी ने कहा कि समिति पूरी पारदर्शिता से काम कर रही है और यह सुनिश्चित करना चाहती है कि हर किसी को एक साथ चुनाव के मुद्दे पर अपने विचार साझा करने का मौका मिले।

देशभर से मांगे जाएंगे सुझावः

चौधरी ने कहा कि समिति ने इस मुद्दे पर भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश और राज्यसभा सदस्य रंजन गोगोई और दिल्ली उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश राजेंद्र मेनन के विचार भी सुने हैं। उन्होंने कहा कि समिति के सदस्यों के सामने वेबसाइट का प्रेजेंटेशन किया गया था। समिति एक विज्ञापन भी जारी करेगी, जिसमें देशभर में एक साथ चुनाव कराने को लेकर सुझाव मांगे जाएंगे। उन्होंने कहा कि 1952 से 1967 तक देशभर में चुनाव एक साथ आयोजित किए गए थे, लेकिन बाद में यह प्रक्रिया बंद हो गई। 1980 के दशक से एक साथ चुनाव कराने की मांग उठी है।

बता दें कि पिछले महीने भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश यू.यू. ललित ने 'एक देश-एक चुनाव' के मुद्दे पर कहा था कि यह एक अच्छा विचार है, लेकिन इसे एक साथ नहीं, बल्कि चरणबद्ध तरीके से लागू किय जाना चाहिए। उन्होंने संयुक्त संसदीय समिति के समक्ष अपने विचार रखे थे।

पहले भी हो चुके हैं एक साथ चुनावः

1951-52, 1957, 1962 और 1967 में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ हुए थे। लेकिन 1968-69 में विधानसभाओं के असमय भंग होने और 1970 में चौथी लोकसभा के भंग होने के कारण यह प्रक्रिया बाधित हुई। इसके बाद लोकसभा और विधानसभा चुनाव अलग-अलग होने लगे।

राजधानी जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
12 मार्च, 2025

भाईचारा अपनाते हुए होली का त्यौहार मनाएं- महंत खेड़ापति

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.)। प्रन्यास मंदिर श्री महादेव जी महाराज त्रिपोलिया अलवर में मंगलवार को दीप महायज्ञ का आयोजन किया गया। मंदिर महंत जितेंद्र खेड़ापति ने बताया कि होली के त्योहार और शास्त्र अनुसार लेखअंकित लेख को ध्यान में रखते हुए आम जन हितार्थ गायत्री परिवार के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार प्रदोष को दीप महायज्ञ का आयोजन शाम 4 बजे से त्रिपोलिया परिसर में किया गया। जिसमें मुख्य रूप से होली के इस प्रेम, भाईचारे के त्यौहार में नशे को त्यागने और प्रेम पूर्वक भाईचारे को अपनाते हुए होली का यह त्यौहार मनाए, इस उद्देश्य से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभी भक्तों ने आपस में एक दूसरे को तिलक लगाए ओर यज्ञ में चावल पुष्प की आहुति दी। पूर्णआहुति के बाद प्रसाद वितरण किया गया।

वंडर सीमेंट द्वारा साथी होली मिलन समारोह आयोजित

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.) । मंगलवार को वंडर सिमेंट द्वारा साथी होली मिलन समारोह का आयोजन रिवाज रिसोर्ट में किया गया। जिसमें कंपनी द्वारा अलवर जिले के 1200 मिस्त्रीयो का सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम

में वंडर सीमेंट के राजस्थान हेड जितेन्द्र चौधरी, जोनल हेड अजय बंसल, टेक्निकल हेड नंद किशोर और अलवर जिले के सेल्स प्रमोटर राजकुमार गुप्ता के साथ अलवर जिले का समस्त कंपनी स्टाफ, डीलर और रिटेलर सम्मिलित हुए।

होली मिलन समारोह का हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.)। चिकित्सा परिवार का होली मिलन समारोह (फागोत्सव) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक राजपाल सिंह यादव ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ सुनील चौहान व नर्सिंग अधीक्षक महिला चिकित्सालय सरला शर्मा,

सेवानिवृत्त नर्सिंग अधीक्षक योगेश खट्टर, अशोक जैन थे। देवकीनंदन मीना ने बताया कि समारोह में नर्सेज व नर्सिंग स्टूडेंट्स द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति प्रदान की गई तथा फूलो की होली खेलकर एक दूसरे को शुभकामनाएं प्रेषित की गई। कार्यक्रम का संचालन राजकीय नर्सिंग महाविद्यालय तिजारा फैकल्टी प्रियंका साईवाल ने किया। इस अवसर पर सुशीला वर्मा, रीना कँवर, मुकेश मीना, पूनम मलिक, विष्णु शर्मा, भगवत सिंह नरुका, राजेंद्र अरोड़ा, बनवारी लाल, नीरू जैन, संजय गर्ग, दलीप यादव, राजेन्द्र वर्मा, शशिपाल यादव, सुशीला शर्मा, सुनीता मीना, रेणु यादव, प्रेमलता मीना, गजेन्द्र, राकेश नधेडिया, संजना यादव, कविता कटारा, जगना, मनीषा, मनीष बंसल, योगेश गुर्जर, प्रदीप शर्मा, सुमन, पूनम गुप्ता, मधुबाला यादव, लता धानावत, पूरण गुप्ता, बबिता सहित नर्सेज, नर्सिंग फैकल्टी व नर्सिंग स्टूडेंट्स उपस्थित थे।

मंत्री ने की 6 जगहों पर 6 ट्यूबवेल लगाने के लिए 173. 87 लाख की राशि स्वीकृत

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.)। वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा की अनुशंसा पर पेयजल समस्या ग्रस्त क्षेत्रो हेतु 6 ट्यूबवेल एवं 6 जगह पेयजल उत्पादन हेतु ट्यूबवेल लगाने के लिए कुल 173. 87 लाख की राशि स्वीकृत हुई।

मनोज शर्मा ने बताया कि अलवर शहर में पेयजल समस्या ग्रस्त के आमजन की पेयजल समस्या के निराकरण हेतु जन् स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग मंत्री कन्हैया लाल चौधरी ने वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा की अनुशंसा पर मूर्ति मोहल्ला आजाद नगर 60 फीट रोड, विश्वकर्मा कॉलोनी तिजारा रोड, विनोद प्रेस के पास मोहल्ला अखेपूरा, आरआर कॉलेज के पास फ्रेंड्स कॉलोनी, अशोक सिनेमा पुलिस लाइन रोड भैरू का चबूतरा, अस्सी क्वार्टर हरिजन बस्ती आदि स्थानों पर 76.58 लाख की राशि से 6 नए थ्री फेज ट्यूबवेल लगाने की स्वीकृति प्रदान की गई है।

केंद्रीय मंत्री ने सानोली गांव में परशुराम मंदिर द्वार का किया उद्घाटन

क्षेत्र के गांव के विकास और ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान के लिए जल्द शुरू किए जाएंगे 4-4 पंचायतों के दौरे - केन्द्रीय मंत्री यादव

जयपुर टाइम्स

अलवर (नि.सं.)। केन्द्रीय वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव ने मुंडावर विधानसभा क्षेत्र के गांव सानोली में परशुराम मंदिर द्वार और कुश्ती दंगल में हॉल का उद्घाटन किया।

इस मौके पर भूपेन्द्र यादव ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल के नेतृत्व में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में डबल इंजन की सरकार राजस्थान के विकास और रोजगार के अवसर प्रदान करने का काम करेगी।

भूपेंद्र यादव ने परशुराम मंदिर द्वार और हॉल का निर्माण करने वाले भामाशाहों को धन्यवाद दिया और मंदिर परिसर की चार दीवार करने की भी घोषणा करते हुए ग्रामीणों की मांग पर मंदिर से कोलीला जोगा तक सड़क बनाने का आश्वासन दिया।

भूपेंद्र यादव ने मेले के दौरान आयोजित होने वाले कुश्ती दंगल में पहलवानों के लिए ट्रेनिंग सेंटर बनाने और कुश्ती को आगे बढ़ाने की भी बात कही।

केन्द्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव ने कहा कि अकेला व्यक्ति बहुत कुछ नहीं कर सकता लेकिन टीम उसके साथ लगे तो सब कुछ हो जाता है और में बड़ा सौभाग्यशाली हु एक अच्छी टीम मेरे साथ है। उन्होंने कहा कि अलवर

लोकसभा क्षेत्र में 391 पंचायते हैं और इसी महीने से चार-चार पंचायतों को मिलाकर एक कार्यक्रम किया जायेगा। जिसमे गाँवो के विकास और ग्रामीणों की समस्या सुन कर उनका समाधान किया जायेगा।

केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री के फिट इंडिया मूवमेंट लेकर जिले में अलवर सांसद खेल उत्सव का आयोजन किया गया था। जिसमें करीब 20 हजार बच्चों ने हिस्सा लिया इस खेल उत्सव को आगे भी जारी रखा जाएगा।

भूपेंद्र यादव ने कहा कि अलवर सरस डेयरी के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सवा दो सौ करोड़ रुपए का बजट दिया है, जल्द ही नई तकनीकी वाली मशीन लगाई जाएगी। ईआरसीपी योजना को लेकर उन्होंने कहा कि चंबल का पानी जब अलवर में आएगा तो जयसमंद बांध और ढड़ीकर में बड़ा रिजर्व वाटर बांध बनने की तैयारी हो गई है उसे भरकर नीमराना में बड़े रिजर्व वाटर बांध में आएगा।

इससे पूर्व भूपेंद्र यादव का जाट बहरोड के सरपंच प्रतिनिधि अशोक यादव के नेतृत्व में ग्रामीणों के द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। इस मौके पर केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने पौधारोपण भी किया।

कार्यक्रम के दौरान जिला प्रमुख बलवीर सिंह छिल्लर, मुंडावर पूर्व विधायक मनजीत चौधरी, भाजपा जिलाध्यक्ष उत्तर महासिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष दक्षिण अशोक गुप्ता, डॉ अंजली यादव, इंदर सिंह यादव सहित अनेक कार्यकर्ता और ग्रामीण मौजूद रहे। यह जानकारी जिला मीडिया प्रभारी लक्ष्मी नारायण गुप्ता ने दी।

आरोपः पर्ची सरकार सदन से सडक तक फेल - नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली

मंत्रियों की परफोर्मेंस से निराश मुख्यमंत्री प्रश्नकाल छोडकर चले गये

जयपुर टाइम्स

अलवर/जयपुर(नि.सं.)। राजस्थान विधान सभा के नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने बताया कि चुनावी घोषणा पत्र का ढोल पीटने वाली सरकार की आज सदन में मंत्रियों की फजीहत से निराश मुख्यमंत्री 20 मिनट में ही सदन से बाहर निकल गये, यदि पूरे प्रश्नकाल में सदन में बैठते तो सच्चाई का पता चल जाता है। जूली द्वारा श्रम विभाग से स बन्धित पूछे गये प्रश्न का जवाब देते समय सरकार की कलई खुल गई। उन्होंने कहा कि असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों से जो भी वादे किये गये उनमें से एक भी इंप्लीमेंट नहीं किया। जूली ने बताया कि उनके द्वारा जब यह पूछा गया कि केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ मिलेगा या नहीं तो मंत्री इसका जवाब तक नहीं दे पाए। मंत्री ई-श्रमिक पोर्टल रजिस्ट्रेशन के बारे में भी नहीं बता पाए। जूली ने बताया कि जब हमारी सरकार थी, तब गिग

वर्कर कानून बनाया और इसके लिये बजट का प्रावधान रखा। जब भाजपा की सरकार बनी तो उसके बाद आज तक गिग वर्कर के लिए कोई कानून लागू नहीं किया।प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली ने एक पूरक प्रश्न के दौरान कहा कि हमारी सरकार ने पुलिस कर्मियों को राहत देने के लिए साप्ताहिक अवकाश के निर्देश दिए थे, लेकिन अब उसके लिए मना कर दिया गया। इस पर भी सरकार की स्थिति असमंजस की हो गई।जूली ने मुख्यमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र सांगानेर में हुई घटना को उठाते हुए कहा कि सरकार इस घटना को दबाकर अपनी अकर्मण्यता को छिपाना चाहती है। जूली ने कहा कि जब मुख्यमंत्री के विधान सभा क्षेत्र के रक्षक ही भक्षक बन जायेंगे तो जनता कहां सुरक्षित रहेगी। सदन की कार्यवाही के दौरान जूली ने कहा कि सरकार विधान सभा सत्र तक को ग भीरता से नहीं लेती है। उन्होंने अनुदान की मांगों पर चर्चा के दौरान विभागीय मंत्री और पूरी कैबिनेट के अनुपस्थित रहने की ओर आसन का ध्यान आकर्षित कहा कि सरकार और उसके मंत्री मस्त हैं, आधे मंत्री तो मुख्यमंत्री को खुश करने के चक्कर में वैसे ही फेल हो गये।

नगर विकास न्यास ने किया 'सिटीजन यूडीएच पोर्टल' पर अलवर शहर का मास्टर प्लान लॉन्च

जयपुर टाइम्स

अलवर(नि.सं.)। नगर विकास न्यास अलवर ने शहरी प्रशासन और नागरिक सेवाओं को डिजिटल रूप में सशक्त बनाने के प्रयासों के तहत %सिटीजन यूडीएच पोर्टल' पर अलवर शहर का मास्टर प्लान लॉन्च किया है।

नगर विकास न्यास की सचिव सुश्री धीगदे स्नेहल नाना ने बताया कि यह पोर्टल राज्य के एकीकृत जीआईएस सिस्टम %राजधरा' का उपयोग करके नागरिकों को भू-उपयोग (लैण्ड यूज) की जानकारी प्रदान करेगा।

उन्होंने बताया कि अब अलवर शहर के निवासी मास्टर डवलपमेंट प्लान-2031 के अनुसार किसी भी स्थान के भू-उपयोग की जानकारी यूआईटी की वेबसाइट की पर जाकर डिजिटल रूप से प्राप्त कर सकेंगे, जिसमें मास्टर प्लान के भू-उपयोग, खसरों की स्थिति, क्षेत्रफल, गूगल लोकेशन इत्यादि की जानकारी एक ही प्लेटफॉर्म पर ऑनलाइन माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। जिसमें नागरिकों को न्यास कार्यालय के अनावश्यक चक्कर नहीं लगाने होंगे एवं भूमि की स्थिति की जानकारी स्वयं के स्तर पर प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा नागरिक इस पोर्टल के माध्यम से पुलिस थाना क्षेत्र और विधानसभा क्षेत्र जैसी महत्वपूर्ण जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं।

मेले और भंडारे आपसी भाईचारे के मूलमंत्र है - बस्तीराम यादव

जयपुर टाइम्स

बहरोड़(नि.सं.)। पंचायत समिति बहरोड के ग्राम इस्लामपुर में श्याम बाबा के भंडारे में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा नेता बस्तीराम यादव एडवोकेट थे।इस अवसर पर यादव ने कहा कि मेले और भंडारों के माध्यम से साल भर के शिकवा शिकायतें दूर होने का मौका मिलता है तथा सभी जाति और बिरादरी के लोग एक जाजन पर बैठकर भाईचारे की भावना से भंडारों का आनंद लेते हैं तथा अलग-अलग दलों में पार्टयों के कार्यकर्ता और नेता भी एक साथ हमजोली होने का अवसर पाते हैं।इस अवसर पर ग्राम वासियों ने शमशान की चारद्वारी की मांग की जिस पर मुख्य अतिथि बस्तीराम यादव ने 500000 (पांच लाख रुपए) प्रधान कोटे से शमशान की चारद्वारी हेतु स्वीकृत करने की घोषणा की।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे रामफल गुर्जर सरपंच ने मुख्य अतिथि का हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा कार्यक्रम का संचालन कर रहे पूर्व सरपंच रतन भड़ाना ने पूर्व में प्रधान कोटे से सीवरेज पाईप लाईन हेतु राशि देने पर प्रधान का आभार व्यक्त कर धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में वेद कृष्णा सरपंच, कृष्ण मीणा सरपंच, सिकंदर यादव, जय सिंह मेघवाल, पंचायत समिति सदस्य रामनिवास गुर्जर, पूर्व सदस्य देवेंद्र रेया, रामशरण गुर्जर, विकास रावत, रामशरण बबेड़ी, रामकुमार रावत एडवोकेट, दुलीचंद जाट, रामप्रताप बोहरा सहित हजारों बुजुर्ग, महिलाएं एवं युवा उपस्थित थे।

विधायक डॉ. जसवंत यादव की पहल पर पशु चिकित्सा सेवाओं में हुआ विस्तार, क्षेत्र के पशुपालकों को मिली सौगात

जयपुर टाइम्स

बहरोड (नि.सं.)। बहरोड़ क्षेत्र के पशुपालकों के लिए एक महत्वपूर्ण दिन जब उनकी एक बड़ी ज़रूरत को आखिरकार स्वीकृति मिल गई। पशुपालकों को आ रही परेशानी पर पिछली सरकारों ने कोई ध्यान नहीं दिया था। विधायक डॉ. जसवंत यादव के अथक प्रयासों के चलते बहरोड़ को तीन नए पशु चिकित्सालयों की सौगात मिली है, जो कायसा बर्डोद और बूढ़वाल में स्थापित किए जा रहे हैं। इसके साथ ही रिवाली, अनंतपुरा, जटगांवड़ा, बसई और नंगली बलाहिर में भी पांच उपकेंद्रों की स्थापना की जा रही है। यह सभी केंद्र केवल पशुओं के लिए समर्पित हैं, जिससे अब पशुपालकों को अपने बेजुबान पशुओं के इलाज के लिए दूर शहरों की ओर नहीं भागना पड़ेगा पशुपालक लंबे समय से पशु चिकित्सालयों की कमी के कारण परेशान थे, लेकिन विधायक डॉ. जसवंत यादव ने उनकी पीड़ा को समझा और सरकार से इसे स्वीकृत कराने में अहम भूमिका निभाई। यह दिखाता है कि राज्य सरकार भी बहरोड़ विधायक के विकास के एजेंडा पर साथ है और क्षेत्र में विकास कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। ये जाहिर है कि विधायक डॉ. जसवंत यादव केवल पशुपालकों के

लिए ही नहीं, बल्कि पूरे बहरोड़ में हर क्षेत्र में विकास की दिशा में लगातार प्रयत्नशील हैं। वे महिलाओं की सुरक्षा, युवाओं के रोज़गार, भ्रष्टाचार के उन्मूलन, सड़क निर्माण और स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के लिए लगातार काम कर रहे हैं। आज उनके प्रयासों का ही परिणाम है कि पशुपालकों की ये बड़ी ज़रूरत पूरी हो रही है, जिससे ग्रामीणों को राहत मिलेगी स्थानीय पशुपालकों और ग्रामीणों ने इस अभूतपूर्व पहल के लिए विधायक डॉ. जसवंत यादव का आभार व्यक्त किया।

जिला स्तरीय मीडिया अधिप्रमाणन एवं निगरानी समिति की बैठक आयोजित

निर्वाचन संबंधित फेक न्यूज पर प्रभावी निगरानी रखने के दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

अलवर (नि.सं.)। उप जिला निर्वाचन अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रथम मुकेश कायथवाल की अध्यक्षता में मिनी सचिवालय स्थित एडीएम प्रथम के कक्ष में मंगलवार को मीडिया अधिप्रमाणन एवं निगरानी समिति की बैठक हुई।

बैठक में उप जिला निर्वाचन अधिकारी मुकेश कायथवाल ने कहा कि निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार गैर चुनाव अवधि में भी समिति द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया से संबंधित फेक न्यूज एवं संवेदनशील समाचारों (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया) पर सतत निगरानी की जानी है।

उन्होंने निर्देशित किया कि भारत निर्वाचन आयोग की मानक संचालन प्रक्रिया की पालना करते हुए गैर चुनाव अवधि के दौरान फेक न्यूज की प्रभावी मॉनिटरिंग कर आवश्यक कार्रवाई करें। उन्होंने निर्देश दिए कि चुनाव प्रक्रिया से संबंधित किसी भी प्रकार के संवेदनशील एवं भ्रामक न्यूज संज्ञान में आते ही, त्वरित रूप से उसे समिति के समक्ष प्रस्तुत करें, ताकि समय रहते हुए फेक न्यूज का फैक्ट चेक कर सही जानकारी प्रसारित एवं प्रचारित करवाई जा सके।

सतरंगी फागोत्सव में भजन व नृत्य पर झूमीं महिलाएं

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(नि.सं.)। शहर के मालाखेड़ा गेट स्थित सीताराम बडगुजर मंदिर पर स्थानीय महिला मंडल ने सतरंगी फाग महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया।

इस भव्य आयोजन में महिलाओं ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दीं, जिससे पूरा माहौल होली की मस्ती से सराबोर हो गया। मंदिर महंत पंडित नरेंद्र अवस्थी ने बताया कि महिला भजन गायिका मंडली ने राधा-कृष्ण के भजनों पर होली की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं, जिससे उपस्थित भक्तगण भाव-विभोर हो उठे। वही भक्तिमय धुनों पर जमकर नृत्य किया। इस अवसर पर आयोजक कमला शर्मा ने सभी महिलाओं को फागोत्सव व

होली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस तरह के आयोजनों से भाईचारा और समरसता बढ़ती है और नई पीढ़ी को भी संस्कृति व त्योहारों की महत्ता का ज्ञान होता है। फागोत्सव से पूर्व भव्य आयोजन के दौरान श्रीराम व हनुमान जी का आकर्षक श्रृंगार किया गया और श्रद्धालुओं ने फूलों व गुलाल के साथ होली खेली। इस मौके पर सीताराम और हनुमान जी की पूजा-अर्चना की गई, तत्पश्चात सभी महिलाओं ने राजस्थानी और भक्ति गीतों पर नृत्य किया व फूलों संग होली खेल फागोत्सव मनाया। महिलाओ ने गुलाल का टीका व परस्पर एक दूसरे को गले लगाकर होली की शुभकामनाएं दी। इसी के साथ फागोत्सव का यह आयोजन संस्कृति, भक्ति और उल्लास का अद्भुत संगम बनकर सभी के मन में होली की रंगत छोड़ गया। इस अवसर ओम प्रकाश आलोरिया, संतोष गोड, प्रमिला वशिष्ठ, उर्मिला वशिष्ठ, अन्नू, मधु आलोरिया व रेणु सोनी सहित अन्य महिला-पुरुष मौजूद रहे।

राजधानी जयपुर टाइम्स

चूरू, बुधवार
12 मार्च, 2025

गिग एंड अनऑर्गेनाइज्ड वर्कर्स डेवलपमेंट फण्ड के लिए 350 करोड़ रूपये का प्रावधान - खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री

जयपुर टाइम्स

जयपुर(का.सं.)। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने मंगलवार को विधानसभा में कहा कि राज्य सरकार गिग वर्कर्स और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा देने, जीवन-यापन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने सहित उनके कल्याण के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए संकल्पित है। इस दिशा में बजट घोषणा वर्ष 2025-26 में 350 करोड़ के गिग एंड अनऑर्गेनाइज्ड वर्कर्स डेवलपमेंट फण्ड का प्रावधान किया गया है। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री प्रश्नकाल के दौरान सदस्य द्वारा इस सम्बन्ध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का श्रम मंत्री की ओर से जवाब दे रहे थे। इससे पहले विधायक टीकाराम जूली के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री ने बताया कि ई-श्रम पोर्टल पर 3 मार्च तक एक करोड़ 45 लाख 75 हजार 855 आवेदन पंजीकृत किये गए है तथा 2 करोड़ 26 लाख 89 हजार 152 का लक्ष्य निर्धारित है।

महिला मानदेय कार्मिकों को जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने माता यशोदा पुरस्कार से किया सम्मानित

जयपुर टाइम्स

जयपुर (का.सं.)। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने आंगनबाड़ी केन्द्रों पर उत्कृष्ट कार्य करने वाली 42 मानदेय महिला कार्मिकों को माता यशोदा पुरस्कार से सम्मानित किया है। मंगलवार को जिला कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में जिला कलक्टर

डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने प्रशस्थि पत्र देकर चयनित आंगनबाड़ी कार्याकर्ताओं एवं आंगनबाड़ी सहायिकाओं को सम्मानित किया। कार्यालय, उपनिदेश महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा माता यशोदा पुरस्कार के तहत आंगनबाड़ी कार्याकर्ताओं को 5100 रुपये की राशि एवं आंगनबाड़ी सहायिकाओं को 2100 रुपये की राशि के साथ-साथ प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने आंगनबाड़ी कार्याकर्ताओं एवं आंगनबाड़ी सहायिकाओं को और बेहतर कार्य करने एवं राजस्थान सरकार की जन कल्याणाकारी योजनाओं का लाभ जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती प्रतिभा वर्मा, उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास विभाग श्रीमती अरशदीप बरार, उपनिदेशक महिला अधिकारिता डॉ. राजेश डोगीवाल सहित जिले के बाल विकास परियोजना अधिकारियों, महिला पर्यवेक्षकों एवं चयनित मानदेय कर्मियों ने शिरकत की।

प्रदेश में 505 उचित मूल्य दुकान आवंटन समितियां गठित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(का.सं.)। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने मंगलवार को विधानसभा में बताया कि प्रदेश में उचित मूल्य दुकानों के आवंटन के लिए 505 आवंटन सलाहकार समितियां गठित की गई हैं। इनमें 406 ग्राम एवं तहसील स्तरीय और 99 नगर पालिका स्तरीय समितियां शामिल हैं। उन्होंने आश्वस्त किया कि जयपुर जिले में भी नई समितियों का गठन जल्द किया जाएगा। प्रश्नकाल के दौरान मंत्री ने किशनपोल विधानसभा क्षेत्र में 98 उचित मूल्य दुकानों में से 27 के अटैच होने की जानकारी दी। विधायक अमीन कागज़ी के प्रश्न के लिखित उत्तर में उन्होंने बताया कि 2020 से 2024 तक 15 दुकानों को निलंबित किया गया, जबकि 3 दुकानों के त्यागपत्र, 2 संचालकों की मृत्यु और 7 के निरस्तीकरण के कारण रिक्ति हुई। मंत्री ने बताया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना के तहत 500 राशनकार्ड अथवा 2,000 यूनिट पर नई दुकानें खोलने के मापदंड तय हैं। किशनपोल में रिक्त दुकानों का आवंटन सलाहकार समिति के गठन के बाद शीघ्र किया जाएगा।

साइबर अपराध पर प्रभावी नियंत्रण के लिए सरकार कर रही सख्त कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

जयपुर (का.सं.)। गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने विधानसभा में कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में साइबर अपराध पर अंकुश लगाने के लिए प्रभावी कार्य कर रही है। भारत सरकार के सहयोग से 1930 हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया है, जिस पर शिकायत मिलने पर अपराधियों की लोकेशन ट्रेस कर त्वरित कार्रवाई की जा रही है। प्रश्नकाल के दौरान मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार आंतरिक सुरक्षा को लेकर प्रतिबद्ध है और पुलिस को अत्याधुनिक संसाधनों से सुसज्जित किया जा रहा है। पुलिस थानों में 112 सेवा के वाहन उपलब्ध कराए गए हैं। उन्होंने बताया कि राजस्थान पुलिस के सभी कर्मियों को हार्ड ड्यूटी अलाउंस के अतिरिक्त 5,000 मासिक जोखिम भत्ता देने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

भूखंड आवंटन में तेजी लाएंः मुख्य सचिव

जयपुर टाइम्स

जयपुर (का.सं.)। मुख्य सचिव सुधांश पंत ने मंगलवार को 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट–2024 में हस्ताक्षरित एमओयू के क्रियान्वयन की समीक्षा बैठक में अधिकारियों की प्रशंसा की। उन्होंने मात्र 3 महीने में 2.25 लाख करोड़ के निवेश प्रस्तावों को अमल में लाने के लिए सभी संबंधित विभागों को बधाई दी।

मुख्य सचिव ने भूखंड आवंटन में तेजी लाने के निर्देश देते हुए कहा कि निवेशकों की मांग के अनुरूप परियोजनाओं के लिए भूमि आवंटन किया जाए। उन्होंने सभी विभागों को अपनी नियमावलियां साझा करने और प्रक्रिया को सरल बनाने पर जोर दिया। पंत ने स्पष्ट किया कि भूमि एक बहुमूल्य संसाधन है, इसलिए इसका आवंटन सरकारी दिशानिर्देशों और परियोजनाओं की जरूरतों के अनुसार हो।

उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा निर्धारित त्रि-स्तरीय समीक्षा प्रणाली की सराहना करते हुए कहा कि सतत निगरानी और विभागीय समन्वय के कारण यह सफलता संभव हो सकी है। बैठक में विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रतिबंधित प्लास्टिक जब्त कर 1 करोड़ 32 लाख रूपए का जुर्माना लगाया - पर्यावरण राज्यमंत्री

जयपुर टाइम्स

जयपुर (का.सं.)। पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने मंगलवार को विधानसभा में कहा कि प्रदेश में प्लास्टिक की थैलियों के उपयोग को रोकने के लिए राज्य सरकार द्वारा विभिन्न स्तर पर जन जागरण अभियान चलाए जा रहे हैं। जिनके माध्यम से आमजन को प्रतिबंधित प्लास्टिक बैग्स के उपयोग नहीं करने के सम्बन्ध में जागरूक किया जा रहा है।

पर्यावरण राज्यमंत्री प्रश्नकाल के दौरान सदस्य द्वारा इस संबंध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का जवाब दे रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा गत 5 वर्षों में विभिन्न अभियानों के तहत 196 टन से अधिक प्लास्टिक कैरी बैग एवं प्रतिबंधित प्लास्टिक वस्तुओं की मात्रा जब्त की गई एवं 1 करोड़ 32 लाख रूपये से अधिक की राशि का जुर्माना लगाया गया। इसके साथ ही 32 हजार 200 से अधिक प्रकरणों में स्थानीय निकायों द्वारा भी कार्यवाही की गई। इससे पहले विधायक विक्रम सिंह जाखल के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में पर्यावरण राज्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश में राज्य सरकार द्वारा पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 5 के अन्तर्गत 21 जुलाई, 2010 को जारी अधिसूचना द्वारा संपूर्ण राज्य में 01 अगस्त, 2010 से प्लास्टिक कैरी बैग के उपयोग, विनिर्माण, भण्डारण, आयात, विक्रय एवं परिवहन पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। उन्होंने बताया कि इस अधिसूचना में बायोडिग्रेडेबल/कम्पोस्टेबल प्लास्टिक कैरी बैग्स पर प्रतिबंध से छूट प्रदान करने हेतु 31 दिसम्बर, 2021 को अधिसूचना जारी की गई है। अधिसूचना की प्रतिलिपि उन्होंने सदन के पटल पर रखी। विगत पाँच वर्षों में प्रतिबंधित प्लास्टिक की थैलियों के उपयोग के संबंध में की गयी कार्यवाही का वर्षवार संख्यात्मक विवरण भी उन्होंने सदन के पटल पर रखा।

राजस्थान विधानसभा में वन एवं पर्यावरण विभाग की अनुदान मांगें पारित, वन क्षेत्र बढ़ाने का लक्ष्य

जयपुर टाइम्स

जयपुर (का.सं.)। राजस्थान विधानसभा में सोमवार को वन एवं पर्यावरण विभाग की ?21,27 करोड़ की अनुदान मांगें ध्वनिमत से पारित की गई। वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने कहा कि सरकार वन और वन्यजीव संरक्षण के लिए संकल्पित है और राज्य में वन क्षेत्र को आगामी दो दशकों में 20त्न तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है।

मंत्री ने वनकर्मियों की सुरक्षा और कल्याण के लिए वनकर्मी कल्याण कोष बनाने की घोषणा की। इसके अलावा, संजय वन शाहपुरा का नाम बदलकर 'अटल वन' रखा जाएगा और इसके विकास पर 13 करोड़ खर्च किए जाएंगे। सरिस्का टाइगर रिजर्व में उच्च गुणवत्ता की ग्रेवल सड़क बनाई जाएगी, और वन्यजीवों की निगरानी के लिए कैमरा ट्रैप सेंसर तकनीक अपनाई जाएगी। उन्होंने 16 नए नगर वन विकसित करने के लिए ?24.31 करोड़ के प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजने की जानकारी दी। इसके तहत जयपुर, अजमेर, उदयपुर, कोटा, झालावाड़, टोंक समेत कई जिलों में नगर वन बनाए जाएंगे। 21 मई को 'गोडावण दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा भी की गई।

पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में राज्य के प्रमुख शहरों में नॉइज मॉनिटरिंग सिस्टम, इमीशन ट्रेडिंग सिस्टम (श्वञ्जस्) और प्लास्टिक बोतल रिवर्स वेंडिंग मशीन लगाने की योजनाएं शामिल हैं। जयपुर में टिश्यू कल्चर लैब और सुमेरपुर में हाईटेक नर्सरी स्थापित की जाएगी।

वनकर्मियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक क्षेत्रीय वन अधिकारी को चरणबद्ध तरीके से वाहन उपलब्ध कराए जाएंगे।

मिलावट के खिलाफ सख्त अभियान : बीकानेर में 8,100 किलो घटिया मावा जब्त

जयपुर टाइम्स

जयपुर(का.सं.)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की पहल और चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देश पर प्रदेश में मिलावट के खिलाफ सख्त अभियान चलाया जा रहा है। 'शुद्ध आहार, मिलावट पर वार' मुहिम के तहत मंगलवार को बीकानेर में बड़ी कार्रवाई करते हुए 8,100 किलो घटिया क्वालिटी का मावा जब्त किया गया।खाद्य सुरक्षा आयुक्त एच गुईटे के निर्देशन में हुई इस कार्रवाई में अतिरिक्त आयुक्त पंकज ओझा ने बताया कि उन्हें सूचना मिली थी कि घटिया क्वालिटी का मावा दो पिकअप वैन से सप्लाई किया जा रहा है।

जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने किया सर्जरी लाभार्थी बच्चों का अभिनंदन

जयपुर टाइम्स

जयपुर (का.सं.)। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत कॉन्जेनिटल हार्ट डिजीज (सीएचडी) से ग्रसित 21 बच्चों की सफल सर्जरी के बाद जिला कलेक्ट्रेट सभागार में मंगलवार को विशेष अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने की, जहां सर्जरी से लाभान्वित बच्चों और उनके अभिभावकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में हाथों में लाल गुब्बारे लिए नन्हें बच्चों के चेहरे पर खुशी देखते ही बन रही थी। जिला कलक्टर ने बच्चों के साथ केक काटा और उन्हें उपहार भेंट किए। इस दौरान उन्होंने अभिभावकों से संवाद करते हुए उनसे अनुरोध किया कि यदि उनके आसपास कोई बच्चा इस बीमारी से ग्रसित हो, तो वे उसके उपचार में सहयोग करें। अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रथम विनीता सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम उन बच्चों के लिए वरदान साबित हुआ है, जो जन्म से ही विभिन्न शारीरिक समस्याओं का सामना कर रहे थे। इस योजना के तहत न केवल निःशुल्क इलाज किया गया, बल्कि इन बच्चों को एक स्वस्थ जीवन की नई राह भी मिली। उन्होंने चिकित्सा विभाग, सीएमएचओ और राजस्थान बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम टीम के प्रयासों की सराहना की और कहा कि इस पहल को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जयपुर द्वितीय डॉ. हंसराज भदालिया, जयपुर प्रथम डॉ. रवि शेखावत, आरसीएचओ जयपुर प्रथम डॉ. आशा मीणा, आरसीएचओ जयपुर द्वितीय डॉ. प्रमिला मीणा, डीआईईसी मैनेजर संगीता शर्मा, एडीएनओ डॉ. दिलीप शर्मा, जिला कार्यक्रम अधिकारी अखिलेश शर्मा और रिचा सारस्वत सहित कई अधिकारी उपस्थित रहे। इस सम्मान समारोह ने उन बच्चों और उनके परिवारों के लिए एक नई उम्मीद जगाई, जो गंभीर हृदय रोग से जूझ रहे थे।

पुष्कर में ब्रह्मा मंदिर कोरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग की डीपीआर केंद्र से स्वीकृति के बाद बनेगी : पर्यटन मंत्री

जयपुर टाइम्स

जयपुर(का.सं.)। राजस्थान की पर्यटन मंत्री दिया कुमारी ने मंगलवार को विधानसभा में जानकारी दी कि पुष्कर-अजमेर में ब्रह्मा मंदिर कोरिडोर व सरोवर परिक्रमा मार्ग के विकास के लिए अजमेर विकास प्राधिकरण (एडीए) द्वारा प्रारंभिक प्रोजेक्ट रिपोर्ट (पीपीआर) तैयार कर ली गई है। यह रिपोर्ट 31 दिसंबर 2024 को केंद्र सरकार के पर्यटन मंत्रालय को स्वदेश दर्शन 2.0 योजना के तहत स्वीकृति हेतु भेजी गई थी।

उन्होंने स्पष्ट किया कि केंद्र सरकार की मंजूरी मिलने के बाद राज्य सरकार द्वारा विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की जाएगी।

विधानसभा में प्रश्नकाल के दौरान पूरक प्रश्नों के उत्तर में पर्यटन मंत्री ने कहा कि यदि केंद्र सरकार द्वारा प्रोजेक्ट की संपूर्ण राशि स्वीकृत नहीं की जाती है, तो विभिन्न विभागों एवं अजमेर नगर निगम के साथ मिलकर कार्य विभाजन किया जाएगा।

इसके तहत राज्य सरकार शेष राशि का वहन करेगी, ताकि परियोजना का क्रियान्वयन सुचारू रूप से हो सके।

इससे पहले विधायक श्रीमती अनीता भदेल के मूल प्रश्न के लिखित उत्तर में मंत्री ने बताया कि परिवर्तित बजट वर्ष 2024-25 में इस परियोजना को विकसित करने की घोषणा की गई थी। उन्होंने सदन में जानकारी दी कि एडीए द्वारा तैयार प्रारंभिक रिपोर्ट में ब्रह्मा मंदिर कोरिडोर और सरोवर परिक्रमा मार्ग के विकास कार्यों को शामिल किया गया है। केंद्र से स्वीकृति प्राप्त होने के बाद संभावित व्यय राशि का आकलन किया जाएगा।

दूध और दुग्ध उत्पादों की गुणवत्ता से कोई समझौता नहींः जोराराम कुमावत

जयपुर टाइम्स

जयपुर (का.सं.)। पशुपालन, डेयरी एवं गोपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने कहा कि राज्य की सहकारी डेयरियों में उत्पादित सरस दूध की गुणवत्ता इसकी पहचान है और इस पर कोई समझौता नहीं किया जाएगा। वे मंगलवार को आरएलडीबी सभागार में राज्य की सहकारी डेयरियों के निर्वाचित अध्यक्षों और एमडी के साथ बैठक को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार आमजन को मिलावट रहित दूध और दुग्ध उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। सरस दूध की विश्वसनीयता बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है और मिलावट करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। उन्होंने सहकारी डेयरियों को सक्रिय होकर अपने उत्पादों को राजस्थान सहित अन्य राज्यों में भी लोकप्रिय बनाने के निर्देश दिए।

मंत्री कुमावत ने कहा कि जहां भी डेयरी बूथ खोलने की मांग है, वहां तत्काल कार्रवाई की जाए। उन्होंने जिला दुग्ध संघों के निर्वाचित पदाधिकारियों और अधिकारियों के बीच बेहतर समन्वय पर जोर दिया, जिससे दुग्ध उत्पादकों को अधिक लाभ मिल सके। बैठक में पदाधिकारियों ने सरकार से ब्याज मुक्त ऋण की मांग की ताकि योजनाओं को सुचारू रूप से लागू किया जा सके। शासन सचिव समित शर्मा ने कहा कि राज्य में डेयरी की अपार संभावनाएं हैं और सहकारी डेयरियों के निर्वाचित अध्यक्ष इसमें अहम भूमिका निभा सकते हैं। आरसीडीएफ की एमडी श्रुति भारद्वाज ने मिलावट करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी और शिकायत मिलने पर कठोर कदम उठाने का आश्वासन दिया।

गर्मी से बचाव को अलर्ट मोड में चिकित्सा विभाग, प्रमुख शासन सचिव ने दिए तैयारियों के निर्देश

जयपुर टाइम्स

जयपुर (का.सं.)। राजस्थान में भीषण गर्मी और लू-तापघात की आशंका को देखते हुए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग अलर्ट मोड में आ गया है। विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रीमती गायत्री राठौड़ ने मंगलवार को उच्च स्तरीय बैठक में मौसमी बीमारियों और लू से बचाव को लेकर व्यापक समीक्षा की और सभी जिलों को प्रो-एक्टिव एप्रोच के साथ तैयारियां पूरी करने के निर्देश दिए।

अस्पतालों में छाया-पानी और दवाओं की पुख्ता व्यवस्था

राठौड़ ने कहा कि सभी अस्पतालों में डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ और पैरामेडिकल टीम की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित की जाए।

दवाइयों और जरूरी उपकरणों की व्यवस्था रहे, साथ ही मरीजों को लू से बचाने के लिए शीतल पेयजल, पंखे, कूलर और एसी की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने खाद्य सुरक्षा अधिकारियों को पानी और खाद्य पदार्थों की समय-समय पर जांच करने और आमजन को जागरूक करने के निर्देश दिए।

टीबी मुक्त भारत अभियान को मिले गति

प्रमुख शासन सचिव ने टीबी मुक्त ग्राम पंचायतों का शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने के निर्देश दिए। बैठक में टीबी स्क्रीनिंग, टेस्टिंग, ट्रीटमेंट, निक्षय पोषण योजना और निक्षय मित्र जैसी योजनाओं की समीक्षा की गई।

ऑक्सीजन प्लांट्स और दवा आपूर्ति पर जोर

चिकित्सा शिक्षा सचिव अम्बरीश कुमार ने अस्पतालों में ऑक्सीजन प्लांट्स के सुचारू संचालन और उपकरणों के समय पर मेंटेनेंस के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि लू-तापघात की स्थिति में मरीजों को तत्काल राहत देने के लिए जरूरी दवाओं और संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

शहरी आयुष्मान आरोग्य मंदिरों का प्रभावी संचालन

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की मिशन निदेशक डॉ. भारती दीक्षित ने कहा कि शहरी क्षेत्रों में आयुष्मान आरोग्य मंदिरों को और प्रभावी बनाया जाए।

इन केंद्रों पर सभी स्वास्थ्य सेवाएं तय मापदंडों के अनुरूप उपलब्ध होनी चाहिए। उन्होंने आभा आईडी और हेल्थ केयर फैसिलिटी रजिस्ट्री को शत-प्रतिशत पूरा करने पर भी जोर दिया।

मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए विशेष सतर्कता

निदेशक जनस्वास्थ्य डॉ. रवि प्रकाश शर्मा ने कहा कि लू-तापघात के साथ डेंगू, मलेरिया और अन्य मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए विशेष योजना बनाई जाए। उन्होंने जिला कलेक्टरों को फॉगिंग, एंटी लार्वा गतिविधियों और हाई-रिस्क इलाकों में अधिक टीमें तैनात करने के निर्देश दिए।

बैठक में चिकित्सा शिक्षा आयुक्त इकबाल खान, अतिरिक्त मिशन निदेशक डॉ. टी. शुभमंगला और निदेशक आरसीएच डॉ. सुनीत सिंह राणावत सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

सुविचार

उड़ने में बुराई नहीं है, आप भी उड़ें..लेकिन उतना ही जहाँ से जमीन साफ़ दिखाई देती हो।

संपादकीय .....

धर्मांतरण की साजिशों पर लगाम जरूरी

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव द्वारा की गई यह घोषणा कि उनकी सरकार नाबालिगों से दुष्कर्म की सजा की तरह लड़कियों का धर्म परिवर्तन कराने वालों के लिए भी मृत्युदंड का प्रावधान करेगी, ऐसे लोगों को कड़ी चेतावनी है, जो इस किस्म के कृत्यों में लिप्त हैं। देश में बहला-फुसलाकर, शादी का वादा कर, बेहतर जीवन स्तर के झूठे सपने दिखाकर धर्मांतरण कराने संबंधी गतिविधियां चल रही हैं। आजकल हिंदू बच्चियां इनके निशाने पर होती हैं। उनके दिलो-दिमाग में पूर्वजों के धर्म और मान्यताओं के संबंध में इतनी भ्रांतियां पैदा कर दी जाती हैं कि वे धर्मांतरण के लिए तैयार हो जाती हैं। ऐसे कई मामले देखे गए, जब कोई मासूम बच्ची किसी शातिर मानसिकता वाले शख्स के जाल में फंसी और उसने अपने परिवार से बगावत कर दी। साजिश के तहत उसका धर्मांतरण कराया गया और उसके बाद जो कुछ हुआ, उससे सुनहरे भविष्य के सपने मिट्टी में मिल गए। इसलिए अगर कोई राज्य सरकार बेटियों की सुरक्षा के लिए कोई कठोर कानून लेकर आती है तो उसका स्वागत होना चाहिए। हालांकि ऐसे कानून को लागू करवा पाना आसान नहीं होगा। कुछ लोग इसे न्यायालय में चुनौती दे सकते हैं। वे इसे निजी आस्था का मामला बताकर अदालती हस्तक्षेप की मांग कर सकते हैं। कुछ एनजीओ और कथित थिंक टैंक यह दुष्प्रचार कर सकते हैं कि भारत में धार्मिक स्वतंत्रता को दबाया जा रहा है। इसलिए मप्र सरकार को इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए ऐसे शब्दों का चयन करते हुए कानूनी प्रावधान करने होंगे, जिससे धार्मिक स्वतंत्रता भी रहे और बेटियों के प्रति कुत्सित मानसिकता रखने वालों के लिए सजा के रास्ते भी खुलें।

बेटियों के धर्मांतरण का समाज पर क्या असर हो सकता है, यह जानना हो तो पाकिस्तान के सिंध में रहने वाले हिंदुओं की आपबीती सुनें। वहां अब तक हजारों मासूम हिंदू बालिकाओं का धर्मांतरण कराया जा चुका है। आज वहां हिंदू लड़कों के विवाह के लिए लड़कियां नहीं मिल रही हैं। उधर कई गिरोह काम कर रहे हैं, जो डरा-धमकाकर, लालच देकर, झूठी दोस्ती कर, हमदर्दी जताकर और किसी न किसी तरीके से हिंदू बच्चियों को अपनी आस्था से दूर करते हुए उनका धर्मांतरण करवा रहे हैं। अब सोशल मीडिया पर ऐसे कई चैनल बन गए हैं, जो उन बेटियों की आवाज उठा रहे हैं। उन्हें कैसे बहला-फुसलाकर जाल में फंसाया गया, कैसे उनकी आस्था को बदला गया, कैसे माता-पिता के खिलाफ बगावत करने को उकसाया गया ... जैसे बिंदुओं पर खुलकर बात की जा रही है। कई लड़कियां, जिनका पहले धर्मांतरण कराया गया था, बाद में सच्चाई उनके सामने आ गई, वे इन चैनलों पर चर्चा में शामिल होकर लोगों को सावधान कर रही हैं। एक मामला (भारत के किसी शहर का) कुछ इस तरह था- सामान्य हिंदू परिवार की एक लड़की पढ़ाई में बहुत अच्छी थी। माता-पिता ने अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार उसे अच्छे स्कूल-कॉलेज तो भेजा, लेकिन अपने धर्म व संस्कारों की कोई खास शिक्षा नहीं दी। पढ़ाई के बाद वह लड़की एक दफ्तर में काम करने लगी, जहां एक सहकर्मी से उसकी घनिष्ठता हो गई। बहुत सीधा और सरल नजर आने वाला वह शख्स अपने 'उदार' विचारों के कारण उस लड़की को बहुत अच्छा लगने लगा। एक दिन वह उसे अपने घर ले गया, अपने परिवार से मिलाया। उन लोगों का व्यवहार भी बहुत 'उदार' था। कुछ महीने बाद लड़की ने माता-पिता को अपने फैसले से अवगत कराया। घर में बहुत झगड़ा हुआ। माता-पिता ने कहा कि 'कम से कम इस बात की तो छानबीन कर लें कि लड़का कैसा है, परिवार कैसा है, उसकी सामाजिक छवि कैसी है', लेकिन उसकी एक न चली। लड़की ने धर्मांतरण कर लिया। उसके बाद शादी हो गई। सालभर में उसे पता लग गया कि दूर के ढोल सुहावने थे। पति ने उसकी सारी जमा-पूंजी ले ली। ससुराल वाले उस पर नई-नई शर्तें थोपने लगे। जब पति से शिकायत की तो उसने कहा कि मैं अपने माता-पिता से ऊपर नहीं हूं, वे जैसा कहेंगे, वैसा करना होगा, अन्यथा वे दूसरी बहू ले आएंगे। उस लड़की को एक संतान हुई, लेकिन उसके बाद ससुराल में रहना दूभर हो गया। उसे लौटकर मायके आना पड़ा। कुछ ऐसी ही कहानी राजस्थान की एक बेटी की है, जिसने धर्मांतरण के बाद एक युवक को अपना हमसफर बनाया। उसे दो लड़के हुए। इस दौरान उसे कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो गईं। उसके ससुराल वाले दोनों लड़कों को रखने के पक्ष में हैं, लेकिन महिला को हमेशा के लिए मायके भेजना चाहते हैं, ताकि उसके शौहर की दूसरी शादी करवा सकें। अगर इन बेटियों को समय रहते अपने धर्म, अपने संस्कारों का ज्ञान दिया होता और सरकार ने अपने स्तर पर कानूनी सुरक्षा उपलब्ध कराई होती तो इनका जीवन ऐसा नहीं होता।

ट्वीटर टॉक

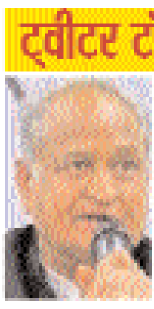

सामाजिक सुरक्षा पेंशन जरूरतमंद लोगों के लिए आजीविका का सहारा है। पेंशन पाने वाले लोग यथा बुजुर्ग, दिव्यांग इत्यादि अधिकांश ऐसे हैं जो कहीं भी आने-जाने के लिए किसी और पर निर्भर रहते हैं इसलिए उनका सत्यापन करवाने के लिए आना भी अपने आप में चुनौतीपूर्ण होता है।

-अशोक गहलोत

पूरा विपक्ष संसद में वोटर लिस्ट पर विस्तृत चर्चा की मांग कर रहा है। महाराष्ट्र की वोटर लिस्ट में गड़बड़ियों को लेकर मेरी प्रेस कॉन्फ्रेंस को एक महीने से अधिक हो गया है। मगर पारदर्शिता को लेकर चुनाव आयोग से हमने जो मांगें की थीं, वो आज तक पूरी नहीं की गई हैं।

-राहुल गांधी

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के स्थापना दिवस पर माँ भारती के सभी वीर जवानों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं! देश के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और आंतरिक सुरक्षा को अभेद्य बनाने वाले आप जैसे वीर सपूतों पर देश को सर्वदा गर्व रहेगा।

-अर्जुनराम मेघवाल

प्रेरक प्रसंग

शांत मन से ईश्वरीय अहसास

एक आदमी रात को झोपड़ी में बैठकर एक छोटे से दीये को जलाकर कोई शास्त्र पढ़ रहा था। आधी रात बीत गई। जब वह थक गया तो फूंक मारकर उसने दीया बुझा दिया। लेकिन वह यह देखकर हैरान हो गया कि जब तक दीया जल रहा था, पूर्णिमा का चांद बाहर खड़ा रहा। लेकिन जैसे ही दीया बुझ गया, तो चांद की किरणें उस कमरे में फैल गईं। वह आदमी बहुत हैरान हुआ यह देखकर कि एक छोटे से दीये ने इतने बड़े चांद को बाहर रोक कर रखा। इसी तरह, हमने भी अपने जीवन में अहंकार के बहुत छोटे-छोटे दीये जला रखे हैं, जिसके कारण परमात्मा रूपी चांद बाहर ही खड़ा रह जाता है। जब मन शांत होगा, तभी ईश्वर की उपस्थिति महसूस होगी।

सामयिक

समाज को पुरुषों की पीड़ा भी समझनी होगी

अनित वैद्यनाथ शर्मा
मोबाइल : 78770 70881

असल में समाज ने पुरुषों को हमेशा एक मशीन की तरह समझा है। ऐसी मशीन, जो दर्द सहन करती रहे, लेकिन कोई आवाज न करे और ना ही कभी किसी से शिकायत करे। समाज में पुरुष को रोने का अधिकार भी नहीं है। अगर गलती से या भावनाओं में बह कर पुरुष रो भी दे, तो उसे कमजोर कह दिया जाता है।

आगरा में एक निजी कंपनी में मैनेजर मानव शर्मा के रूप में एक और पुरुष वैवाहिक विवाद की भेंट चढ़ गया। मानव की मौत बताती है कि एक पुरुष भी कहीं ना कहीं मानसिक रूप से कमजोर है और टूटा हुआ है, लेकिन वह अपनी पीड़ा किसी से कह नहीं पा रहा है। मानव की लाइव फांसी का वीडियो हर उस समाज के चेहरे पर तमाचा है, जो हमेशा पुरुषों को केवल मजबूत और सहनशील समझने का दावा करता है। पत्नी के अफेयर, घरेलू प्रताड़ना और झूठे आरोपों से तंग आकर मानव ने आत्महत्या कर ली। यह अकेला मामला नहीं है, बल्कि हर साल लाखों पुरुष ऐसे हालात से गुजरते हैं, लेकिन उनकी आवाज न तो समाज सुनता है और ना ही कानून। वे अपने दर्द में भीतर ही भीतर घुट कर रह जाते हैं और मौत का रास्ता चुन लेते हैं।

पहले बात करते हैं आंकड़ों की। राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो यानी कि एनसीआरबी के मुताबिक साल 2020 में कुल 1,53,052 आत्महत्याएं हुईं, जिनमें से 1,08,532 पुरुष थे। मतलब कुल आत्महत्या का करीब 71 प्रतिशत। वहीं साल 2021 में कुल 1,64,033 आत्महत्याओं में से 1,18,979 पुरुष थे। इसी तरह साल 2022 में पुरुषों की आत्महत्या का यह आंकड़ा 1,19,543 तक पहुंच गया। साल 2015 से 2022 तक आठ सालों में करीब आठ लाख से ज्यादा पुरुषों ने आत्महत्या कर ली। एनसीआरबी का कहना है कि सबसे ज्यादा आत्महत्या करने वाले पुरुषों की वजह वैवाहिक विवाद, मानसिक प्रताड़ना, झूठे दहेज के केस, पत्नी के अवैध संबंध और आर्थिक तंगी रहे। असल में कानूनों का दुरुपयोग होने से भी इनकार नहीं किया जा सकता है। एनसीआरबी के आंकड़ों के अनुसार, 498 ए में दहेज उत्पीड़न के 80 प्रतिशत से ज्यादा केस झूठे पाए गए हैं। एक बार केस लगने के बाद पुरुष की मानसिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति पूरी तरह बर्बाद हो जाती है।

देश में आत्महत्या एक प्रमुख राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दा है। आंकड़ों के अनुसार, साल 2022 में कुल 1.71 लाख आत्म हत्याएं दर्ज की गईं, जो 2021 की तुलना में 4.2 प्रतिशत की वृद्धि और साल 2018 की तुलना में 27 प्रतिशत का उछाल दर्ज करती हैं।

प्रति एक लाख जनसंख्या पर आत्महत्या की दर साल 2022 में बढ़कर 12.4 हो गई है, जो अब तक उच्चतम है। आत्महत्या से मरने वाले पुरुषों में महिलाओं की तुलना में मानसिक स्वास्थ्य की ज्ञात स्थिति होने की संभावना बहुत कम होती है, जिसके लिए मानसिक स्वास्थ्य प्रणालियों के बाहर रोकथाम बिंदुओं की पहचान करना महत्वपूर्ण है। एक्सपर्ट कहते हैं कि अंतरंग साथी की समस्याएं, कानूनी मुद्दे, बेरोजगारी एवं वित्तीय समस्याएं और स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं जैसे गंभीर जीवन तनाव मध्यम आयु वर्ग के पुरुषों में आत्महत्या के लिए सबसे आम कारण हैं।

सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि हर साल एक लाख से ज्यादा पुरुष आत्महत्या करते हैं। क्या पुरुषों की पीड़ा को समझने वाला समाज में कोई नहीं है? क्या उनके दर्द को समाज ने पूरी तरह से अनदेखा कर दिया है? गौरतलब है कि कानून में महिलाओं की सुरक्षा के लिए 498 ए (दहेज उत्पीड़न) और डीवी एक्ट (घरेलू हिंसा कानून) जैसे कई प्रावधान हैं, लेकिन पुरुषों के लिए कोई ऐसा कानून नहीं है, जो उन्हें घरेलू प्रताड़ना से बचा सके। अगर पत्नी झूठा केस भी कर दे, तो पुरुष को दोषी मानकर तुरंत जेल भेजने की कार्रवाई शुरू कर दी जाती है। एक्सपर्ट का मानना है कि कानूनों का दुरुपयोग हो रहा है। उनका कहना है कि पुरुषों की पीड़ा को भी सुना जाना चाहिए। आखिर उनकी आवाज को कोई क्यों नहीं सुनता?

असल में समाज ने पुरुषों को हमेशा एक मशीन की तरह समझा है। ऐसी मशीन, जो दर्द सहन करती रहे, लेकिन कोई आवाज न करे और ना ही कभी किसी से शिकायत करे। समाज में पुरुष को रोने का अधिकार भी नहीं है। अगर गलती से या भावनाओं में बह कर पुरुष रो भी दे, तो उसे कमजोर कह दिया जाता है।

अगर वह अन्याय के खिलाफ आवाज उठाए, तो उसे महिला विरोधी करार दे दिया जाता है। उसे औरतों का दुश्मन बता दिया जाता है। समाज के मौजूदा हालातों को देखते हुए अब वक्त बदलाव का है। घरेलू प्रताड़ना में पुरुषों के लिए भी कानून बनाए जाने की मांग काफी समय से उठ रही है, जिसके बारे में अब गंभीरता से सोचने की जरूरत है। वहीं झूठे केस करने वालों पर कड़ी कार्रवाई का प्रावधान किए जाने की भी दरकार है। इसके अलावा समाज को पुरुषों की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को भी गंभीरता से समझना होगा। अब पुरुषों के आंसू भी समझने की जरूरत है, समय रहते ऐसा होना चाहिए।

विशेष

बदलते जमाने की रंग बदलती होली

प्रियंका सौरभ
मोबाइल : 7015375570

होली एक ऐसा त्योहार है जिसे हर पृष्ठभूमि के लोग मनाते हैं, जिसमें दुश्मनी भुलाकर गले मिलते हैं। फिर भी, एकता और प्यार का यह त्योहार बदल रहा है। फाल्गुन की खुशियाँ अब दूर की यादों की तरह लगती हैं। होली के रंग, कुछ सालों में फीके पड़ गए हैं। बड़े-बुजुर्ग इस बात पर अफसोस जताते हैं कि अब हंसी-मजाक, उत्साह और वह जीवंत भावना नहीं रही जो कभी इस उत्सव की पहचान हुआ करती थी। पानी की बौछारों की आवाज और होली की जीवंतता ने कुछ ही घंटों के उत्सव के बाद एक शांत ले ली है। आजो चाहे ढोल नगाड़, होली आई के उल्लास और उत्सव के इर्द-गिर्द होने वाली मस्ती-मजाक की आवाजें समय के साथ दबती जा रही हैं।

फाल्गुन आते ही होली का उत्साह हवा में घुलने लगता। मंदिरों में फाग की ध्वनि गूंजने लगी और हर तरफ होली के लोकगीत सुनाई देने लगे। शाम होते ही ढप-चंग के साथ पारंपरिक नृत्यों ने होली के रंग चारों ओर बिखेर दिए। लोग खुशी से एक-दूसरे पर पानी की छींटे मारते रहे और कोई कड़वाहट नहीं थी, बस खुशी थी। होली की तैयारियां बसंत पंचमी से ही शुरू हो जाती थीं और समुदाय के आंगन और मंदिर चंग की थाप से जीवंत हो उठते थे। रात में चंग की थाप के साथ नृत्य ने सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। दूर से फाल्गुन गीत और रसिया गाने वाले लोग नृत्य में शामिल होकर तारों की छांव में होली का आनंद मनाते थे। हालांकि, जैसे-जैसे समय बदलता है, रिश्तों की गर्माहट फीकी पड़ती नजर आती है। आजकल होली की बधाई अक्सर मोबाइल या इंटरनेट के जरिए भेजे गए हैप्पी होली के साथ शुरू और खत्म होती है। पहले जैसा उत्साह और जश्न का माहौल अब नहीं रहा। पहले बच्चे हर मोहल्ले में होली के लिए समूह बनाकर होली का धन इकट्ठा करते थे और खुशी-खुशी किसी पर भी रंग फेंकते थे। यहाँ तक कि जब उन्हें चिढ़ाया या डांटा जाता था, तो वे हंसते थे। अब ऐसा लगता है कि लोग मौज-मस्ती करने के बजाय बहस करने में ज्यादा रुचि रखते हैं।

पहले के समय में पड़ोसियों की बहू-बेटियों को परिवार की तरह माना जाता था। घर स्वादिष्ट व्यंजनों की खुशबू से भर जाते थे और मेहमानों का खुले दिल से स्वागत किया जाता था। आज, सगे-संबंधी ज्यादातर अपने घर तक ही सीमित रह गए हैं और समुदाय की भावना कम होती जा रही है। फोन पर एक साधारण होली मुबारक ने पहले के दिनों के हार्दिक मिलन की जगह ले ली है, जिससे रिश्ते कम मधुर लगने लगे हैं। बढ़ते अपराध के कारण परिवार अपनी बहू-बेटियों को दोस्तों या रिश्तेदारों से मिलने देने में हिचकिचाते हैं। पहले लड़कियाँ होली के दौरान खुशी और हंसी-मजाक करती हुई खुली हवा में घूमती थीं, लेकिन अब अगर कोई लड़की किसी रिश्तेदार के घर ज्यादा देर तक रुकती है, तो उसके परिवार में चिंता पैदा हो जाती है।

होली का त्योहार खुशियों का मौसम हुआ करता था, जिसकी शुरुआत होली के पौधे लगाने से होती थी। छोटी-छोटी लड़कियाँ गाय के गोबर से बड़कुल्ला बनाती थीं, खूबसूरत मालाएं बनाती थीं, जिन पर आभूषण, नारियल, पायल और बिछिया होती थीं। दुख की बात है कि ये परंपराएं अब खत्म हो गई हैं। पहले घर पर ही टेसू और पलाश के फूलों को भिगोकर रंग बनाया जाता था और महिलाएं होली के गीत गाती थीं। होली के दिन सभी लोग चंग की ताल पर नाचते हुए जश्न मनाते थे। बसंत पंचमी से ही फाग की धुनें गूंजने लगती थीं, लेकिन अब होली के गीत कुछ ही जगह सुनाई देते हैं। परंपरागत रूप से, विभिन्न समुदायों के लोग ढोलक और चंग की थाप के साथ होली खेलने के लिए एकत्रित होते थे। अब वह जीवंत भावना कहाँ चली गई है?

आज, होली महज एक परंपरा की तरह लगती है। हाल के वर्षों में, सामाजिक गुस्सा और विभाजन इतना बढ़ गया है कि कई परिवार इस त्योहार के दिन घर के अंदर ही रहना पसंद करते हैं। वैसे तो लोग सालों से होली का त्योहार उत्साह के साथ मनाते आ रहे हैं, लेकिन इस त्योहार का असली उद्देश्य भाईचारा बढ़ाना और नकारात्मकता को दूर करना है, जो अब कहीं खो गया है। समाज कई चुनौतियों का सामना कर रहा है और सामाजिक असमानता प्रेम, भाईचारे और मानवता के मूल्यों को कमजोर कर रही है। एक समय था जब होली एक महत्वपूर्ण अवसर था, जब परिवार होलिका दहन देखने के लिए इकट्ठा होते थे और उसी दिन वे खुशी-खुशी एक-दूसरे पर रंग लगाते और अबीर फेंकते थे। समूह होली की खुशियाँ बाँटने के लिए एक-दूसरे के घर जाते और भाग की भावना में डूबे हुए फगुआ गीत गाते थे। अब, वास्तविकता यह है कि होली पर कुछ ही लोग घर से बाहर रहना पसंद करते हैं। हर महीने और हर मौसम में एक नया त्योहार आता है, जो हमें उस खुशी की याद दिलाता है जो वे ला सकते हैं। ये उत्सव हमें उत्साहित करते हैं, हमारे दिलों में उमंग जगाते हैं और अकेलेपन की भावनाओं को दूर करते हैं, भले ही कुछ पल के लिए ही क्यों न हो। हमें इस त्योहारी भावना को संजोकर रखना चाहिए।

नजरिया

भारत-बांग्लादेश संबंध : विश्वास की नई राह या बढ़ता तनाव?

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

भारत और बांग्लादेश का रिश्ता ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से गहरे संबंधों से जुड़ा हुआ है। दोनों देश एक साझा इतिहास और संस्कृति को साझा करते हैं, लेकिन समय-समय पर विभिन्न कारणों से इन संबंधों में खटास भी देखी गई है। हाल ही में बांग्लादेश के अंतरिम सरकार प्रमुख मुहम्मद यूनुस ने भारत-बांग्लादेश संबंधों को लेकर एक ईमानदार आकलन प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्वीकार किया कि दोनों देशों के पास अच्छे संबंध बनाए रखने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है। हालांकि, उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि हाल के दिनों में कुछ मुद्दों के कारण इन संबंधों में तनाव देखा गया है। उनके अनुसार, यह तनाव 'झूठी प्रचार' की देन है, लेकिन इस दावे की वैधता को संदेह की दृष्टि से देखा जा सकता है। बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार के भारत के साथ आरंभिक संबंध कुछ कठिनाइयों से गुजरे हैं। इसका प्रमुख कारण बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हुए हमले और ढाका प्रशासन द्वारा इस मामले को संभालने का तरीका था। इस वजह से नई दिल्ली और ढाका के बीच तनाव की स्थिति बनी रही। इसके अलावा, भारत के लिए एक और चिंता का विषय पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की भारत में उपस्थिति और उनकी हालिया राजनीतिक गतिविधियां भी बनी हुई हैं।

भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने पिछले महीने ओमान में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान बांग्लादेशी समकक्ष तौहीद हुसैन से मुलाकात की थी। इसके अलावा, भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने दिसंबर में ढाका की यात्रा की थी। ये दोनों अवसर भारत और बांग्लादेश के लिए आपसी मुद्दों पर स्पष्ट संवाद स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण थे। हालांकि, यूनुस और उनकी सरकार के विभिन्न अधिकारियों ने इन अवसरों का पूरी तरह से उपयोग नहीं किया। इसका एक प्रमुख संकेत यह भी है कि दोनों देशों के लोगों के बीच संबंधों पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा और बांग्लादेशी नागरिकों को जारी किए जाने वाले वीजा की संख्या में भारी गिरावट आई। यूनुस ने स्वयं यह स्वीकार किया कि भारत और बांग्लादेश के बीच मजबूत संबंध होना आवश्यक है। खासतौर पर भारत के लिए यह और भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसके उत्तर-पूर्वी राज्यों की सुरक्षा और आर्थिक समृद्धि काफी हद तक बांग्लादेश के साथ घनिष्ठ संबंधों पर निर्भर करती है। पिछले एक दशक में दोनों देशों के बीच व्यापार और सुरक्षा सहयोग के कारण इस क्षेत्र को व्यापक आर्थिक लाभ हुआ है। यदि बांग्लादेश भारत के साथ संबंधों को मजबूत बनाए रखना चाहता है, तो उसे नई दिल्ली की चिंताओं और 'रेड लाइन्स' को समझते हुए उनके प्रति अधिक संवेदनशीलता दिखानी होगी।

बांग्लादेश की वर्तमान सरकार को इस बात पर विचार करना चाहिए कि भारत-बांग्लादेश संबंधों को प्रोपेगेंडा या बाहरी प्रचार से नहीं, बल्कि वास्तविक नीतियों और आपसी समझ से निर्देशित किया जाना चाहिए। दोनों देशों को उन तत्वों की पहचान करनी होगी, जो आपसी संबंधों में दरार डालने की कोशिश कर रहे हैं। भारत और बांग्लादेश के बीच आर्थिक संबंधों की दृष्टि से व्यापारिक आदान-प्रदान को सुगम बनाना आवश्यक है। वर्तमान में भारत, बांग्लादेश का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। भारतीय कंपनियां बांग्लादेश में निवेश कर रही हैं, और बांग्लादेश भारत को विभिन्न वस्तुओं का निर्यात कर रहा है। हालांकि, कुछ व्यापारिक असंतुलन अभी भी मौजूद हैं, जिसे दोनों देशों को मिलकर हल करना होगा।

सुरक्षा के संदर्भ में भी दोनों देशों का सहयोग आवश्यक है। भारत के लिए, बांग्लादेश की स्थिरता का सीधा प्रभाव उसके पूर्वोत्तर राज्यों की सुरक्षा पर पड़ता है। यदि बांग्लादेश में आंतरिक अशांति या कट्टरपंथी गतिविधियां बढ़ती हैं, तो इसका प्रभाव भारत के सीमावर्ती इलाकों पर भी पड़ सकता है। इसलिए, दोनों देशों को सुरक्षा सहयोग को और मजबूत करने के लिए निरंतर संवाद बनाए रखना चाहिए।

लोग-से-लोग संपर्क किसी भी द्विपक्षीय संबंध की नींव होते हैं। हाल के दिनों में, भारत द्वारा बांग्लादेशी नागरिकों के लिए वीजा प्रतिबंधों को कड़ा किए जाने से दोनों देशों के बीच संबंधों में एक अविश्वास की भावना उत्पन्न हो रही है। इस प्रकार के प्रतिबंधों से व्यापार, शिक्षा और पर्यटन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। दोनों देशों को इस मुद्दे को हल करने के लिए एक स्पष्ट नीति बनानी होगी ताकि नागरिकों के बीच विश्वास बना रहे।

राजनीतिक दृष्टिकोण से भी भारत-बांग्लादेश संबंध एक महत्वपूर्ण चरण में हैं। शेख हसीना के नेतृत्व में बांग्लादेश ने भारत के साथ एक स्थिर और मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखा था। लेकिन वर्तमान कार्यवाहक सरकार के तहत, कुछ नए तनाव सामने आए हैं। भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता उसके साथ संबंधों को प्रभावित न करे। इसी तरह, बांग्लादेश को भी यह समझना चाहिए कि भारत के लिए उसके साथ स्थिर और विश्वसनीय संबंध बनाए रखना प्राथमिकता है।

आगामी बिम्सटेक शिखर सम्मेलन भारत और बांग्लादेश के नेताओं के बीच बातचीत का एक महत्वपूर्ण अवसर हो सकता है। यदि इस सम्मेलन के दौरान यूनुस और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच बैठक होती है, तो यह दोनों देशों के बीच संबंधों को फिर से मजबूत करने का एक अवसर बन सकता है। इस बैठक में द्विपक्षीय व्यापार, सुरक्षा सहयोग और वीजा प्रतिबंधों को लेकर चर्चा की जा सकती है। भारत और बांग्लादेश दोनों को यह समझना होगा कि उनका सहयोग न केवल उनके लिए, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के लिए महत्वपूर्ण है। दोनों देशों के बीच संबंधों में यदि सुधार होता है, तो यह पूरे क्षेत्र की स्थिरता और विकास में योगदान देगा। इसके लिए, केवल सरकारों को ही नहीं, बल्कि दोनों देशों की जनता को भी आपसी समझ और सहयोग की भावना को बढ़ावा देना होगा। यह आवश्यक है कि दोनों देश पारस्परिक सम्मान, विश्वास और सहयोग के आधार पर अपने संबंधों को और अधिक मजबूत बनाएं।

अब फिल्म बनाएंगी श्वेता त्रिपाठी

'मिर्जापुर' फेम अभिनेत्री श्वेता त्रिपाठी अभिनय के बाद अब निर्माता के तौर पर इंडस्ट्री में काम करने के लिए तैयार हैं। उनके पास कई जॉनर के प्रोजेक्ट्स हैं। श्वेता को पहले प्रोडक्शन में बनी फिल्म दो महिलाओं के बीच की प्रेम कहानी पर आधारित होगी। इस प्रोजेक्ट में उन्होंने एक अभिनेता के रूप में एंट्री ली थी, लेकिन बाद में निर्माता के रूप में जुड़ने का फैसला लिया। आइए जानते हैं अभिनेत्री ने ऐसा क्यों किया?

क्यों लिया फिल्म का निर्माता बनने का फैसला?

श्वेता के प्रोडक्शन में बनने वाली यह फिल्म LGBTQIA+ पर आधारित है। निर्माता के तौर पर फिल्म से जुड़ने के फैसले के बारे में बात करते हुए श्वेता त्रिपाठी ने कहा, जब एक एक्टर के रूप में यह स्क्रिप्ट मेरे पास आई तो मैं तुरंत इसकी संवेदनशीलता और जिस तरह से इसमें प्रेम को उसके शुद्ध रूप में दर्शाया गया था, उससे आकर्षित हो गई। जैसे-जैसे मैंने गहराई से इसे जाना, मुझे एहसास हुआ कि इस कहानी को सही तरीके से बताया जाना कितना महत्वपूर्ण है। इसके बाद ही मैंने निर्माता के रूप में इसका हिस्सा बनने का फैसला किया। श्वेता ने आगे कहा, यह सिर्फ एक फिल्म नहीं है। यह प्रेम, पहचान और खुद के होने के साहस का उत्सव है। एक निर्माता के रूप में अब मेरे पास कहानियां कहने की रचनात्मक स्वतंत्रता है और मैं इससे बेहतर शुरुआत की उम्मीद नहीं कर सकती थी। इसके अलावा श्वेता के प्रोडक्शन स्लेट में एक हॉरर फिल्म, एक ड्रामा और एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर शामिल है।

बच्चों की कहानियां बनाना चाहती हैं श्वेता

इस फिल्म के अलावा श्वेता की रुचि बच्चों की कहानी बनाने में भी है। यह जॉनर उनके दिल के काफी करीब है। अभिनेत्री का मानना है कि हम जो फिल्में देखते हुए बड़े होते हैं, वह हमें बहुत गहराई से आकार देती हैं और उन्हें ऐसी कहानियां बनाने की उम्मीद है जो बच्चों के दिमाग पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ें।

फिल्म इंडस्ट्री में समान अवसर मिलेगा तभी सशक्त बनेंगी महिलाएं

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अभिनेत्री मोना सिंह ने फिल्म इंडस्ट्री में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर बात की।

अभिनेत्री का मानना है कि इंडस्ट्री में महिलाएं तभी सशक्त बन सकती हैं, जब उन्हें भी मुख्य किरदार मिले, समान अवसर मिले। मोना ने कहा, मेरी राय में हमारे मनोरंजन जगत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बदलाव महिलाओं के प्रतिनिधित्व और उसकी विविधता को बढ़ावा देने के साथ ही अधिक समान अवसर मुहैया कराने की आवश्यकता है।

उन्होंने आगे कहा, मुझे लगता है कि कैमरे के सामने और पीछे दोनों जगह महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाकर, उन्हें अधिक बारीक या अलग हटकर भूमिका निभाने की छूट देकर उनके लिए बेहतर किया जा सकता है।

वर्कफ्रंट की बात करें तो अभिनेत्री लोकप्रिय टीवी शो जस्सी जैसी कोई नहीं में शानदार काम कर घर-घर छा गई। शो में उनका किरदार आज भी भूला नहीं जा सकता है। उन्होंने शो में एक सेक्रेटरी की भूमिका निभाई, जो आंखों पर मोटा चश्मा, लगाए नजर आई, जिसमें कॉन्फिडेंस की कमी रहती है। टीवी के साथ ही मोना सिंह कई फिल्मों में भी काम कर चुकी हैं। जस्सी जैसी कोई नहीं के बाद वह रियलिटी शो 'झलक दिखला जा' के पहले सीजन में नजर आईं, जिसकी वह विजेता भी रहीं। 'फेमिना मिस इंडिया' और 'झलक दिखला जा 2' को भी होस्ट कर चुकी हैं।

टीवी जगत में सफल होने के बाद अभिनेत्री साल 2009 में बॉलीवुड में एंट्री की। उन्होंने राजकुमार हिरानी की कॉमेडी-ड्रामा 3 इडियट्स (2009) में सहायक भूमिका निभाई। उनके किरदार को दर्शकों ने पसंद किया। इस दौरान मोना ने कई और भी फिल्मों में सहायक भूमिका निभाई। उन्होंने लाल सिंह चड्ढा और मुंज्या जैसी फिल्में की। उन्होंने फिल्म लाल सिंह चड्ढा में आमिर खान की मां की भूमिका निभाई थी। साथ ही वह वेब सीरीज मेड इन हेवन और काला पानी में भी अहम किरदार में नजर आईं। मोना सिंह साल 2012 में फोर्ब्स इंडिया की 100 सेलिब्रिटी की लिस्ट में भी शामिल हो चुकी हैं।

टीवी की दुनिया ने हमेशा महिलाओं को सम्मान दिया

रुपाली गांगुली लगभग पांच साल से सीरियल 'अनुपमा' में मुख्य भूमिका निभा रही हैं। यह सीरियल आम महिलाओं की समस्याओं को भी अपनी कहानी के जरिए दिखाता है। साथ ही उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनने का संदेश भी देता है। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान रुपाली गांगुली ने अपने टीवी सीरियल में काम करने के अनुभव, यहां के माहौल के बारे में बात की। हाल ही में जूम को दिए गए इंटरव्यू में रुपाली गांगुली कहती हैं, 'टीवी जैसी कोई और इंडस्ट्री हो ही नहीं सकती है। यह एक अच्छी जगह है। यहां आपको काबिलियत पर काम मिलता है। मैं आज भी ऑडिशन देती हूं। लेकिन इस इंडस्ट्री ने महिलाओं को बहुत सम्मान दिया है। महिला कलाकारों को यहां रानियों की तरफ ट्रीट किया जाता है।

फिल्मों के बुरे अनुभव भी बताए

टीवी की तारीफ करने के अलावा रुपाली गांगुली ने यह भी बताया कि उन्होंने फिल्मों में काम करना क्यों छोड़ा। वह बताती हैं, 'कई लोगों ने फिल्म इंडस्ट्री में कास्टिंग काउच का सामना किया है। आज तो महिलाएं इस बारे में बात कर रही हैं, उस वक्त बात नहीं होती थी। यही बड़ी वजह रही कि मैंने फिल्म इंडस्ट्री को छोड़ दिया।

जेलर 2 को लेकर आई बड़ी जानकारी

तमिल सुपरस्टार रजनीकांत के फैंस के लिए खुशखबरी है। वह एक बार फिर बड़े पर्दे पर अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराने के लिए तैयार हैं। उनके पास कई बड़ी फिल्में हैं, जिनमें से एक जेलर 2 भी है। फिल्म में फैंस रजनीकांत को एक बार फिर से पहले भाग की तरह मुथुवेल पांडीयन के किरदार में देखे सकेंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक जेलर 2 की शूटिंग अगले हफ्ते में शुरू होने वाली है। फिल्म की टीम पहले चेन्नई में शूटिंग करेगी। उसके बाद गोवा और तमिलनाडु के थेनी में आगे की शूटिंग की जाएगी। फिल्म में एक बार फिर से अनिरुद्ध रविचंदर का संगीत सुनने को मिलेगा। वहीं, फिल्म का निर्देशन नेल्सन दिलीप कुमार करने वाले हैं। फिल्म सिनेमाघरों में कब तक दस्तक देगी इस बात का अभी आधिकारिक एलान नहीं किया गया है।

पैन-इंडिया फिल्म 'महाशक्ति' का हिस्सा बनकर रोमांचित हूं

मशहूर निर्देशक सुंदर सी अपनी नई पैन-इंडिया फिल्म 'महाशक्ति' के साथ एक भव्य सिनेमाई अनुभव देने जा रहे हैं। ये फिल्म न सिर्फ क्षेत्रीय सिनेमा की सीमाओं को तोड़ेगी, बल्कि भारत और दुनिया भर के दर्शकों को एक नई कहानी से जोड़ने का काम करेगी। इसमें साउथ इंडियन एक्ट्रेस नयनतारा लीड रोल प्ले करेंगी। नयनतारा ने अपने किरदार के बारे में बात करते हुए कहा- 'इस किरदार को निभाना महज अभिनय तक सीमित नहीं है। ये एक भावना है। 'महाशक्ति' सिनेमा से परे एक शक्ति रखती है। सुंदर सर के विजन के साथ हम एक ऐसी कहानी लेकर आ रहे हैं, जो हर दर्शक पर अपना असर छोड़ेगी। मैं इस भव्य यात्रा का हिस्सा बनकर रोमांचित हूं'। फिल्म की शूटिंग जोरों पर है और मेकर्स जल्द ही इसकी रिलीज डेट का ऐलान करेंगे। इस फिल्म को भारत समेत कई भाषाओं में रिलीज़ किया जाएगा, जिससे ये एक पैन-इंडिया ब्लॉकबस्टर बनने की पूरी संभावना है। फिल्म में नयनतारा एक दिव्य शक्ति और रक्षक की भूमिका निभाएंगी।

प्रभास ने मुफ्त में किया कन्नप्पा में कैमियो? विष्णु मांचू ने किया खुलासा

विष्णु मांचू की पौराणिक ड्रामा कन्नप्पा बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। फिल्म प्रभास, अक्षय कुमार, काजल अग्रवाल और मोहनलाल के दिलचस्प कैमियो की वजह से चर्चा में है। अब विष्णु मांचू अपनी फिल्म का प्रचार करने में जुटे हुए हैं। हाल ही में फिल्म का टीजर जारी हुआ था, जिसमें प्रभास के कैमियो और उनके किरदार के बारे में खास चर्चा हुई थी। वहीं, अब प्रभास के किरदार से जुड़ी बारे में दिलचस्प जानकारी सामने आई है।

फ्री में प्रभास ने किया काम

साउथ सुपरस्टार प्रभास ने विष्णु मांचू की आने वाली फिल्म कन्नप्पा में अपने दमदार कैमियो के लिए एक भी रुपये नहीं लिया। फिल्म में अभिनेता रुद्र की पौराणिक भूमिका निभाते नजर आएंगे। हाल ही में एक्स पर चैटिंग सेशन के दौरान एक यूजर ने विष्णु मांचू से पूछा, क्या प्रभास सर फ्री में एक्टिंग करते हैं? क्या यह सच है? इस पर विष्णु मांचू ने हां कहकर इसकी पुष्टि की। हालांकि, उन्होंने इस बारे में और अधिक जानकारी नहीं दी, लेकिन उनका सकारात्मक जवाब प्रभास के प्रशंसकों को खुश करने के लिए काफी था।

प्रभास ने तुरंत किरदार के लिए कह दी थी हां

विष्णु मांचू ने यह भी बताया कि प्रभास को कन्नप्पा में रुद्र की भूमिका स्वीकार करने में बस कुछ ही मिनट लगे। अभिनेता ने कहा, उन्हें यह बेहद पसंद आया। कन्नप्पा में बॉलीवुड स्टार अक्षय कुमार भी भगवान शिव की भूमिका निभाते नजर आएंगे। फिल्म की कहानी की बात करें तो रिपोर्ट्स के अनुसार, मुख्य भूमिका निभाने वाले विष्णु मांचू युद्ध की कठोर वास्तविकताओं का सामना करने के बाद भगवान शिव के एक उत्साही भक्त बन जाएंगे।

फिल्म की शूटिंग और निर्माण

फिल्म में काजल अग्रवाल देवी पार्वती की भूमिका में होंगी और मोहनलाल किराता की भूमिका में नजर आएंगे। मुख्य भूमिका निभाने के अलावा विष्णु ने कन्नप्पा की पटकथा भी लिखी है। इसका निर्माण विष्णु मांचू के पिता और दिग्गज अभिनेता-निर्माता मोहन बाबू ने किया है। इसकी शूटिंग न्यूजीलैंड, हैदराबाद और अन्य स्थानों पर की गई है।

मैं हूं भारतीय सिनेमा का असली बादशाह, कार्तिक ने उड़ाया मजाक

बॉलीवुड के चमकते सितारे कार्तिक आर्यन लगातार चर्चाओं में बने रहते हैं। हाल ही में कार्तिक आर्यन ने अपने सोशल मीडिया पर निर्माता-निर्देशक करण जौहर के साथ एक मजेदार वीडियो शेयर किया है। ये वीडियो तब का है जब दोनों स्टार 25वें आईफा अवॉर्ड्स के लिए जयपुर पहुंचे थे। इस वीडियो में दोनों एक-दूसरे पर तंज कस रहे हैं और इस बात पर बहस कर रहे हैं कि भारतीय सिनेमा का असली राजा कौन है?

कौन है भारतीय सिनेमा का असली बादशाह?

वीडियो की शुरुआत में करण जौहर कार्तिक आर्यन से कहते हैं, कार्तिक, रॉयल्टी का भी कुछ मतलब होता है। बॉलीवुड का बादशाह मैं हूं, तुम नहीं। इस पर कार्तिक जवाब देते हुए कहते हैं, अगर आप बादशाह हो, तो मैं इंडियन सिनेमा का राजकुमार हूं। इस पर करण कहते हैं, हे भगवान, तुम और रॉयल्टी? असली रॉयल्टी मैं हूं। जिसके बाद भूल भुलैया 3 स्टार कार्तिक करण जौहर के ट्रांसफॉर्मेशन और उनके दुबले होने पर मजाकिया लहजे में तंज कसते हुए कहते हैं, आप इतने पतले कैसे हुए हो? ऐसा लग रहा है किसी ने करण भेज दिया है, और जौहर अभी बाकी है।

करण ने कार्तिक की फिल्म का उड़ाया मजाक

आगे करण जौहर कार्तिक पर मजाकिया लहजे में सख्त होते हुए 2023 में आई कार्तिक की फ्लॉप फिल्म 'शहजादा' पर तंज कसते हुए कहते हैं, ओह मिस्टर कैजादा। जिस पर कार्तिक कहते हैं, जोक शहजादा पर बनता है, उस पर होना चाहिए। इस पर करण जौहर कहते हैं, उस पर कुछ नहीं बनता है।

करण-कार्तिक के बीच हो गई थी अनबन

कार्तिक आर्यन और करण जौहर के बीच तब रिश्तों में तल्खियां आने की खबरें सामने आई थीं जब 2021 में कार्तिक आर्यन को करण जौहर की फिल्म 'दोस्ताना 2' से बाहर कर दिया गया था। फिल्म की शूटिंग भी शुरू हो चुकी थी, लेकिन बाद में कार्तिक को हटा दिया गया था। जिसके बाद इन दोनों के बीच अनबन की खबरें सामने आई थीं। हालांकि, दोनों में से किसी ने भी इसके पीछे की वजह का खुलासा नहीं किया था।

करण की फिल्म में नजर आएंगे कार्तिक

2023 में कार्तिक आर्यन के जन्मदिन के मौके पर करण जौहर ने कार्तिक के साथ अपनी नई फिल्म की घोषणा करके दोनों के बीच फिर से दोस्ती हो जाने का संकेत दिया था। करण ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अभिनेता के साथ एक फिल्म की घोषणा की थी। जिसके बाद दोनों के बीच की अनबन पूरी तरह से खत्म हो गई है। अब दोनों 2025 के आईफा अवॉर्ड्स को भी होस्ट करते दिखेंगे।

रणबीर कपूर के साथ फिल्म में काम करना चाहती हैं मावरा हुसैन

पिछले महीने पर्दे पर फिर से रिलीज हुई सनम तेरी कसम ने बॉक्स ऑफिस पर जमकर धमाल मचाया। नए फिल्मों से मुकाबला होने के बावजूद यह रोमांटिक ड्रामा फिर से दर्शकों को आकर्षित करने में सफल रही। फिल्म में मावरा हुसैन ने हर्षवर्धन राणे के साथ मुख्य भूमिका निभाई है। माहिरा हुसैन होकेन ने हाल ही में रणबीर कपूर के साथ काम करने की इच्छा जताई। उन्होंने व्यक्त किया कि वह उनके साथ रॉकस्टार का हिस्सा बनना पसंद करतीं। इंस्टेंट बॉलीवुड से बातचीत में मावरा हुसैन से पूछा गया कि वह रणबीर कपूर के साथ किस तरह की फिल्में करना चाहेंगी। उन्होंने कहा, मैं रॉकस्टार करना पसंद करती। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसी फिल्म है जिसे उन्होंने कई बार देखा है।

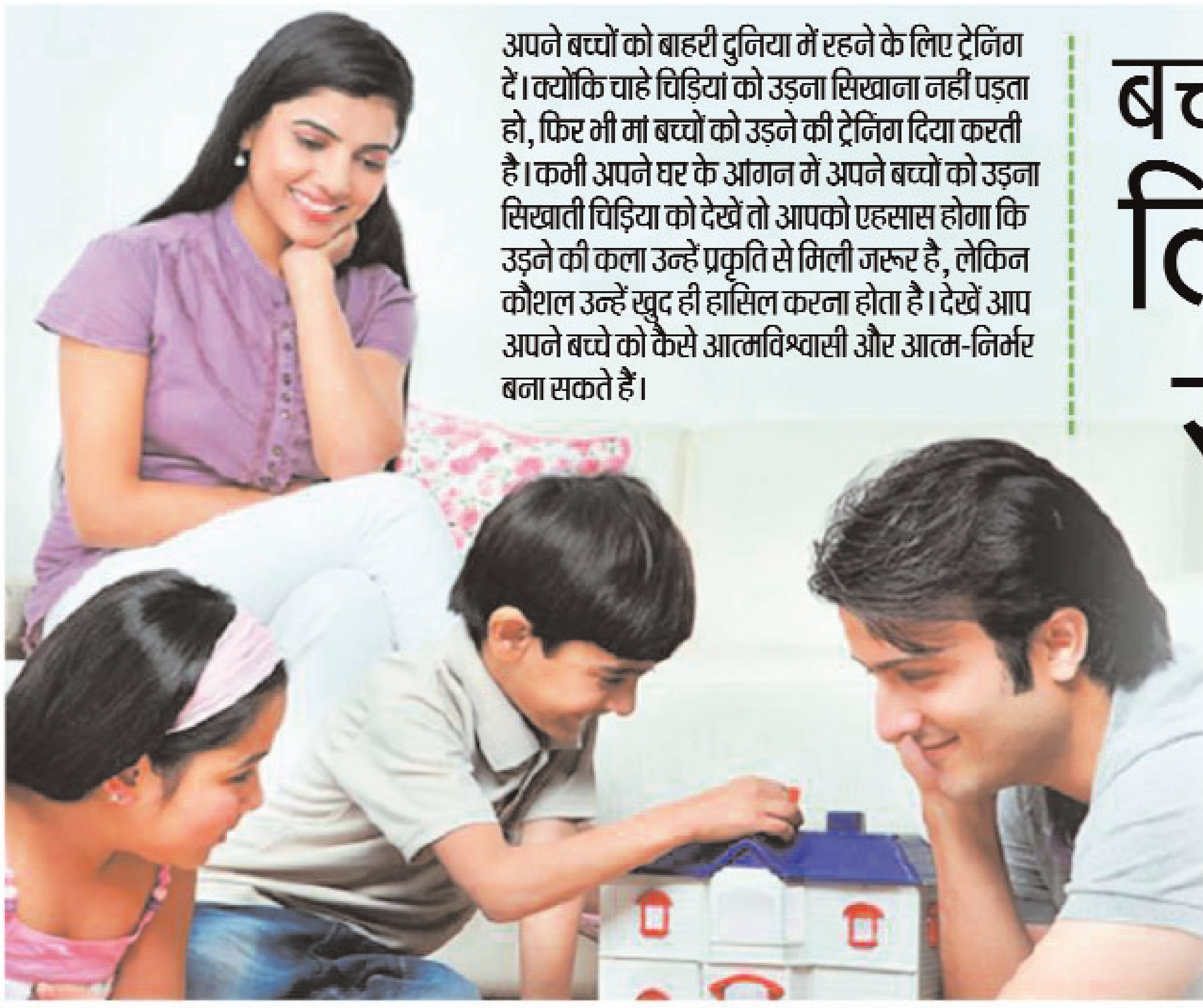

अपने बच्चों को बाहरी दुनिया में रहने के लिए ट्रेनिंग दें। क्योंकि चाहे चिड़ियां को उड़ना सिखाना नहीं पड़ता हो, फिर भी मां बच्चों को उड़ने की ट्रेनिंग दिया करती है। कभी अपने घर के आंगन में अपने बच्चों को उड़ना सिखाती चिड़िया को देखें तो आपको एहसास होगा कि उड़ने की कला उन्हें प्रकृति से मिली जरूर है, लेकिन कौशल उन्हें खुद ही हासिल करना होता है। देखें आप अपने बच्चे को कैसे आत्मविश्वासी और आत्म-निर्भर बना सकते हैं।

बच्चों को भविष्य के लिए इस तरह से करें तैयार

प्रवीर और मृदुल इत्तेफाक से रूममेट बन गए। मृदुल की मां कॉर्पोरेट सेक्टर में काम करती है, इसलिए उसका परिवेश एकदम ही अलग है। दूसरी और प्रवीर की मां सरकारी दफ्तर में काम करती है इसलिए उसका परिवेश मृदुल से कुछ अलग था। एक तरफ मृदुल हर तरह से आत्म-निर्भर और आत्मविश्वासी है तो दूसरी तरफ प्रवीर हर चीज को टालता रहता है। शुरुआत में दोनों को एक-दूसरे के साथ एडजस्ट होने में बहुत दिक्कतें पेश आईं। मृदुल क्या पहनना है से लेकर पिकनिक पर कहां जाना है और शाम को क्या सब्जी बनाने से लेकर बुक-शॉप से कौन-सी बुक खरीदनी है, जैसे सारे निर्णय स्वयं लेता है तो दूसरी तरफ प्रवीर को हर तरह का निर्णय लेने में दूसरों की जरूरत लगती है। वजह स्पष्ट है-मृदुल को बचपन से ही निर्णय लेने के लिए प्रेरित भी किया और निर्णय लेने भी दिया गया। प्रवीर को हमेशा ही बच्चा कहा गया और हर उस अवसर से उसे दूर रखा गया, जहां विकल्पों में से चुनाव करना था। अक्सर हम बच्चों के बड़े होने के दौरान ही उन्हें निर्णय लेने की क्रिया से वंचित करते चलते हैं और फिर जब वे बड़े हो जाते हैं तब एकाएक उन्हें कहने लगते हैं कि अब बड़े हो गए हो, अपने निर्णय खुद ही करो। उस पर जब उनका निर्णय गलत सिद्ध होता है तब हम उन्हें ही दोष देने लगते हैं कि इतने बड़े हो गए, लेकिन अब तक यह समझ नहीं आया कि अपने लिए क्या सही है और क्या गलत है?

बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा होने देना सिर्फ एक कहावत नहीं है, बल्कि उन्हें हर तरह से आने वाले जीवन और हकीकतों के सामने खड़े होने और लड़ने की कूव्वत देना है। इस मामले में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि जब बच्चे घर से बाहर पढ़ने के लिए जाते हैं तब लड़कियां लड़कों की तुलना में जल्दी एडजस्ट कर लेती है। हो सकता है इसके सामाजिक कारण भी हो, लेकिन एक बात यह भी है कि बहुत सारे मामलों में लड़कियां ज्यादा लचीली होती है और दूसरे घर के छोटे-मोटे कामों में मां का हाथ बंटाते-बंटाते वह कब आत्मविश्वास पा लेती है, इसका उन्हें खुद भी ज्ञान नहीं होता है। अपने बच्चों को बाहरी दुनिया में रहने के लिए ट्रेनिंग दें। क्योंकि चाहे चिड़ियां को उड़ना सिखाना नहीं पड़ता हो, फिर भी मां बच्चों को उड़ने की ट्रेनिंग दिया करती है। कभी अपने घर के आंगन में अपने बच्चों को उड़ना सिखाती चिड़िया को देखें तो आपको एहसास होगा कि उड़ने की कला उन्हें प्रकृति से मिली जरूर है, लेकिन कौशल उन्हें खुद ही हासिल करना होता है। देखें आप अपने बच्चे को कैसे आत्मविश्वासी और आत्म-निर्भर बना सकते हैं।

उन्हें एक कोना दें

चाहे जो परिस्थिति हो, आप अपने बच्चे को एक ऐसा कोना जरूर उपलब्ध कराएं, जिसे वह स्वयं व्यवस्थित करें। याद करें स्कूलों में बच्चों को दिया जाना वाला लॉकर। इसी तरह एक ड्रॉवर या एक लॉकर उसे जरूर दें, जहां वह अपनी चीजें व्यवस्थित कर रख सकें। इससे उसमें जिम्मेदारी का भाव भी आएगा और निर्णय करने की क्षमता का विकास भी होगा। जब वह उसे अपनी तरह से व्यवस्थित कर पाएगा तो उसमें आत्मविश्वास भी आएगा।

छोटे-छोटे निर्णय करने दें

अपने बच्चे को छोटे-छोटे निर्णय स्वयं करने दें। जैसे अपने दोस्त की बर्थडे पार्टी में वह क्या पहन कर जाना चाहता है? या फिर डिनर के लिए जाते हुए वह किस तरह के कपड़े पहनना चाहता है? या रेस्टोरेंट में उसे स्वयं अपना ऑर्डर देने के लिए कहें। आइसक्रीम का कौन-सा फ्लेवर या किस तरह का पित्जा वह खाना चाहता है, इसका निर्णय उसे स्वयं करने दें।

अपने रिश्ते उसे ही निभाने दें

यदि उसके दोस्त का जन्मदिन है या वह अपने दोस्त को किसी खास मौके पर पार्टी देना चाहता है या गिफ्ट देना चाहता है तो उसे खुद ही निर्णय करने दें। यदि वह आपसे राय मांगे तो उसे सुझाव दें। उसके समक्ष विकल्प रखें, उसे निर्णय न सुनाएं। उससे पूछे कि उसके दोस्त की रूचि क्या करने में है? उसी हिसाब से वह उसे गिफ्ट दें, लेकिन यह न बताएं कि उसे क्या गिफ्ट दे!

घर के छोटे-छोटे काम करने के लिए कहें

भारतीय घरों में अक्सर घर के कामों को लड़कियों के हिस्से में माना जाता है। ऐसे में अक्सर हम लड़कों को इससे अलग रखते हैं। लेकिन अब चूंकि लड़कों को भी अलग-अलग वजहों से घर से बाहर जाना पड़ता है, इसलिए उन्हें भी घर के काम करना आना चाहिए। इससे घर से बाहर एडजस्ट करने में उन्हें असुविधा नहीं होगी। खासतौर पर चाय बनाना, नाश्ता बना पाना और हां अपने कपड़ों को खुद ही धोना अपने बच्चे को जरूर सिखाएं।

अपनी समस्याओं को उन्हें ही हल करने दें

भाई-बहनों के बीच के झगड़े हो या फिर दोस्तों के बीच हुए विवादबच्चे को अपनी समस्याओं से खुद ही लड़ने को कहें। स्कूल के एन्यूएल फंक्शन में पार्टिसिपेशन के लिए डांस की तैयारी करनी हो या फिर कॉस्ट्यूम अरेंज करना हो, बच्चों को मार्गदर्शन तो दें, लेकिन उसका काम आप न करें।

इस तरह की छोटी-छोटी चीजें करके आप बच्चे को भविष्य के लिए तैयार कर सकते हैं। आखिर उसे आपके घर की छत से बाहर जाकर अपने लिए जमीन तलाशनी है और दुनिया बनानी है। अपनी छाया से अलग करके ही आप उसे विकसित होने का अवसर देंगी, ये न सिर्फ आपके लिए बल्कि स्वयं बच्चे के लिए भी अच्छा होगा।

छोटी-सी तारीफ भी देती है बड़ी खुशी

कोई भी महिला तब और निखर उठती है, जब कोई उसकी खूबसूरती की तारीफ करने वाला हो। कोई उसकी छोटी-छोटी जरूरतों का खयाल रखने वाला हो। अगर वह अपने साथी के लिए कुछ करे तो वह उसे नोटिस करे। जब साथी इन बातों का खयाल रखता है तो दांपत्य जीवन खुशियों से महक उठता है।

आज सुबह से ही तन्वी का मन कुछ उदास था, न जाने किस सोच में गुम थी। पिछले काफी समय से सोच रही थी कि उसकी शादीशुदा जिंदगी में कुछ कमी-सी है लेकिन तभी मोबाइल पर आए एक मैसेज ने जिंदगी में छाई सारी निराशाओं को पल भर में मानो दूर भगा दिया और तन्वी के मन में एकाएक नई उमंगें तैरने लगीं। इसमें लिखा था-'कैसी हो स्वीटहार्ट'? तुम्हारा दिन कैसा बीत रहा है?

यह मैसेज पढ़ते ही तन्वी का उदासी में डूबा दिन खुशनुमा हो उठा। उसके मन में शाम की कई प्लानिंग चलने लगीं। आईने में खुद को बार-बार निहारने लगी। वाकई में तन्वी जितनी खुश थी, उसकी चमक उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। उसके बाद ही तन्वी ने भी पूरी गर्मजोशी से मैसेज का जवाब भी दिया और उसके खुश रहने के साथ पूरे घर का माहौल खुशनुमा हो गया।

क्या चाहती हैं महिलाएं

अक्सर पुरुष सोचते हैं कि स्त्रियों को खुश करना बड़ा मुश्किल है, लेकिन वे नहीं जानते कि उनकी जीवनसंगिनी खुश होने के लिए बेशकीमती तोहफा नहीं चाहती, उसे तो प्यार से दी गई एक कैंडी भी खुश कर सकती है। लंबे से मेल के बजाय प्यार में डूबी छोटी-सी पंक्ति भी जीवनसाथी को प्रसन्ना कर सकती है। बस, इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

बस थोड़ी-सी केयर

सचाई यह है कि करियर में कोई स्त्री कितनी भी कामयाब क्यों न हो जाए, उसे सबसे बड़ी खुशी तब मिलती है, जब उसका साथी उसकी छोटी-छोटी ख्वाहिशों को समझता हो, उनका खयाल रखता हो। दरअसल, ऐसा करते हुए वह यह जता देता है कि वह उसके लिए कितनी खास है। महिलाएं हमेशा से चाहती हैं कि उनका साथी कार में पहले खुद बैठने की बजाय उनके लिए कार का दरवाजा खोले। ये चाहत इसलिए नहीं है कि वह यह काम खुद नहीं कर सकती या फिर शारीरिक रूप से कमजोर हैं, वह सिर्फ अपने पार्टनर से एक स्नेह भरे रिश्ते की अपेक्षा रखती हैं।

प्रकृति ने पुरुष को फिजिकली मजबूत बनाया है। वह मेहनत करता है, परिवार चलाता है। स्त्री उसका खयाल रखती है। आदिकाल से ऐसा ही होता रहा है लेकिन समय के साथ इसमें बदलाव भी आया है। अब स्त्रियां घर-ऑफिस साथ संभाल रही हैं। पुरुष उनकी मेहनत की कद्र करता है, लेकिन कहीं न कहीं वह इसका इजहार करने से चूक जाता है।

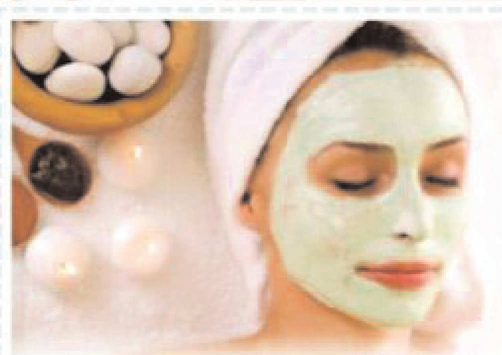

माथे पर बढ़ रही लकीरों को हटाएंगे ये होममेड मास्क

बिजी लाइफ के दौरान त्वचा का ख्याल नही रख पाते हैं। लेकिन जब कहीं जाना होता है तब हमें अपनी स्किन का ख्याल आता है, पर उस वक्त कोई उपाय नहीं सूझता है और बेकार मूड से फंक्शन में जाना पड़ता है। कोई बात नहीं अब भी केयर कर सकते हैं। तो आइए जानते हैं कैसे माथे पर आ रही चिंता की लकीरों को हटाए कुछ ही दिनों में।

गाजर और अंडे का पैक

गाजर में मौजूद तत्व बीटा कैरोटीन, आयोडीन झुर्रियों को कम करने में मदद करते हैं। साथ ही अंडे में भी पोषक तत्व मौजूद होते हैं जो त्वचा में कसावट पैदा करते हैं। गाजर को मिक्सी में किस लें और एग व्हाइट को अच्छे से मिक्स कर लें। इसके बाद चेहरे पर चेहरे पर लगा लें। 20 मिनट बाद चेहरे को नॉर्मल पानी से धो लें। हफ्ते में कम से कम दो बार इस पैक का जरूर इस्तेमाल करें।

ऑलिव ऑयल और शहद

माथें पर उभरने वाले लकीरे आपकी खूबसूरती कम कर देती है। लेकिन 1 चम्मच शहद और 1 चम्मच ऑलिव ऑयल लें। दोनों को अच्छे से मिक्स कर लें। इसके बाद रात को सोने सेपहले सिर पर लगा लें सुबह उठकर मुंह को धो लें। हफ्ते में 2 या 3 बार ऐसा करें। कुछ ही दिन में आराम मिल जाएगा।

कोको पाउडर और ऑलिव ऑयल

माथे पर दिखती लकीरे आपको बहुत जल्दी शर्मिंदा करा देती है। लेकिन अब नहीं होना पड़ेगा। 1 चम्मच कोको पाउडर और 1 चम्मच ऑलिव ऑयल लें। दानों को अच्छे से मिक्स कर लें। इसके बाद चेहरे पर 20 मिनट के लिए लगा लें। फिर नॉर्मल पानी से धो लें। कुछ ही दिन में आराम मिल जाएगा।

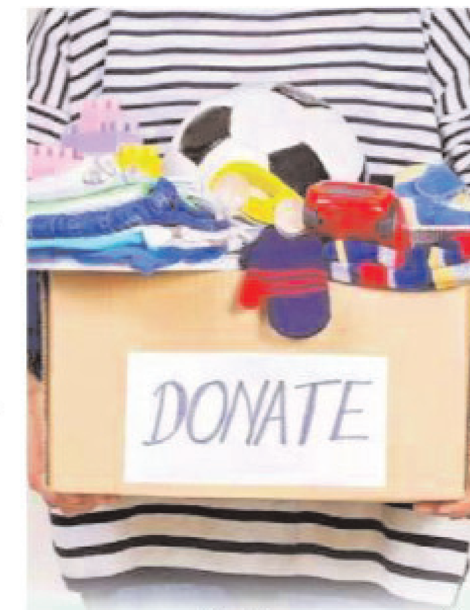

बच्चे के पुराने खिलौने फेंके नहीं बल्कि ऐसे करें इस्तेमाल

अपने बच्चों के लिएही खिलौने चुनने में पेरेंट्स बहुत समय लगा देते हैं। आप जिस खिलौने को पसंद करने में घंटों लगा देते हैं, बच्चा उससे कुछ साल ही खेल पाता है और बड़ा होने पर वो खिलौने उसके किसी काम के नहीं रहते हैं। जब बच्चा खिलौनों से खेलना बंद कर देता है, तो पेरेंट्स के लिए इन्हें संभालकर रखना मुश्किल हो जाता है। उन्हें समझ नहीं आता है कि वो इन खिलौनों को कहां रखें या इनका क्या करें।

खिलौनों का क्या करें

अगर आपके बच्चे के ढेरों खिलौने अब बेकार पड़े हैं और घर में उनसे खेलने वाला कोई नहीं है, तो आप उन्हें दान कर सकते हैं। इस तरह से खिलौने उन बच्चों तक पहुंच पाएंगे, जिन्हें सच में इसकी जरूरत हो। आपकी इस कोशिश से किसी मासूम बच्चे के चेहरे पर मुस्कान आ सकती है। यहां हम आपको कुछ ऐसे तरीके और जगहें बता रहे हैं, जहां आप अपने बच्चों के खिलौनों को दान कर सकते हैं।

कैसे खिलौने कर सकते हैं दान

जो खिलौने अच्छी कंडीशन में हों और ज्यादा इस्तेमाल न किए गए हों, उन्हें दान के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है। आप ब्लॉक्स, पजल्स, बोर्ड गेम, स्टफड एनीमल, टॉय कार, क्राफ्ट किट, स्पोर्ट्स किट, एक्टिविटी बुक जैसे कई तरह के टॉएज दान कर सकते हैं। हालांकि, कई जगहों पर मुंह में लेने वाले खिलौने दान में नहीं लिए जाते हैं जैसे कि पैसिफायर और टीथर आदि। आप खिलौनों को दान करने से पहले कंफर्म कर लें कि उस जगह पर किस तरह के टॉएज लिए जाते हैं।

चैरिटी में

आप उन संस्थानों में खिलौनों को दान कर सकते हैं जो चैरिटी करती हों। ये संस्थाएं अनाथ बच्चों को ये खिलौने देती हैं। इसके अलावा इनके द्वारा गरीब परिवारों के बच्चों को भी खिलौने और जरूरी सामान दिए जाते हैं।

शेल्टर या आश्रय स्थल

वुमेन शेल्टर होम में भी आप खिलौनों को दान कर सकते हैं। इन जगहों पर बच्चों के पास बहुत कम चीजें और सुविधाएं होती हैं। ये लोग आपके गिफ्ट और खिलौनों को आसानी से ले लेंगे। आप इन्हें खिलौनों के अलावा कपड़े और टॉयलेटरीज भी दान कर सकते हैं। इसके अलावा और क्या-क्या दान कर सकते हैं, यह जानने के लिए आप सीधा शेल्टर होम में बात कर सकते हैं।

चिल्ड्रेन होम

आप अनाथ आश्रम में भी बच्चों के खिलौने दान कर सकते हैं। यहां हर उम्र के बच्चे होते हैं जिन्हें आपके खिलौने पसंद आ सकते हैं।

अस्पताल या धार्मिक केंद्र

कई अस्पताल भी बच्चों के खिलौने लेते हैं। यहां दाखिल होने वाले बच्चों को ट्रीटमेंट के दौरान खिलौनों से खेलने दिया जाता है। इसके अलावा आपके आसपास के धार्मिक केंद्रों में भी बच्चों के खिलौने लिए जा सकते हैं। आप मंदिर के बाहर बैठे बच्चों को खिलौने दे सकते हैं। इन बच्चों के पास बचपन की सबसे प्यारी चीज यानि खिलौनों के नाम पर कुछ नहीं होता है। ऐसे में आपकी छोटी सी मदद इनके चेहरे पर मुस्कान ला सकती है।

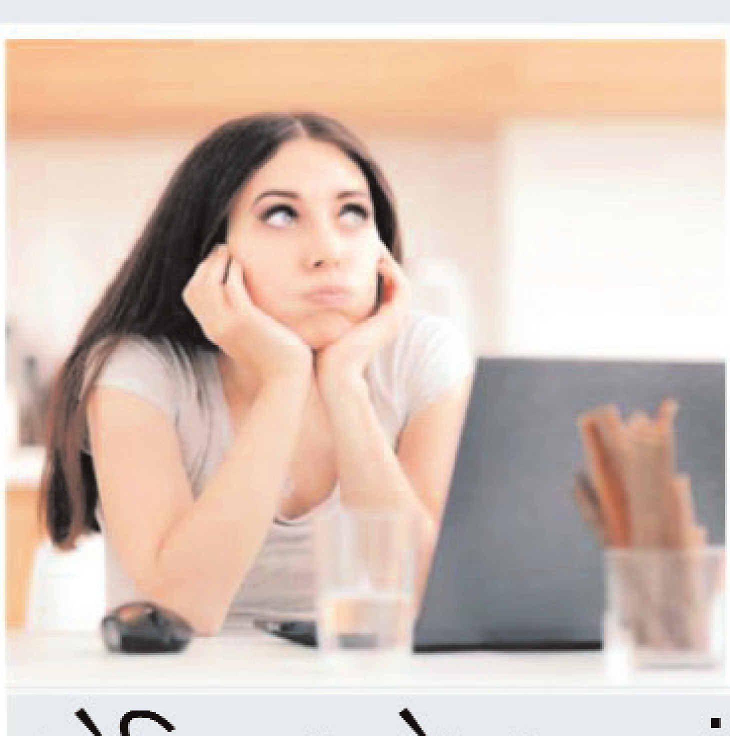

बोरियत को न बनाएं अपनी आदत!

सारा काम खत्म हो गया, डिनर के लिए बाहर जाने का मन नहीं है, इस सप्ताह कोई अच्छी फिल्म भी रिलीज नहीं हुई, समझ नहीं आ रहा क्या करें, कहां जाएं? आपको भी अपने आसपास अक्सर ऐसी बातें सुनने को मिलती होंगी। ऐसा सोचने या कहने का सीधा मतलब यही है कि व्यक्ति अपनी वर्तमान मनस्थिति से खुश ही है और इसी वजह से उसे बोरियत महसूस हो रही है।

समस्या की जड़ें

जब कभी जीवन में ठहराव आने लगता है तो इससे बोरियत पैदा होती है। आज की तेज रफ्तार जिंदगी ने इंसान को काफी हद तक वर्कोहॉलिक बना दिया है। अब लोग दिन-रात मशीन की तरह काम में जुटे रहते हैं। जैसे ही उनका कार्य पूरा हो जाता है, उन्हें खालीपन महसूस होने लगता है। आज लोगों के सामने मनोरंजन के विकल्पों का अंबार है, फिर भी वे बोरियत से परेशान रहते हैं। सीमित साधनों के बीच संतुष्ट और खुश रहना आसान है, लेकिन ढेर सारे विकल्प हमें केवल भ्रमित करते हैं और अंतत: इनकी वजह से बोरियत पैदा होने लगती है।

बोर होते बच्चे

आजकल बच्चों को भी बहुत जल्दी बोरियत महसूस होती है। पुराने समय में बच्चे एक ही खिलौने से महीनों तक खेलते थे, पर आज के बच्चे दो ही दिनों के बाद अपने लिए नए खिलौने की मांग करने लगते हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि अब पैरेंट्स के पास बच्चों के लिए समय नहीं है। इस समस्या से बचने के लिए वे छोटी उम्र से ही बच्चों को उनकी मनमर्जी का काम करने की छूट दे देते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों की फ्रस्ट्रेशन टॉलरेंस खत्म हो रही है। अगर माहौल उनकी पसंद के प्रतिकूल हो तो वे पांच मिनट में ही ऊबने लगते हैं। कभी-कभी बोरियत होना स्वाभाविक है, लेकिन जब यह स्थायी मनोदशा बन जाए तो चिंताजनक है। बोरियत नकारात्मक विचारों की जड़ है। इससे व्यवहार में चिड़चिड़ापन आने लगता है। कार्यक्षमता और रिश्तों पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसकी वजह से व्यक्ति को डिप्रेशन भी हो सकता है।

कैसे करें बचाव

खुद को बोरियत से बचाने के लिए जीवन में संतुलन बेहद जरूरी है। जिस तरह वर्कोहॉलिक होना नुकसानदेह है, उसी तरह ज्यादा आरामतलबी और मनोरंजन की अधिकता भी व्यक्ति को बहुत जल्दी बोर कर देती है। इन दोनों स्थितियों से बचते हुए दिनचर्या में संतुलन बनाए रखना चाहिए। जिस तरह शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए आप एक्सरसाइज करते हैं या जिम जाते हैं। ठीक उसी तरह दिमागी सेहत का भी ध्यान रखना बेहद जरूरी है। इसके लिए फुर्सत के पलों में टीवी देखने के बजाय कोई अच्छी किताब पढ़ें, अपने करीबी लोगों से बातचीत करें या बागवानी करें। कोई भी ऐसी गतिविधि, जिसमें व्यक्ति की शारीरिक या मानसिक ऊर्जा खर्च होती हो, वह उसे बोरियत से बचाती है। ऐसी समस्या से बचने के लिए सहनशीलता बहुत जरूरी है।

चाकसू में जमीन से जुड़े दस्तावेजों की जांच के लिए एसीबी टीम पहुंची

एसीबी के डीएसपी नीरज गुरनानी के नेतृत्व में पहुंची है टीम

जयपुर टाईम्स

चाकसू(निसं.) चाकसू नगरपालिका में मंगलवार को एसीबी टीम पहुंची। बताया कि जयपुर विकास प्राधिकरण के अधीक्षण अभियंता अविनाश शर्मा पर एंटी करप्शन ब्यूरो एसीबी की रेड हुई है। कार्रवाई के दौरान जांच में अधीक्षण अभियंता अविनाश शर्मा व उनके परिजनों के नाम से चाकसू में प्रॉपर्टी में निवेश की जानकारी सामने आई। वहीं इस पर ACB की टीम चाकसू पहुंची। यहां टीम ने नगर पालिका पहुंचकर जमीन से जुड़े दस्तावेजों की गहन जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार गोविंदम एनक्लेव में स्थित कुछ प्लॉटों में अविनाश शर्मा के परिजनों के नाम पर निवेश की जानकारी सामने आई है। इसी सिलसिले में एसीबी की टीम दस्तावेजों की छानबीन कर रही है। एसीबी के डीएसपी नीरज गुरनानी के नेतृत्व में टीम चाकसू नगर पालिका में दस्तावेजों की बारीकी से जांच कर रही है। अधिकारियों ने बताया कि जांच पूरी होने के बाद ही इस मामले में विस्तृत जानकारी साझा की जाएगी। इसके अलावा, जेडीए के एस ई अविनाश शर्मा के अन्य ठिकानों पर भी एसीबी की सर्चिंग जारी है।

आठवीं कक्षा का विदाई समारोह सपन्न

जयपुर टाईम्स

सुमेरपुर(निसं.)। निकटवर्ती पावटा के राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय का विदाई समारोह हर्षोल्लास से विधिवत सपन्न हुआ। विद्यालय के कर्मोन्नत होने के बाद पहली बार कक्षा आठवीं विदाई समारोह आयोजित किया गया जिसमे सर्वप्रथम छात्रों को श्रीफल और कुमकुम लगाकर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की गयी। विद्यालय स्टाफ द्वारा विदाई लेने वाले बच्चों को उपहार भेट किये गये. प्रधानाध्यापक रामरस मीणा ने विदाई लेने वाले छात्रोंओ को निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होने और परिवार, समाज एवं गुरुजनो का नाम रोशन की बात कही। कार्यक्रम का संचालन अध्यापक नरेंद्र परिहार ने किया. कार्यक्रम में अध्यापक रेवतसिंह, मनोज चौधरी, पूनम भाटी,पुजा मीणा, मौसमी मीणा सहित अभिभावक उपस्थित थे।

राजलदेसर में चंग प्रतियोगिता, धमाल पर झूमे लोग

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे में गांधी चौक नृत्य कला मण्डल की ओर से शाम चार बजे से चंग नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कमेटी के अध्यक्ष सजय महावर की अध्यक्षता में शुरू हुई चंग प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि में राजकरण बैद, हेमराज गिडिया, शंतिलाल गिडीया, अनोप कुण्डलिया, महेंद्र दुगड,चांदरतन खण्डोलिया, पूर्व पालिकाध्यक्ष गोपाल मारू, पुरोषतम मारू, खिवकरण कुण्डलिया, पवन मारू, असगर निवारीया, डाक्टर हिरालाल सोनी, कमल डागा, इन्द्रचन्द देवड़ा, नथमल सेठी, सत्यनारायण दाधीच सहित प्रवासी लोग मंचस्थ रहे। कार्यक्रम का संचालन एडवोकेट राजेंद्र कुमार, एडवोकेट विकास शर्मा ने किया। कस्बे के अनेक चंग पार्टियों ने चंग ढफ, बांसुरी की धुन और वेशभूषा में महेरी होली रसियो ने अपनी मीठी मीठी धमाल सुनाकर मनमोहक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। जिसमें कई प्रवासी लोग मौजूद रहे।

दुर्घटना मामले में 33.70 लाख रूपए का अवार्ड पारित

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर न्यायालय मोटर दुर्घटना दावाधिकरण के पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने सड़क दुर्घटना मामले में ब्याज सहित कुल 33.70 लाख रूपए का आवार्ड पारित किया। पीड़ित पक्ष की ओर से पैरवी कर रहे अधिवक्ता अनिल कुमार स्वामी राजपुरा ने बताया कि 19 दिसंबर 2017 को मृतक अर्जुनराम अपने पुत्र होशियारसिंह के साथ मोटरसाईकल पर सवार होकर रेलवे स्टेशन जा रहा था। शाम 4.15 बजे अर्जुनराम व होशियारसिंह सड़क आम पर झाड़िया जोहड़ी रोही ग्राम ढिंगी पहुंचे तो सामने से एक पिकअप चालक ने तेज गति व लापरवाही से चलाकर उनकी मोटरसाईकल के टक्कर मारकर उक्त दुर्घटना कारित की जिससे अर्जुनराम के सिर व शरीर पर गम्भीर चोटें आई, जिन्हें ईलाज के लिए चूरू लेकर गए, जहां से मणिपाल अस्पताल जयपुर रेफर किया। 7 जनवरी 2018 को इलाज के दौरान अर्जुनराम की मृत्यु हो गई। तारानगर थाने में उक्त घटना का मुकदमा दर्ज हुआ। पुलिस ने अनुसंधान कर पिकअप चालक के खिलाफ न्यायालय में चालान पेश किया। मृतक अर्जुनराम की ओर से उसकी पत्नी सिलोचना, पुत्री, पुत्रों ने न्यायालय में क्लेम याचिका पेश की। पीठासीन अधिकारी संतोष कुमार मीणा ने पत्रावली का अवलोकन कर पत्रावली पर आई साक्ष्यों के आधार पर प्रार्थी सिलोचना आदि के पक्ष में मय ब्याज कुल 33.70 लाख रूपए का अवार्ड पारित कर अप्रार्थी बीमा कम्पनी को अदा करने का आदेश प्रदान किया।

महिला क्रिकेट की झुंझुनूं में 'हैप्पी' शुरूआत

अब हैप्पी खीचड़ इंडिया की सीनियर टीम में जाने की तैयारी में

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। सेना में जाने का जुनून हो या फिर किसी भी व्यापार को ऊंचाइयों तक ले जाने की ताकत। शेखावाटी के जवान और सेठ साहूकारों ने पूरे विश्व में अपनी धाक जमाई है। झुंझुनूं की महिलाएं भी कहीं पीछे नहीं है। झुंझुनूं जिले की महिलाएं राजस्थान में ही नहीं, बल्कि देश के कोने–कोने में चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सेवाएं देते हुए मिल जाएगी। लेकिन अब खेलों में भी झुंझुनूं की धाक जमने लगी है। जिसमें बालिकाएं भी पीछे नहीं है। जी, हां हम बात कर रहे है झुंझुनूं की महिला क्रिकेटर हैप्पी खीचड़ की। जिसने झुंझुनूं की बालिकाओं को खेलों में कुछ करने की प्रेरणा देने के लिए एक तरह से हैप्पी बिगनिंग, यानि कि सुखद शुरूआत कर दी है। झुंझुनूं जिले की हैप्पी खीचड़। हैप्पी ने क्रिकेट के क्षेत्र में जो नाम कमाया है। वो किसी से छुपा नहीं है। हैप्पी, फिलहाल राजस्थान की महिला क्रिकेट टीम अंडर–19 की कप्तान है। वह तेज गेंदबाज है। हैप्पी के लगातार अच्छे परफोरमेंस के कारण उन्हें पिछले दिनों बीसीसीआई की ओर से चयनित की गई अंडर–19 महिला क्रिकेट टीम के लिए भी चुना गया। जिसने एशिया कप खेला। हैप्पी खीचड़ झुंझुनूं जिले के कुमावास गांव की है। हैप्पी ने बताया कि

उसका कोई सपना नहीं था कि वह क्रिकेट खेले। लेकिन एक बार जब स्कूल का समर कैंप लगा। तो 15 दिनों तक उसने क्रिकेट की प्रेक्टिस की। उनके कोच अजय कुमार ने हैप्पी की प्रतिभा को पहचान लिया और उन्हें गेंदबाजी की प्रेक्टिस करवाने लगे। धीरे धीरे हैप्पी को भी क्रिकेट में इंटरेस्ट आ गया और आज वह राजस्थान रणजी महिला क्रिकेट अंडर–19 की कप्तान है। हैप्पी बताती है कि वे टीवी में एमएस धोनी को देखना पसंद करती है। जबकि उनके रियल लाइफ हीरो उनके कोच व जीवेम क्रिकेट एकेडमी के चीफ क्रिकेट कोच अजय कुमार है। उन्होंने बताया कि धोनी का माइंड सेट, पर्सनलिटी ना केवल क्रिकेटर बल्कि रियल लाइफ में भी खूब मदद करती है।

अभी एक साल अंडर–19 का और, फिर भी नजर सीनियर टीम पर

हैप्पी खीचड़ ने बताया कि वह फिलहाल सीनियर महिला क्रिकेट टीम का हिस्सा बनने के लिए दिन–रात प्रेक्टिस कर रही है। इस साल का क्रिकेट सीजन सितंबर से शुरू होगा। उससे पहले वह लगातार हर दिन प्रेक्टिस कर रही है। हैप्पी ने बताया कि अभी अंडर–19 का भी उसका एक साल शेष है। ऐसे में फिर से राजस्थान के लिए रणजी मैच खेलने के लिए और बीसीसीआई की अंडर–19 महिला क्रिकेट टीम के लिए भी लगातार प्रयास जारी है। हैप्पी ने बताया कि वे चाहती है कि लड़कियों को भी हर क्षेत्र में आगे बढने का मौका मिलना चाहिए। उन्हें परिवार का सपोर्ट मिला। अन्य लड़कियों को भी यदि खेल या फिर अन्य क्षेत्रों में कुछ करने की इच्छा है। तो वो करें और परिवार सपोर्ट करें। मेहनत करने वालों को सफलता मिलती ही है। हैप्पी खीचड़ झुंझुनूं जिले के नवलगढ़ उपखंड के कुमावास गांव की रहने वाली है। उसकी स्कूलिंग भी चल रही है। पढाई के साथ–साथ हैप्पी क्रिकेट को भी अपना समय देती है। परिवार के लोगों का भी सपोर्ट मिल रहा है। अंडर–19 भारतीय महिला क्रिकेट टीम और राजस्थान रणजी टीम की कप्तान तक का सफर हैप्पी ने पूरा कर लिया है। अब उसका लक्ष्य भारत के लिए खेलकर विदेशी टीमों की खिलाड़ियों को क्लीन बोल्ड करना है। हैप्पी खीचड़, डूंडलोद पब्लिक स्कूल की एलुमनाई स्टूडेंट रही है।

गृह रक्षा विभाग एथलेटिक्स मीट 2025: जयपुर संभाग ने ओवरऑल चैंपियनशिप जीती

जयपुर टाईम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान गृह रक्षा विभाग द्वारा खेलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्यस्तरीय एथलेटिक्स मीट 2025 का आयोजन केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान, फतेहपुरा, जयपुर में 6 से 7 मार्च तक किया गया। इस प्रतियोगिता में राज्यभर से संभागीय स्तर पर चयनित प्रतिभागियों ने भाग लिया। गृह रक्षा जयपुर संभाग की टीम, टीम मैनेजर चंद्रपाल सिंह (कंपनी कमांडर) व टीम कप्तान सत्यनारायण सिंह (प्लाटून कमांडर) के नेतृत्व में 20 सदस्यों के दल के साथ शामिल हुई। टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 22 पदक–16 स्वर्ण, 3 रजत और 3 कांस्य–जीते और ओवरऑल चैंपियनशिप का खिताब अपने नाम किया। जयपुर संभाग की इस उपलब्धि पर 11 मार्च 2025 को गृह रक्षा प्रशिक्षण केंद्र, संसारचंद्र रोड, जयपुर में वरिष्ठ कमांडेंट नवनीत जोशी के

नेतृत्व में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर टीम के सभी सदस्यों को टी पार्टी और सामूहिक फोटो सेशन के माध्यम से सम्मानित किया गया। इस आयोजन में टीम के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना करते हुए उनके उत्साहवर्धन पर विशेष जोर दिया गया। राज्यस्तरीय एथलेटिक्स मीट में जयपुर संभाग की यह जीत गृह रक्षा विभाग के खेलों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत का परिणाम मानी जा रही है।

आर आर कॉलेज के छात्रों ने किया सरसों तेल निर्माता कंपनी निर्मल इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड का औद्योगिक दौरा

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। छात्रों को वहां कंपनी और उसके संचालन के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी गई। जिसके औद्योगिक इकाई का भ्रमण कराया गया वहाँ उन्हें कच्चे माल से लेकर तेल निर्माण की समस्त प्रक्रिया की जानकारी दी गयी एवं गुणवत्ता की जांच, पैकेजिंग और वितरण के बारे में समझाया गया। छात्र प्रक्रिया के प्रत्येक चरण को देखने और समझने के दौरान उत्साहित रहे। ये व्यावहारिक गतिविधियाँ औद्योगिक प्रक्रियाओं के बारे में छात्रों की समझ को व्यापक बनाने और व्यावहारिक सीखने के अवसरों के लिए गहरी सराहना को

बढ़ावा देने में सहायक रहा। निर्मल इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड में स्कूल विजिट करने के लिए आप भी 8854929665 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

गींदड़ प्रतियोगिता का शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर के विधानसभा प्रत्याशी व भाजपा नेता राकेश जांगिड़ ने तारानगर कस्बे में करणी सेवा समिति की ओर से करणावत चौक पर हर साल की भाँति आयोजित गिंदड़ प्रतियोगिता का रीबन काटकर व चंग बजाकर उद्घाटन किया। जांगिड़ ने कहा कि हर साल की भांति इस वर्ष भी राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को संजोए जिंदर प्रतियोगिता के आयोजन के लिए करणी सेवा समिति का आभार व्यक्त करता हूं। जांगिड़ ने शहरवासियों को होली की शुभकामनाएं दी। जांगिड़ ने कहा आइये हम सब मिलकर हमारी विलुप्त होती जा रही संस्कृति को जिंदा रखने के लिए इन कार्यक्रमों के साक्षी बने। इस मोके पर प्रभुसिँह राठौड़, किशनसिंह, शुभकरण, जीवणसिँह किशन, हेमंत, रामस्वरूप प्रजापत, विजय सोनी सहित क्षेत्र के लोग मौजूद रहे।

एआईसीसी पदाधिकारियों का किया भव्य स्वागत

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। एआईसीसी राष्ट्रीय सचिव राजस्थान सहप्रभारी चिरंजीव राव, पीसीसी उपाध्यक्ष नसीम अख्तर, पीसीसी सचिव प्रद्युम्न सिंह, पीसीसी सचिव रामजीलाल व जिलाध्यक्ष इंद्राज खीचड़ का मंगलवार को चूरू सीमा पर रतननगर तिराहे पर प्रदेश सचिव मुस्ताक के नेतृत्व में कांग्रेसजनों ने भव्य स्वागत किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने मार्ल्यापण कर व साफा पहनाकर उनका भव्य स्वागत किया। इस दौरान पार्षद अंजनी शर्मा, यूथ कांग्रेस प्रदेश सचिव महेश ढूकिया, युवा नेता गुलजार खान, छात्र नेता फरमान खान, मोहम्मद अली, अब्दुल अजीज, संजय सहारण, आसिफ मुन्यान, लतिफ खान ने भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा भेंट कर राव का अभिनंदन किया। इस अवसर पर राजेश कुमार, पवन ढूकिया, जगदीश लोहार, अजीज अली, असलम सोलंकी, रासीद मोयल, तौफीक खान, इमरान खान, सोनू, इरफान, नदीम, आसिफ, मोनू, आसिफ खानजादा, सोयब भलीम, समीर खान, सोयल चायल, शाहिद खान, फरियाद, जाहिद खान, रुस्तम खान, अल्ताफ खान, जहीद खान, सहबाज, जावेद तंवर सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यालय राजकीय उच्च माध्यमिक, ढीण्ढा

पं.स. - कि. रेनवाल, जयपुर (08121010908)

क्रमांक-रा.उ.मा.वि./ढीण्ढा/2047 दि. 10.3.2025

नीलामी सूचना

श्रीमान मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कि. रेनवाल के आदेशानुसार स्थानीय विद्यालय में दि. 20.3.2025 को अनुपयोगी /नाकारा सामान की नीलामी शाला समय में की जावेगी ।

प्रधानाचार्य
राउमावि ढीण्ढा कि. रेनवाल,
जयपुर

सार्वजनिक सूचना

हम, मेसर्स इफको नैनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड (इफको एनवीपीएल), विशेष, तरल उर्वरकों और बायोस्टिमुलेंट्स के अग्रणी निर्माता और विपणक, आम जनता को एक महत्वपूर्ण अपडेट से अवगत कराना चाहते हैं। हमारे मौजूदा उत्पाद लाइन के अलावा, जिसमें न्यूट्रैक्स (एक सूक्ष्म पोषक तत्व मिश्रण), मिराक और सर्फाफोर (बायोस्टिमुलेंट्स) शामिल हैं, हमें यह घोषणा करते हुए भी गर्व हो रहा है कि हम 100% जल घुलनशील उर्वरकों का निर्माण और विपणन करते हैं,
जैसे कि एनपीके 20:20:20, एनपीके 19:19:19, एनपीके 20:10:10, एनपीके 15:15:30 और एनपीके 13:40:13 विभिन्न पैकिंग
(1 किलोग्राम, 5 किलोग्राम, 10 किलोग्राम और 25 किलोग्राम) में कृषि मंत्रालय के दिनांक 24.10.2015 के आदेश के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर।

इफको नैनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड
सर्वे नं0 719/1बी, केम्बनूर रोड,
थोन्डामुथुर, कोयम्बटूर-641109
जीएसटी 33AAHCN6447LIZ3

कार्यालय नगरपालिका मण्डल राजलदेसर जिला चूरू (राज.)

Email-raj.churu.bika@gmail.com Phone number 01567-294504
क्रमांक- न.पा.रा./2024-25/ दिनांक-

आपत्ति विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान नगरीय क्षेत्र (कृषि भूमि को गैर कृषि प्रयोजन उपयोग के लिए उपयोग की अनुज्ञा और आवंटन) नियम 2012 के तहत कृषि भूमि रूपान्तरण उपरान्त कृषि भूमि के पट्टे के तहत स्वामित्व पट्टे आवंटन व नीचे वर्णित भूमि मे अपने अधिकार राजस्थान नगरपालिका अधिनियम, 2009 की धारा 69-क के तहत आवासीय प्रयोजन हेतु पत्रावलिया प्राप्त हुई है। उक्त वर्णित पत्रावलियों के पट्टे आवंटन के सम्बन्ध में किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति मय दस्तावेजो के अन्दर मियाद 7 दिवस में इस कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद गुजर मियाद प्रस्ततु आपत्तियो पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

क्र.सं.	नाम आवेदनकर्ता	पता	क्षेत्रफल	प्रयोजन
01	श्री रामकुमार पुत्र श्री रामचन्द्र माली	वार्ड नं. 18 राजलदेसर	130.69 वर्ग मीटर	69-क

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका राजलदेसर

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सा.नि.वि. नगर खण्ड - तृतीय, जयपुर

कमांक- 6977 दिनांक- 07.03.2025

अल्पकालीन निविदा सूचना संख्या 88 / 2024-25

1	निविदा का कार्य	निर्माण एवं मरम्मत का कार्य ।
2	कार्यों की संख्या	32 works
3	निविदा की कुल लागत (रूपयों में)	45.53 Lac
4	धरोहर राशि	91060.00/-
5	निविदा प्रपत्र बिक्री की अन्तिम तारीख	17.3.2025
6	निविदा प्रपत्र जमा कराने की तारीख	18.3.2025
7	निविदा खोलने की तारीख	18.3.2025

NIT NO.	UBN NO.	NIT NO.	UBN NO.
1	PWD2425WSOB16659	2	PWD2425WSOB16660
3	PWD2425WSOB16661	4	PWD2425WSOB16662
5	PWD2425WSOB16663	6	PWD2425WSOB16664
7	PWD2425WSOB16665	8	PWD2425WSOB16666
9	PWD2425WSOB16667	10	PWD2425WSOB16668
11	PWD2425WSOB16669	12	PWD2425WSOB16670
13	PWD2425WSOB16671	14	PWD2425WSOB16672
15	PWD2425WSOB16673	16	PWD2425WSOB16674
17	PWD2425WSOB16675	18	PWD2425WSOB16676
19	PWD2425WSOB16677	20	PWD2425WSOB16678
21	PWD2425WSOB16679	22	PWD2425WSOB16680
23	PWD2425WSOB16681	24	PWD2425WSOB16682
25	PWD2425WSOB16683	26	PWD2425WSOB16684
27	PWD2425WSOB16685	28	PWD2425WSOB16686
29	PWD2425WSOB16687	30	PWD2425WSOB16688
31	PWD2425WSOB16689	32	PWD2425WSOB16690

(पवन कुमार कुलश्रेष्ठ)
अधिशाषी अभियन्ता
सानिवि नगर खण्ड तृतीय जयपुर
DIPR/C/3642/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, नगर खण्ड 3, जयपुर

क्रमांक- 6975 दिनांक 07.03.2025

अल्पकालीन ई-निविदा सूचना संख्या 86/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यो के लिए पीडब्लयूएफ एण्ड ए. आर पार्ट ।। अपेण्डिक्स 16 दिनांक 1.07.1999 से लागू एवं समय समय पर पंजीयन नियमो सम्बन्धी वित्त विभाग द्वारा जारी आदि दिनांक संशोधित परिपत्रो के अनुरूप इस विभाग मे उपयुक्त श्रेणी मे पंजीकृत ठेकेदारो से मोहरबन्द निविदाये आमंत्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाइट www.dipronline.org http://eproc.rajasthan.gov.in/ & www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

निविदा आवेदन डाउनलोड करने की तारीख	10.03.2025 (सोमवार) प्रातः 9.30 बजे से 17.03.2025 (सोमवार) तक सांय 6.00 बजे तक
निविदा जमा कराने की तारीख	10.03.2025 (सोमवार) प्रातः 9.30 बजे से 17.03.2025 (सोमवार) तक सांय 6.00 बजे तक
निविदा खोलने की तारीख	18.03.2025 (मंगलवार) को अपरान्ह 03.00 बजे से

NIT S. No	UBN No.	NIT S. No	UBN No.
1	PWD2425WSOB16650	2	PWD2425WSOB16651
3	PWD2425WSOB16652	4	PWD2425WSOB16653
7	PWD2425WSOB16654	6	PWD2425WSOB16655
9	PWD2425WSOB16656	8	PWD2425WSOB16657
1	PWD2425WSOB16658		

(पवन कुमार कुलश्रेष्ठ)
अधिशाषी अभियन्ता
सानिवि नगर खण्ड तृतीयजयपुर
DIPR/C/3639/2025

Zila Parishad (R.D.C.), Churu

Phone No.: 01562-250594, FAX: 01562-255983, E-mail: pd-chu-rj@nic.in
Number: 8725 Date: 04/03/2025

-: Notice Inviting Bid :-

Bids for Computer Operator are invited from interested bidders upto 18th March 2025 12:00 P.M. Other Particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http:// eproc. rajasthan.gov.in, http:// sppp. raj.nic.in) of the state and Zila Parishad's notice board. The approximate value of the procurement is Rs. 2.60 Lakh.
UBN: ZCR2425SSOB01803

Chief Executive Officer
Zila Parishad (R.D.C.), Churu
DIPR/C/3411/2025

कार्यालय नगर पालिका मण्डल, फुलेरा जिला जयपुर

क्रमांक - न. पा. फु/2024-25/3600 दिनांक- 11/03/2025

आपत्ति सूचना

एतद् द्वारा हितबद्ध व्यक्ति विशेष, आम खास को सूचित किया जाता है कि निम्न व्यक्तियों ने फोति नामान्तरण हेतु इस कार्यालय में आवेदन किया है।

क्र.स.	प्रार्थी का नाम	स्थान	क्षेत्रफल वर्गगज	प्रयोजनार्थ
1.	श्री कैलाश चन्द सोनी, श्री जगदीश सोनी, श्री अशोक कुमार सोनी पुत्रान श्री हीरालाल व श्रीमती पुष्पा कन्हैया लाल सोनी पुत्री श्री हीरालाल	आवासीय भूखण्ड न. 02 वाके गोरधनपुरा के पास फुलेरा	200.00	फोति नामान्तरण

किसी भी व्यक्ति को निम्नाकिंत ईजाजत बाबत आपत्ति हो तो आपत्ति आमंत्रण सूचना जारी होने की तिथि से 7 दिवस के अन्दर मयाद विधिमान्य दस्तावेजों सहित लिखित में आपत्ति कार्य दिवस के दौरान कार्यालय समय में अधोहस्ताक्षकर्त्ता को प्रस्तुत करावे। बाद मयाद गुजरने आपत्ति मान्य नही होगी ।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका मण्डल, फोरारा

झुंझुनूं में होली पर ड्रोन से होगी निगरानी, 7 थानों की पुलिस ने किया फ्लैग मार्च

त्यौंहार पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। होली के त्योहार को शांतिपूर्ण और सुरक्षित बनाने के लिए झुंझुनूं पुलिस प्रशासन ने कमर कस ली है। शहर में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से सोमवार को सात थानों की पुलिस टीमों ने फ्लैग मार्च किया। इस दौरान सुरक्षा इंतजामों की समीक्षा की गई और आमजन में विश्वास जगाने के लिए पुलिस की सक्रियता का प्रदर्शन किया गया। होली पर दो दिन तक ड्रोन से निगरानी की जाएगी। फ्लैग मार्च की अगुवाई एएसपी देवेंद्र सिंह राजावत ने की। मार्च शहर के मुख्य मार्गों और संवेदनशील इलाकों से होकर गुजरा। गांधी चौक से शुरू हुआ यह मार्च छावनी बाजार, कपड़ा बाजार, शहीदान चौक, नेहरू मार्केट, फूटला बाजार, खोरा मोहल्ला, सुभाष मार्ग, मंडावा मोड़, बस डिपो, रोड नंबर एक, शहीद जेपी जानू स्कूल के सामने और रोड नंबर दो समेत अन्य इलाकों में निकाला गया। इस फ्लैग मार्च में डीएसपी सिटी वीरेंद्र शर्मा, कोतवाल नारायणसिंह कविया, सदर थानाधिकारी ओमप्रकाश, महिला थानाधिकारी अभिलाषा, धनूरी थानाधिकारी रामनारायण चोयल, मंड्रेला थानाधिकारी सुरेश रोलन समेत विभिन्न थानों, आरएसी (राजस्थान आर्म्ड कांस्टेबुलरी) और क्यूआरटी (क्विक रिस्पांस टीम) के कुल 70 जवान शामिल हुए।

अशांति फैलाने वालों पर होगी सख्त कार्रवाई

एएसपी देवेंद्र सिंह राजावत ने कहा- यदि कोई व्यक्ति अशांति फैलाने की कोशिश करता है या किसी प्रकार की अवांछित गतिविधि में संलिप्त पाया जाता है, तो उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। होली का पर्व भाईचारे और खुशियों का होता है, इसलिए सभी को मिल-जुलकर इसे मनाने की अपील की गई है।

होली पर 2 दिन तक ड्रोन से निगरानी

होली के दौरान किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए पुलिस प्रशासन विशेष सतर्कता बरत रहा है। शहर के संवेदनशील और भीड़भाड़ वाले इलाकों में ड्रोन कैमरों से निगरानी की जाएगी। कोतवाल नारायणसिंह कविया ने बताया कि होली पर सुरक्षा की दृष्टि से दो दिन तक ड्रोन की मदद से निगरानी रखी जाएगी। इसके अलावा, शहर के मुख्य स्थानों पर पुलिस बल तैनात रहेगा ताकि किसी भी प्रकार की असामाजिक गतिविधियों को रोका जा सके। होली के दौरान झुंझुनूं शहर के कुछ इलाकों को संवेदनशील माना गया है। ऐसे स्थानों पर अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की जा रही है। पुलिस अधिकारी लगातार गश्त करेंगे और संदिग्ध गतिविधियों पर पैनी नजर रखी जाएगी। किसी भी प्रकार की अफवाह फैलाने या माहौल बिगाड़ने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

शहरवासियों से अपील

पुलिस प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि वे होली का पर्व शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण माहौल में मनाएं। कानून-व्यवस्था भंग करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, शराब पीकर गाड़ी चलाने और हुड़दंग मचाने वालों पर विशेष नजर रखी जाएगी। ड्रोन से निगरानी के अलावा सीसीटीवी कैमरों की भी मदद ली जाएगी ताकि किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटा जा सके। होली के अवसर पर झुंझुनूं शहर में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया जाएगा। मुख्य चौक-चौराहों, बाजारों और संवेदनशील क्षेत्रों में पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है। इसके अलावा, रूट मार्च और गश्त बढ़ा दी गई है ताकि किसी भी स्थिति में तुरंत कार्रवाई की जा सके।

टोडरमल पीजी महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा को लेकर संगोष्ठी

जयपुर टाइम्स

उदयपुरवाटी(निस)। कस्बे के घुमचक्कर के निकट टोडरमल पीजी महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत सड़क सुरक्षा को लेकर महाविद्यालय के सचिव पवन मिश्रा ने बताया कि आए दिन बढ़ रही सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए सड़क सुरक्षा के नियम व उपाय अत्यंत जरूरी है, सुरक्षा ही जीवन है। राष्ट्रीय सेवा योजना प्रभारी राजेंद्र ढेनवाल ने सभी छात्र-छात्राओं को यातायात के नियम व सड़क सुरक्षा के बारे में जानकारी दीआप गई और जीवन में हमेशा सड़क सुरक्षा का ध्यान रखने की शपथ दिलाई। इस दौरान महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा संगोष्ठी में व्याख्याता सज्जन कुमार शर्मा, नरेश कुमावत, सिकंदर मील, कासिम कुरैशी, सरवन चौधरी, विनोद बरवड़, राजेश सैनी, प्रवीण कुमार शर्मा सहित अन्य स्टाफ उपस्थित रहे।

फागोत्सव में कलाकारों ने बिखेरी स्वरलहरियां

जयपुर टाइम्स

जयपुर/मण्डावा(निसं.)। बनीपार्क स्थित खण्डेला महल में मंगलवार को राजस्थान ब्राह्मण महासभा के जिलाध्यक्ष अरविन्द पारीक की अगुवाई में उत्साह के साथ फागोत्सव मनाया। कार्यक्रम में भगवान की फूलों से सजी झांकी का विशेष श्रृंगार किया गया। फाल्गुनी धमलों की मधुर स्वर लहरियों के बीच लोगों ने एक - दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दी। पुरूषों के साथ महिलाओं ने भी होली और फाग के पारंपरिक गीतों पर नृत्य किया। इस दौरान फूलों की होली का आनंद भी लिया गया। गौरीशंकर गहलोत मण्डावा की मण्डली ने अपनी प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। कार्यक्रम में मुरारी वर्मा, माणिक सोनी, जगदीश, विनोद, गोविन्दज, सरदार इकबाल सिंह, संदीप गोयल, ललित, राजू गाडेदिया, बृज मोहन नांगलिया कोलकाता से परिवार सहित आने से माहौल आनन्दमय मस्ती में सभी झूम उठे।

छात्राओं को साईकिल मिली तो खुशी से खिले चेहरे

जयपुर टाइम्स

मंडावा(निस)। राज्य सरकार की बालिका शिक्षा को बढ़ाने को लेकर चलाई गई साईकिल वितरण योजना को लेकर डेडराज राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में साईकिल वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्था के उप प्राचार्य संगीता नायक, वीरेंद्र कुमार ने बताया कि सत्र 2024-25 में कक्षा 9 की अध्यनरत छात्राओ को सरकार की ओर से निशुल्क साइकल वितरित की गई। इस अवसर पर रविकांत मिश्रा, नरोत्तम लाल, राजपाल सिंह, रामकरण सिंह, इरफान खान, दिनेश शर्मा, विरेन्द्र कुमार, रणवीर सिंह सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

हारे का सहारा महिला मंडल ने खेली श्याम के साथ फूलों की होली

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। मंडावा कस्बे में शर्मा ग्राउंड वार्ड 21 भरत जीनगर निवास पर हारे का सहारा महिला मंडल के तत्वाधान में बाबा श्याम का मासिक समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मंडल मुखिया उमा खेमानी के नेतृत्व में महिला संगीत का आयोजन कर बाबा श्याम कीर्तन कर अबीर और फूलों की होली खेली। इस अवसर भरत जीनगर, कृष्णा सहित परिवार जनों ओर श्रद्धालुओं ने बाबा की जोत कर धोक लगाई। महिला मंडल की ओर से बाबा श्याम का दरबार सजाकर भजनों की प्रस्तुतियां दी गई। इस अवसर पर कुसुम निर्वाण, ममता चौहान, सरोज सिंघानिया, संगीता टेलर, संजू, मंजू, कृष्णा, गीता देवी, चौथी देवी, पवन कुमार जीनगर, कृष्णा देवी, सत्यनारायण शर्मा, धनजी सैनी, राजेश मिश्रा, सुशील चौहान, प्रकाश निर्वाण, पवन कुमार शर्मा, कृष्णा देवी, शालग राम गोमती देवी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

झीणे घुंघट में गौरी को मुखड़ो पलको मारे रे, फागोत्सव में झुमे होली के रसिया

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। नगर पालिका प्रशासन की ओर से नगरपालिका चौक पर फागोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में पूर्व पालिकाध्यक्ष सज्जनलाल मिश्रा, पालिका अध्यक्ष नरेश सोनी, भाजपा जिला अध्यक्ष बनवारी लाल सैनी, जिला उपाध्यक्ष प्यारेलाल ढूकिया, संदीप शर्मा, ईओ प्रमोद जांगिड़, थानाधिकारी राम निवास, जिला शिक्षा अधिकारी कमलेश तेतरवाल, पालिका उपाध्यक्ष नवाब खत्री मंचस्थ अतिथि रहे। अतिथियो ने चंग पर थाप देकर फागोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में राजू तिवाड़ी एंड मस्ताना चौक फतेहपुर व श्री बालाजी ढप मंडली लक्ष्मणगढ़ कलाकारों ने बांसुरी की मधुर स्वर लहरी व चंग की जुगलबंदी पर नृत्य की लय के साथ फाल्गुनी धमालें झीणे घुंघट में गौरी को मुखड़ो पळको मारे रे, नाचे गौरी बाजे रे रंगीलों चंग, पनघट को रे श्याम रसियों सहित अन्य धमालो की एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां देकर समां बांधा। होली के रसियों के पैर थिरके तो वहां मौजूद हर कोई उनके साथ नाचने लगा। कार्यक्रम में हरिराम चेजारा, संदीप परिहार, राजेश रणजीरोत, छोटेलाल सैनी, आनंद सोलंकी, बाबूलाल सैनी, मधुसूदन खेमानी, भोला सिंह यदुवंशी, किशोर सिंह, पीतांबर मिश्रा, बालकिशन भाटीवाड़ा, संजय रामगढ़िया, सत्यनारायण बावलिया, सुरेश पालड़ी वाला, किशोर थलिया, पार्षद शशीकांत सैनी, सुनील जोशी सहित काफी संख्या में विदेशी सैलानी भी मौजूद रहे।

स्कूल बस का हैंड ब्रेक फेल, 200 मीटर पीछे चली

एक्सयूवी समेत कई गाड़ियों को टक्कर मारी

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। स्कूल बस की टक्कर से एक्सयूवी गाड़ी का अगला हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। झुंझुनूं शहर के हाउसिंग बोर्ड इलाके में मंगलवार को एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। एक निजी स्कूल बस ने एक्सयूवी को टक्कर मार दी। घटना के बाद लोगों ने हंगामा किया। जानकारी के अनुसार बस का हैंड ब्रेक फेल हो गया था, जिससे वह करीब 200 मीटर तक पीछे चली गई और रास्ते में खड़ी 2-3 अन्य गाड़ियों को भी टक्कर मार दी। घटना के बाद मौके पर बड़ी संख्या में भीड़ इकट्ठा हो गई। एक्सयूवी मालिक डॉ. कैलाश रहाड़ के अनुसार उनका ड्राइवर गाड़ी लेकर उनके गांव जा रहा था। हाउसिंग बोर्ड क्षेत्र में जब वह पहुंचा तो वहीं खड़ी एक निजी स्कूल की बस अचानक पीछे की तरफ आ गई और उनकी गाड़ी से

टकरा गई। बस के पीछे हटने का कारण उसका हैंड ब्रेक फेल होना बताया जा रहा है। इस दौरान बस ने आसपास खड़ी अन्य गाड़ियों को भी नुकसान पहुंचा दिया। घटना की सूचना पर कोतवाली थाने के हेड कॉन्स्टेबल धर्मपाल टीम के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने स्थिति को संभाला और दोनों वाहनों को कोतवाली थाने भिजवाया। हेड कॉन्स्टेबल धर्मपाल ने बताया कि फिलहाल मामले की जांच की जा रही है। जैसे ही रिपोर्ट दर्ज होगी, कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

राजेंद्र सिंह शेखावत की पदोन्नति पर समारोह आयोजित

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। महिला अधिकारिता विभाग झुंझुनू में संरक्षण अधिकारी राजेंद्र सिंह शेखावत के पदोन्नति होकर सहायक निदेशक बनकर चूरू पदस्थापन होने पर उनका विदाई समारोह मंगलवार को विभागीय जिला कार्यालय में आयोजित हुआ। महिला अधिकारिता विभाग के उप निदेशक विप्लव न्यौला ने उनके सेवाकाल की सराहना करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक डॉ पवन पूनिया, महिला एवं बाल विकास विभाग के उपनिदेशक विजेंद्र सिंह राठौड़, जिला जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु सिंह, अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी नेहा पूनिया ने भी अपने संबोधन में राजेंद्र सिंह के कार्यकाल की उपलब्धियां के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी। इस दौरान सीडीपीओ मंजुलता मील, मनोज कुमार स्वामी, गोविंद सिंह, शारदा, रेखा समेत अनेक विभागीय कार्मिकों अधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त किए।

सुभाष चौक पर चंग की थाप पर थिरके रसिये

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। श्री श्याम ढ़प मंडली सुभाष चौक की ओर से सारड़ों के नोहरे में आयोजित चार दिवसीय फागोत्सव का शुभारंभ सोमवार को हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीप्रकाश राजोतिया रहे। वहीं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि महेंद्र चौबे, कृष्ण कुमार महर्षि व विनोद कुमार हारित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने गणेश वंदना कर व चंग बजाकर किया। इस अवसर पर आगंतुक अतिथियों का मार्ल्यापण कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में रामावतार लोहिया, महेश हारित, राजेंद्र ठठेरा, राजेंद्र चौबे, हेमंत हारित, हरी मोहता, अवधेश हारित, संदीप पाटिल, इंद्र पुरोहित, सोहन शर्मा, डूंगरमल, जगदीश प्रसाद, निरंजन सेन आदि ने एक से बढ़कर एक धमालों की प्रस्तुतियां देकर उपस्थित जन को झूमने पर मजबूर कर दिया। वहीं गायक कलाकार सोनू हारित, रूपेश टिमटिमियां, पंकज ओझा व सौरभ ओझा ने भी अपनी अद्भुत प्रस्तुतियां से कार्यक्रम में समां बांध दिया। इस अवसर पर दीनदयाल सैनी, सुशील लाटा, राधेश्याम जांगिड़, सचिन जांगिड़, शंभू दयाल शर्मा, महेश मिश्रा, योगेश गौड़ सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग उपस्थित रहे।

बागड़ी हाउस में फागोत्सव में झूम उठे शहरवासी

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। जिला प्रशासन से सेवा, परोपकार, शिक्षा, चिकित्सा सहित जनहित व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए पुरस्कृत संतरा देवी आनंद कुमार बागड़ी मेमोरियल ट्रस्ट की ओर से स्थानीय बागड़ी हाउस में आयोजित फागोत्सव कार्यक्रम में चंग की थाप, बांसुरी की मधुर आवाज़, मेहरी के पायल की झंकार के साथ फागणिया गीत व धमाल का कार्यक्रम देर रात तक जमा रहा। शेखावाटी के लोक कलाकार सुभाष जांगिड़ की गणेश वंदना के साथ हुए कार्यक्रम में शेखावाटी के प्रसिद्ध कलाकार चिरंजीलाल चुनवाल, मनोज पाण्डेय, सुभाष जांगिड़, ओमप्रकाश शर्मा बऊ, मनीष सैन, प्रकाश गौड़, हरिश फतेहपुर ने जहां एक से बढ़कर एक फागणिया गीतों की प्रस्तुति दी वहीं ढप नृत्य में शेखावाटी में अपनी कला की विशिष्ट छाप छोड़ने वाली व ढप नृत्य में विशेष महारथ हासिल कर चुकी शिव ढप मंडल सेठों की कोठी के कलाकारों की ओर से शानदार ढप नृत्य प्रस्तुत कर फागणिया धमाल को सुनकर दर्शक भी थिरकने लगे जबकि बगड़िया स्कूल के बच्चों की शानदार प्रस्तुति पर उपस्थित लोग झूमते नजर आएं।लक्ष्मणगढ़ के इतिहास के एतिहासिक अतुलनीय फागोत्सव में जहां महिलाओं ने ढप पर थाप मारी वहीं फागणिया धमाल व गीत गाकर जमकर डांस किया। कार्यक्रम में फागणिया गीत और धमाल पर कलाकारों के साथ फागण के रसिया थिरकते नजर आएं वही करीब डेढ सौ महिलाओं व पांच सौ अधिक पुरुषों कलाकारों का होंसला अफजाई करते दिखे। आयोजित कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज बाटड़, उपजिला प्रमुख ताराचंद धायल, नगरपालिका अध्यक्ष मुस्तफा कुरैशी,शहर मंडल अध्यक्ष ललित पंवार, मुख्य ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के चिकित्सक डॉ राजेश शर्मा डॉ अभिषेक पारीक, राजस्थान सरकार के पूर्व महाधिवक्ता व बार कौंसिल आफ राजस्थान के पूर्व चैयरमेन एडवोकेट चिरंजीलाल सैनी,सरपंच छाजूराम रहनावा, महेश ढेवा सिंगोदडा, राजेंद्र गढ़वाल लालासी मुकेश मानासी, शहर चौंकी इंचार्ज रामदेव मावलिया, श्री भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ एनएस नाथावत, डा.आनंद कुमार, फिल्म अभिनेत्री अमिषा पटेल के फाइनेंस हैड जितेंद्र पोरवाल, दयाशंकर पोरवाल,अग्रवाल समाज के अध्यक्ष विमल चिराणिया,पूर्व शहर भाजपा अध्यक्ष जयप्रकाश सरावगी, पूर्व पंचायत समिति सदस्य ताराचंद, समाजसेवी महावीर श्रीडूंगरगढ़, बनवारी इंदौरिया,सीएस वैजनाथ मिटावा, जयपुर, रामगोपाल राकसिया,आनंद टांक , सुनील गहलोत सीकर, गोपीराम, मुरलीधर चिड़ावा, सेवानिवृत्त पुलिस निरीक्षक भवानी सिंह बारैठ, राजलदेसर नगरपालिका के पूर्व चेयरमैन ओमप्रकाश कटारिया मंचस्थ अतिथि रहें। अतिथियों ने स्कूल के बच्चों को नकद पारितोषिक व कलाकारों को प्रतिक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया जबकि ट्रस्ट के संरक्षक अनिल बागड़ी व चैयरमेन महेश बागड़ी के नेतृत्व में प्रेम प्रकाश बागड़ी, इन्द्रपाल धुपिया, राजकुमार बागड़ी हर्ष बागड़ी, उज्जवल बागड़ी, मोहित बागड़ी, मयंक कम्मा, अनिल कम्मा,गोपाल कटारिया, महात्मा ज्योतिबा फुले छात्रावास निर्माण समिति के अध्यक्ष रामावतार सिंगोदिया संयोजक सज्जन कुमार बबेरवाल फाइनेंस कंसल्टेंट झाबरमल सिंगोदिया, रामस्वरूप पीटीआई, जगदीश भभैवा, प्रवक्ता मनोज राकसिया, सत्यनारायण भभैवा, एडवोकेट सत्यनारायण चुनवाल, मुकेश कारोडिया, सीए राकेश कटारिया, अनिल मैनेजर, अनिल राकसिया, भंवरलाल सांखला, अमित सनवाली, भागीरथ चुनवाल, कैलाश टांक, बुद्धिप्रकाश अलखपुरा, श्रीचंद बगड़ी, मनोज धाभाईयों की ढाणी, महावीर, नथमल, मनीष मावलियो की ढाणी, विनोद गौड़, दीपक कटारिया, भागीरथ चुनवाल , बलदेव चुनवाल , सुशील चुनवाल, दिलीप चुनवाल, ताराचंद सांखला ,संजय सतरावला, सुभाष भाटी, गोविंद गौड़, विकास सिंगोदिया, महावीर जाजम बजरंग सिंगोदडा, मुकेश टांक ने अतिथियों को साफा पहनाकर सम्मानित किया।इस अवसर पर ट्रस्ट के मंत्री पत्रकार बाबूलाल सैनी ने अगले वर्ष 2026 में शेखावाटी स्तरीय लक्ष्मणगढ़ फाग महोत्सव प्रतियोगिता आयोजित ट्रस्ट की ओर से कराने का ऐलान किया जिसमें शेखावाटी अंचल की मशहूर ढप नृत्य टीमों को आमंत्रित किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन महेंद्र चुनवाल ने किया जबकि सज्जन बबेरवाल व मनोज राकसिया ने आभार जताया।इस अवसर पर लक्ष्मणगढ़ नागरिक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अशोक चुडीवाला, व्यवसायी संदीप चिराणिया, गोविंद जाजोदिया, राम जाजोदिया,अंकुर गोयनका, अंकित मंगलूणेवाला, विनय सरावगी, कमल चुडीवाला, सुबोध शर्मा, विश्वनाथ सूंठवाल, राकेश मिश्रा, कमल सुरोलिया, प्रवीण नारनोलिया, नरेंद्र पारीक, संजय शर्मा, प्रकाश शर्मा, शशांक जोशी, अमित खुड़ीवाला, अश्विनी पारीक,पूर्व शहर भाजपा अध्यक्ष महेश शर्मा, अरूण चौधरी, नगरपालिका में पूर्व नेता प्रतिपक्ष संपत चेजारा, रंगलाल माधोपुरा, शिवकुमार मांडिया बजरंग पचार, विधाधर बुढानिया, श्रवण मानासी, रामावतार टांक, रामप्रसाद जडिया, विनोद कुमावत, गोरधन कुमावत सहित बड़ी तादाद में महिलाएं पुरुष व बच्चों ने फागणिया गीतों व धमाल के साथ स्वादिष्ट जलेबी, गर्मागर्म कोफ्ते व चाय की चुस्की के साथ लुत्फ उठाया। कार्यक्रम में बतौर अतिथि मंचस्थ पोरवाल ने फागोत्सव का लाईव कार्यक्रम अभिनेत्री अमिषा पटेल का भी दिखाया।

गड़ाना बने नई पंचायत, एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर क्षेत्र के गाँव गाजुवास के युवा नेता च्यानणमल लुणा, एडवोकेट प्रभुदयाल सहारण, मूलचंद गोस्वामी, गोरी शंकर, नरेश, मुकेश आदि ने ग्राम पंचायत गाजुवास के गाँव गडाणा को नव सृजित ग्राम पंचायत बनाने की मांग को लेकर को लेकर जिला कलेक्टर के नाम उपखंड अधिकारी को ज्ञापन दिया। युवाओं ने ज्ञापन के माध्यम से बताया कि गाँव गडाणा तारानगर पंचायत समिति की वर्तमान ग्राम पंचायत गाजुवास में आता है। गडाणा अकेले की जनसंख्या वर्ष-2011 में 2183 थी जो नवसृजित ग्राम पंचायत गठन के हिसाब से न्यूनतम जनसंख्या की पात्रता शर्त को भी पूर्ण करता है, स्वयं एक आबाद व एक राजस्व ग्राम गाजुवास से अलग होकर खुद के पटवार हल्के के मुख्यालय का गांव है जिसमें ग्राम गडाना, बीड़सानी तारानगर व ढाणी भाटियान गैर आबाद व आबाद गावं आते हैं जिनकी ढाणियों में भी बड़ी संख्या में लोग बसे हुए हैं जिसमें ग्राम ढाणी भाटियान की जनसंख्या वर्ष-2011 में 19 है। ग्राम गडाना की जनसंख्या वर्ष-2011 में 2183 व ग्राम ढाणी भाटियान की जनसंख्या वर्ष-2011 में 19 है दोनों गांवों की कुल जनसंख्या वर्ष-2011 में 2202 है। वर्तमान में ग्राम गडाना ग्राम पंचायत गाजुवास में सम्मिलित है जिस ग्राम पंचायत गाजुवास की जनसंख्या वर्ष-2011 में ग्राम गडाना 2183, ग्राम गाजुवास 2123, ग्राम ढाणी भाटियान 19, ढाणा भाकरान 609 कुल जनसंख्या 4934 है जो मरूस्थलीय जिला चूरू में पंचायतों के गठन की अधिकतम जनसंख्या से काफी ज्यादा हो चुकी है जबकि मरूस्थलीय जिलों में ग्राम पंचायत की न्यूनतम जनसंख्या 2000 व अधिकतम जनसंख्या 4000 रखी गई है। इसलिये ढाणा भाकरान की जनसंख्या सन् 2011 में 609 है जो ढाणा भाकरान ग्राम पंचायत बनने की न्यूनतम पात्रता श्रेणी में नहीं आता है और ग्राम पंचायत गाजुवास का गांव गडाना एक अलग पंचायत बनने की सम्पूर्ण पात्रता रखता है। नवसृजित पंचायत ग्राम गडाना में एक पुराना पंचायत भवन पहले से मौजूद है, दो आंगनबाड़ी केन्द्र पहले से संचालित है, पटवार हल्का मुख्यालय होने से पटवार भवन पहले से मौजूद है और बालिका हॉकी स्टेडियम (राष्टीय साई सेण्टर), राजकीय बालिका उ.मा.वि., महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी मिडियम स्कूल, पशु चिकित्सा उप केन्द्र, हरीजन धर्मशाला, राजकीय उ.प्रा.वि. गडाना व ग्राम सेवा सहकारी समिति की पट्टेशुदा भूमि, अंग्रेजी मिडियम स्कूल के पास पहले से मौजूद है और किसान सेवा केन्द्र व अन्य सरकारी कार्यांलयों के लिए पर्याप्त भूमि सार्वजनिक प्रयोजनार्थ के लिए राजकीय उ.प्रा.वि. गडाना के पास पर्याप्त रकबे में उपलब्ध है। इसलिए ग्राम गडाना को अलग पंचायत बनाकर ग्राम पंचायत गाजुवास में ग्राम गाजुवास व ढाणा भाकरान को रखा जाकर ग्राम गडाना में ढाणी भाटियान को मिलाते हुए नई ग्राम पंचायत बनाया जाए जिससे चूरू जिला मरूस्थलीय जिला घोषित होने की वजह से सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं का ग्राम पंचायत गडाना की नवसृजित पंचायत गठन होने पर ग्राम गडाना, बीड़सानी तारानगर व ढाणी भाटिया के लोगों को व्यापक स्तर पर लाभ व फायदा होकर आमजन तक पहुंच सके। इसलिये ग्राम गडाना को पंचायत के रूप नवसृजित कर अलग पंचायत के रूप में घटित किया जाए ताकि ग्राम गडाना के प्रत्येक व्यक्ति को सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं का लाभ मिल सके व उससे लाभान्वित हो सके। नवसृजित ग्राम पंचायत मुख्यालय गडाना पर आवागमन के भी पर्याप्त साधन उपलब्ध है। दिल्ली-बीकानेर मुख्य सड़क से फंटकर चूरू-नोहर वाया साहवा-भालेरी सड़क में जाकर मिलने वाली मुख्य सड़क ग्राम गडाना के बीचो बीच से होकर गुजरती है जिससे गांव गडाना का सीधा सम्पर्क भी सड़क मार्ग से बना हुआ है और करणी माता मन्दिर, ठाकुरजी मन्दिर, शिवालय, रामदेव मन्दिर, पितर केलिया आदि धार्मिक स्थल भी लोगों के मेलमिलाप व आयोजनों के लिए प्रसिद्ध है।

होली स्नेह मिलन कार्यक्रम फाग गीतों पर जमा रंग

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय दुलिया बास स्थित प्रजापति समाज भवन में भंवरलाल प्रजापत की अध्यक्षता में होली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें भींवराज घोड़ेला एंड पार्टी ने लोक नृत्य के साथ अनेक फाग गीतों की प्रस्तुतियां दी। इसके बाद प्रजापति समाज के अध्यक्ष भंवरलाल तूनवाल, महामंत्री मालीराम होदकासिया, गुरूचरण तूनवाल, एईएन राजेन्द्र प्रजापत, धन्नाराम दुम्मीवाल, चैनप्रकाश किरोड़ीवाल, सुजानगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष सांवरमल होदकासिया, श्रीयादे माता सेवा समिति के अध्यक्ष मूलचंद रेवाडिया मंचासीन थे। हरिदत कुदाल, नरेश खुडिया, मुन्नालाल ढुंढाड़ा, लालचंद बासनीवाल, संजय तूनवाल, कन्हैयालाल रेवाडिया, नरेन्द्र होदकासिया, मांगीलाल घंटेलवाल, गोपाल घोड़ेला, राजेन्द्र सिरस्वा ने माला पहना कर अतिथियों का स्वागत किया। विशिष्ट अतिथि धन्नाराम दुम्मीवाल, चैनप्रकाश किरोड़ीवाल का साफा पहना कर एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर एईएन राजेन्द्र प्रजापत व भंवरलाल तूनवाल ने स्वागत किया। कोषाध्यक्ष गुरूचरण तूनवाल ने आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। सुजानगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स के महामंत्री प्रेम प्रकाश तूनवाल ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन ओमप्रकाश तूनवाल ने किया।

शराब पीकर उत्पात मचाने वाले 14 गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शराब पीकर सार्वजनिक स्थानों पर आवागमन में बाधा पैदा करने वालों के खिलाफ पुलिस ने 60 पुलिस एक्ट के तहत कार्यवाही की है। सीआई बैगाराम मीणा ने बताया कि कुल 14 लोगों को 60 पुलिस एक्ट के तहत गिरफ्तार किया गया। जिसमें लालान, सुनील, नरेंद्रसिंह, ललित, मनफूल, भीकमचंद, लक्ष्मण, मो. रजाक, कुंदनमल, रघुनाथ, देवकरण, लक्ष्मण, कमल, सुनील के नाम शामिल हैं।

पंजाब से आए ट्रस्टियों का किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। पथिक सेना संगठन के कार्यालय में बाबा बलवन्तसिंह ट्रस्ट पटियाला पंजाब के ट्रस्टियों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष महावीर पोसवाल से मुलाकात की। अप्रैल में होने वाले बाबा बलवन्तसिंह जन्मोत्सव पर आयोजन, ट्रस्ट के चल रहे निर्माण व आगामी कार्यक्रम में अतिथियों सन्तों के निमंत्रण को लेकर चर्चा हुई। सरदार मनजीत सिंह खेपड, सरदार चरनजीत सिंह, सरदार हरभजन सिंह चौधरी, यादवेंद्र सिंह चेची सहित टीम का कार्यालय में स्वागत किया गया।

पूर्व प्रशासक को अर्पित की श्रद्धांजलि

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। ब्रम्हाकुमारी के लुहारा गाड़ा स्थित सेवा केंद्र पर ब्रह्माकुमारी संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासक दादी हृदय मोहिनी के चतुर्थ स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन का कार्यक्रम रखा गया। गणेशमल सोमानी, सीताराम शर्मा, लक्ष्मीनारायण, गिनी प्रजापत, बी क देविका इंद्रा प्रजापत ने पुष्पों से श्रद्धांजलि अर्पित की। केंद्र प्रभारी बीके सुप्रभा ने उपस्थित सभा को संबोधित करते हुए कहा कि दादीजी बाल्यकाल से ही इस संस्थान में समर्पित हो गई व सुचारु रुप से पूरी दुनिया में परमात्मा का संदेश देने के निमित्त बने उन्होंने अपने जीवन काल में कभी झूठ नहीं बोला और उन्होंने सभी को परमात्मा का संदेश देते हुए सदा कहा कोई भी कार्य करते हुए अपने को सदा निमित्त भाव रखना है। मान से परे निर्मल होकर कार्य करना है और वाणी को सदा निर्मल रखना यह दादी जी के तीन महावाक्य थे। जो आज के दिन हम सभी को यह दादी जी के अनमोल महावाक्य अपने जीवन में उतारने का संकल्प करना यही दादी जी को सच्ची श्रद्धांजलि है।

पुलिस महानिदेशक से की मुकदमा दर्ज करवाने की मांग

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ(नि.सं.)। पथिक सेवा आश्रम के अध्यक्ष महावीर पोसवाल ने पुलिस महानिदेशक को पत्र प्रेषित कर रतनगढ़ पुलिस को एफआईआर दर्ज करने और जांच में संस्था की ओर से बताए गए बिन्दुओं को शामिल करने की मांग की है। पत्र में बताया गया है कि सुखदेव पुत्र गुमानाराम गुर्जर निवासी प्रतापगढ़, जिला ब्यावर ने सहायता के लिए लिखित में पत्र के साथ एक ऑडियो दिया है। पत्र में पोसवाल ने बताया कि चार मार्च की रात्रि करीब सवा 11 बजे मेगा हाइवे पर मंडेलिया फार्म हाऊस के सामने जिला परिवहन विभाग के उडनदस्ता के निरीक्षक कन्हैयालाल यादव व चार-पांच अन्य कर्मियों ने टॉर्च की रोशनी से पिकअप चला रहे सुखदेव को रूकने का इशारा किया। पत्र में परिवहन अधिकारी व कार्मिकों पर गाली निकालने और 12 हजार रूपये का चालान काटने की बात करते हुए चालान नहीं काटने की एवज में 6500 रूपये मांगने का आरोप लगाया। पत्र में बताया है कि नियम कानूनों को धत्ता बताते हुए पिकअप का साढे तेरह हजार रूपये का ऑनलाइन चालान काट दिया और गाड़ी को थाने लाकर सीज कर दिया। पत्र में पोसवाल ने फरियादी के साथ मारपीट करने, चालान काटने के बाद गाड़ी को सीज करने, गालियां निकालने पर सवालिया निशान लगाते हुए परिवहन दस्ते पर फरियादी का अपहरण करने और अमानवीय व्यवहार करने और पांच हजार रूपये की रिश्वत लेने का आरोप लगाया है। पत्र में रतनगढ़ पुलिस की ओर से अभी तक मुकदमा दर्ज नहीं करने का आरोप लगाया गया है।

होली व ईद पर्व को लेकर शान्ति समिति सदस्यों की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। होली व ईद पर्व को देखते हुए कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए मंगलवार को तारानगर के थाना परिसर में उप पुलिस अधीक्षक रोहित सांखला की अध्यक्षता में शहर के शान्ति समिति सदस्यों की बैठक आयोजित हुई जिसमें कानून व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, अतिक्रमण हटाने, सीसीटीवी लगाने आदि पर चर्चा हुई। डीएसपी सांखला ने कहा कि त्यौहारों के दौरान असामाजिक तत्वों की ओर से सोशल मीडिया पर किसी भी प्रकार की अफवाह फैलाने या हुड़दंग मचाने की कोशिश को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। सभी कानून व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस का सहयोग करें यदि कहीं कोई गड़बड़ी दिखे तो तुरंत पुलिस प्रशासन को सूचित करें ताकि समय रहते उचित कार्यवाही की जा सके। थानाधिकारी गौरव खिड़िया ने त्यौहारों के दौरान शान्ति व सौहार्द बनाए रखने की अपील की और कहा सभी कस्बेवासी एक परिवार की तरह त्यौहार मनाये ताकि आसपास के क्षेत्र में अच्छा संदेश जाए। नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी अजय प्रताप सिँह ने कहा बाजार में जिन जिन व्यापारियों ने सड़क पर सामान रखकर रास्तों को बाधित कर रखा वो अपना सामान सड़क से हटा लें नहीं तो प्रशासन की ओर से कार्यवाही की जाएगी। इस मोके पर नायब तहसीलदार पदम सिँह मीणा, समाज सेवी अमरसिँह चारण, बीडीसी सदस्य मोहरसिँह ज्याणी, सरपंच शिवराम सिहाग, राकेश शर्मा, जमरदीन तेली, एएसआई सुमेर मीणा, सयुंक्त व्यापार मंडल अध्यक्ष इमिलाल प्रजापत, मोहम्मद तैयब, पार्षद बाबू हुसैन कुरैशी, हरी इंदौरिया, कैलाश चाचान, माणक सैनी, यूनस खोखर, वासुदेव शर्मा, राधा कृष्ण सोनी, महेश मंत्री, गुलाब सोलंकी, आरता कुमार रेगर, फारूक मोहम्मद, सुभाष शर्मा, राजू नायक, ओम प्रकाश, सुरेश कुमार, विकास, अजीतसिंह, सहित पुलिस स्टाफ व शान्ति समिति के काफ़ी लोग बैठक में उपस्थित रहे।

नेत्रदान के लिए किया प्रेरित, आंखों की सुरक्षा की जानकारी

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निसं.)। आपको आंखों में अकारण चमकती हुई गोल लकीरें नजर आए, आंखों में दर्द महसूस हो, कम दिखाई दे तो यह काला मोतिया (ग्लूकोमा) हो सकता है। काला मोतिया आपकी आंखों की रोशनी समाप्त कर सकता है। तत्काल आंखों के चिकित्सक से सम्पर्क करें। विशेष रूप से 45 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति आंखों की जांच कराए। उक्त विचार नेत्रदान -रक्तदान जनजागरण अभियान के जिला संयोजक व स्थानीय नेत्र संग्रह केन्द्र के समन्वयक गणेशदास स्वामी ने गांव बरड़ासर के राम मन्दिर प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में जानकारी देते हुए आमजन को जागरूक किया। उन्होंने सरदारशहर में शुरू हुए नेत्र संग्रह केन्द्र में ज्यादा से ज्यादा नेत्रदान करने की ग्रामीणों से अपील की। गांव के सामाजिक कार्यकर्ता समुन्दर लाल मेघवाल ने नेत्रदान को परिवार की परम्परा बनाने का आव्हान किया। इस अवसर पर ग्लूकोमा व नेत्रदान की जानकारियां दी गई। इस अवसर पर मांगीलाल पड़िहारा, तेजाराम, सुलतानाराम, डूंगराराम, हीराराम, ओंकारमल, कन्हैयालाल सहित अनेक ग्रामीण उपस्थित रहे। 15 मार्च तक चलने वाले सप्ताह के दौरान विद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे और आमजन को जागरूक किया जाएगा।

फसल बीमा क्लेम में गड़बड़ी का आरोप

मेलूसर के किसानों ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले ग्राम पंचायत मेलूसर के किसानों ने फसल बीमा क्लेम में पारदर्शिता की मांग को लेकर एसडीएम कार्यालय में प्रदर्शन कर किसान नेता रूपचंद सारण के नेतृत्व में किसानों ने प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। किसानों की मुख्य मांग है कि बीमा क्लेम सैटेलाइट डेटा के बजाय क्रॉप कटिंग के आधार पर दिया जाए। उन्होंने कृषि पर्यवेक्षक और पटवारी पर गंभीर आरोप लगाए हैं। किसानों का कहना है कि अधिकारी फसल की गिरदावरी और बीमा प्रीमियम की रिपोर्ट में गड़बड़ी कर अपने चहेतों को फायदा पहुंचा रहे हैं। ग्राम पंचायत मेलूसर के किसानों ने मांग की है कि रबी और खरीफ फसलों की क्रॉप कटिंग की जानकारी 10 दिन पहले पंचायत के नोटिस बोर्ड पर लगाई जाए। साथ ही वार्ड पंचों को भी सूचित किया जाए। किसानों ने आरोप लगाया कि पटवारी और कृषि पर्यवेक्षक खसरा गांव की जानकारी मांगने पर न तो सूचना देते हैं और न ही फोन उठाते हैं। किसानों ने फर्जी क्लेम और वसूली की जांच की मांग की है। उनकी मांग है कि वास्तविक नुकसान उठाने वाले किसानों को ही क्लेम का लाभ मिले। प्रदर्शन में सांवरमल जाखड़, राकेश चौधरी, विकास कुमार, लूणाराम, गज्जूराम, लालचंद, श्रवण कुमार, प्रभुराम, सहीराम, राजकुमार, रोहिताश, मांगीलाल, दाताराम और नरेंद्र सहित अनेक किसान मौजूद रहे।

आग से डंपर जला, पाया काबू

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय सालासर रोड़ पर स्थित बालाजी नर्सिंग कॉलेज के पास एक डंफर में आग लग गई। सूचना पर दमकल के फायर इंचार्ज भंवरसिंह, साजिद खान, संदीप सांवरिया, विमल आदि मौके पर पहुंचे और आग को बुझाने का काम किया। गनीमत ये रही कि इस हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ।

तारानगर स्थापना दिवस की तैयारियों को लेकर बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। उपखंड अधिकारी राजेंद्र कुमार की अध्यक्षता में पंचायत समिति सभागार में तारानगर स्थापना दिवस को लेकर बैठक आयोजित हुई। बैठक में बताया गया कि 16 मार्च को आयोजित समारोह में बॉलीवुड और राजस्थानी संस्कृति के लोक कलाकार अपनी प्रस्तुतिया देंगे, विभिन्न व्यवस्थाओं को लेकर चर्चा की गई। इस मोके पर प्रधान संजय कस्वां, विकास अधिकारी विनोद कुमार धायल, चेयरमेन प्रियंका बानो, अधिशाषी अधिकारी अजय प्रताप सिह, संयुक्त व्यापार मंडल के अध्यक्ष इमिलाल कांटीवाल, स्टार सिटी कल्चर सोसायटी के अध्यक्ष सुनील बुंदेला, किशनसिंह भाटी, गोविंद शर्मा, पवन सैनी, मुकेश शर्मा रेडी, प्रवीण शर्मा, अनिल दायमा आदि मौजूद रहे।

कार्यकर्ता एकजुट होकर जिले में पार्टी और संगठन को मजबूती प्रदान करें: राव

जिला कांग्रेस कमेटी की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय सचिव व राजस्थान सह-प्रभारी चिरंजीव राव ने मंगलवार को जैन गेस्ट हाउस में चूरू जिला कांग्रेस कमेटी की बैठक ली। बैठक की अध्यक्षता चूरू जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष इंद्राज खीचड़ ने की। इस अवसर पर राव ने कहा कि बैठक का उद्देश्य कांग्रेस को जमीनी स्तर तक मजबूत करना व कार्यकर्ताओं को आमजन के बीच गतिशील करना है। उन्होंने कहा कि राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष का संदेश ब्लॉक, नगर, मंडल, ग्राम पंचायत, बूथ कांग्रेस कमेटियों तक पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि सक्रिय कार्यकर्ताओं को पूरा सम्मान पार्टी में मिलेगा और जो कार्यकर्ता निष्क्रिय हैं, उनको बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा। उन्होंने कहा कि सभी कांग्रेस कार्यकर्ता एकजुट होकर जिले में पार्टी और संगठन को मजबूत कर जमीनी स्तर पर संगठनात्मक गतिविधियों का प्रभावी क्रियान्वयन करें। उन्होंने कहा कि जिले से लेकर बूथ स्तर तक बैठक लेकर पार्टी का फीडबैक लिया जाएगा। कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष व बीकानेर संभाग प्रभारी जगदीश जांगिड ने कहा कि हमें चूरू जिले में कांग्रेस के प्रति समर्पित व निष्ठावान कार्यक्रताओं को आगामी कमेटियों व कार्यकारिणी में उचित प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाएगा। जिलाध्यक्ष इंद्राज खीचड़ ने कहा कि हम सबको मिलकर संगठन को मजबूत करना होगा। राज्य व केंद्र सरकार की जनविरोधी नीतियों को आम जन के बीच पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक महीने ब्लॉक व मंडल की बैठक अनिवार्य रूप से आयोजित की जाएगी और कांग्रेस कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार किया जायेगा। पूर्व विधायक हाजी मकबूल मंडेलिया ने कहा कि हम सबको संकल्पबद्ध होकर आगामी नगर परिषद, पंचायत चुनाव में कांग्रेस पार्टी को मजबूत करना है। इस अवसर पर पीसीसी प्रदेश उपाध्यक्ष व पूर्व मंत्री नसीम अख्तर इंसाफ, महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष रेहाना रियाज चिश्ती, वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष खानू खान बुधवाली, पूर्व विधायक डॉ. कृष्णा पूनिया, तारानगर प्रधान संजय कस्वां ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस दौरान प्रदेश सचिव प्रधुम्न सिंह राठौड़, शहर ब्लॉक अध्यक्ष असलम खोखर, देहात ब्लॉक अध्यक्ष किशोर धान्धू, तारानगर नगर पालिका चेयरमैन प्रियंका बानो, आदूराम न्यौल, मुस्ताक खान, गोविन्द महनसरिया, रामजीलाल शर्मा, नारायण बालाण, रमजान खां, रामप्रताप कांटिवाल, शिवकुमार शर्मा, रियाजत खान, रामेश्वर प्रजापति, जमील चौहान, ताराचंद सारण, डॉ. प्रमेन्द्र सिहाग, श्रवण बसेर, किशानाराम बाबल, सोहनलाल मेघवाल, हमीद रिसालदार, उम्मेद सिंह, रामनारायण व्यास, इस्लाम खान, अनूप कुमार लुगरिया, लालचन्द खीची, गन्नी मोहम्मद, सुरेन्द्र सहारण, विजयपाल भुवाल, विधाधर बेनीवाल, करतार सिंह, जैसाराम प्रजापत, विनोद खटीक, दिनेश रोयल, नरपत गोदारा, बुल्लेशाह, नरेन्द्र बेनिवाल, विकास कडवासरा, सीताराम प्रजापत, विकास मील, हेमन्त सिहाग, सोयल खान, अब्दुला कुरेशी, अली मोहम्मद भाटी, रामावतार मंगलहारा, तरूण कुमार, अरविन्द चाकलान, दलीप कुमार, सुरेन्द्र हुड्डा, गिरधारी, रणजीत खौथ, विक्रम सिंह, विकास बुडानिया, रामकरण गुलेरिया सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन कांग्रेस प्रवक्ता एडवोकेट सद्दाम हुसैन व अनवर कुरैशी ने किया।

राजस्थान जयपुर टाइम्स

जयपुर, बुधवार
12 मार्च, 2025

भादासर पीएचसी में रिक्त पदों को भरने की मांग को लेकर एसडीएम कार्यालय का घेराव

24 घंटे का अल्टीमेटम, नहीं तो करेंगे चक्काजाम

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील में अखिल भारतीय किसान सभा के नेतृत्व में मंगलवार को ग्रामीणों ने एसडीएम कार्यालय का घेराव किया। गांव भादासर पीएचसी में रिक्त पदों को भरने की मांग को लेकर यह विरोध प्रदर्शन किया गया। किसान नेता भगवान राम जाखड़ और कम्युनिस्ट पार्टी नेता रामकिशन छींपा ने बताया कि पिछले चार दिनों से पीएचसी के सामने ग्रामीणों का अनिश्चितकालीन धरना जारी है। चिकित्सा विभाग का कोई जिम्मेदार अधिकारी अभी तक वार्ता के लिए नहीं पहुंचा है। पंचायत समिति सदस्य महावीर जाखड़ के अनुसार इस पीएचसी से 11 गांवों के मरीजों को सेवाएं मिलती हैं। उचित चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में मरीजों को सरदारशहर या बीकानेर जाना पड़ता है। अस्पताल में स्वीकृत पदों में से चार पद खाली हैं। भगवाना राम जाखड़ ने चेतावनी दी कि अगर 24 घंटे में रिक्त पदों को नहीं भरा गया तो स्थानीय लोग सरदारशहर- बीकानेर मुख्य सड़क को जाम कर देंगे। खाली पदों में चिकित्सा अधिकारी, जीएनएम, फार्मासिस्ट और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी शामिल हैं। प्रदर्शनकारियों ने पीएचसी को सीएचसी में अपग्रेड करने की भी मांग की है। विरोध प्रदर्शन में महावीर जाखड़, गंगाजल सुथार, मामराज, गोमदराम, बालूराम, ईश्वरराम सिंह, रेवतराम, भैराराम, श्रवण कुमार, रामकरण, सावताराम, सत्यनारायण और पूर्णाराम सहित बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे।

त्योहारों पर मुस्तैद रहे अधिकारी, बेहतरीन हो कानून एवं सुरक्षा व्यवस्थाः सुराणा

जिला कलक्टर ने राजस्व अधिकारियों की बैठक में दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने मंगलवार को जिला परिषद सभागार में राजस्व अधिकारियों की बैठक में राजस्व से संबंधित बिंदुओं पर चर्चा कर विस्तृत निर्देश दिए। जिला कलक्टर सुराणा ने सभी उपखंड अधिकारियों व तहसीलदारों से कहा कि जिले में त्योहारों व पर्वों के दौरान टीम मुस्तैद रहे तथा कानून व सुरक्षा व्यवस्था बेहतरीन हो। कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था प्राथमिकता है। इसलिए फील्ड स्तरीय अधिकारी अलर्ट रहें तथा प्रत्येक गतिविधि पर निगरानी रखें। उन्होंने कहा कि आगामी बरसात के मौसम के लिए पूर्व तैयारियां करते हुए समुचित प्रबंधन करें। बरसात के दौरान उपखंड क्षेत्र में आने वाली परेशानियों के लिए पूर्व तैयारी रखें और पानी भराव आदि समस्या से निपटने के लिए गैनाणियों को खाली करवाना, पंप सेटों का समुचित संचालन, रिचार्ज स्ट्रक्चर बनाने आदि की कार्यवाही करें। सुराणा ने अधिकारियों से सड़क सुरक्षा गतिविधियों की चर्चा करते हुए कहा कि उनके अधिकार क्षेत्र में अधिकतम दुर्घटनाओं वाले स्थानों दुर्घटनाओं के कारणों का एनालिसिस करें और संबंधित रोड ऑनिंग एजेंसी के माध्यम से की जाने वाली कार्यवाही की मॉनीटरिंग करें। उपखंड अधिकारी व तहसीलदार फसल कटाई के दौरान मुस्तैद रहे तथा विभागीय कार्यों को स्पष्टता से पूरा करें। इसी के साथ राजस्व अधिकारी नियमित रुप से कोर्ट में बैठें और राजस्व से जुड़े परिवादों का समुचित निस्तारण करें। विभिन्न प्रोजेक्ट्स में भूमि अवाप्ति के प्रकरणों का त्वरितता से निस्तारण करें ताकि सुविधाओं के विस्तार के साथ आमजन को बेहतर सेवाओं का लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि पंचायतीराज संस्थाओं के परिसीमन कार्य को गंभीरता से देखें। परिसीमन कार्य में स्पष्टता रहे। इसी के साथ राजस्व गांवों के नियमानुसार प्रस्ताव तैयार कर भिजवाएं। उन्होंने कहा कि राजस्व से जुड़े प्रकरणों का सतर्कता व त्वरितता के साथ निस्तारण करें। सुराणा ने कहा कि राजस्व टीम फार्मर रजिस्ट्री शिविरों में पीएम किसान सम्मान निधि योजना के लाभार्थियों को टच करते हुए फार्मर आईडी बनाएं व निर्देशानुसार अपेक्षित प्रगति लाए। जिला कलक्टर ने बजट घोषणाओं, राजस्व न्यायालय शाखा, आरटीआई एक्ट, भूमि अवाप्ति, भू-रूपांतरण, राजकीय प्रयोजनार्थ भूमि आवंटन के लंबित प्रकरण, खुले बोरवेलों को ढकवाने, आरटीआई, अतिक्रमण, विभिन्न निर्माण कार्यों, लोकायुक्त, सतर्कता समिति, विभिन्न आयोगों, मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री कार्यालय से प्राप्त प्रकरणों, गिरदावरी कार्य, पंजीयन में निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति सहित राजस्व से जुड़े बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा कर अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए। एडीएम अर्पिता सोनी ने बैठक कार्यवाही का संचालन करते हुए राजस्व से संबंधित बिंदुओं पर चर्चा कर दिशा-निर्देशों की समुचित पालना के निर्देश दिए। इस दौरान सुजानगढ़ एडीएम मंगलाराम पूनिया, चूरू एसडीएम बिजेंद्र सिंह, सुजानगढ़ एसडीएम ओमप्रकाश वर्मा, राजगढ़ एसडीएम मीनू वर्मा, सरदारशहर एसडीएम दिव्या, बीदासर एसडीएम अमीलाल, तारानगर एसडीएम राजेंद्र कुमार, रतनगढ़ एसडीएम रामकुमार वर्मा, चूरू तहसीलदार अशोक गोरा, राजगढ़ तहसीलदार धीरज झाझड़िया, सुजानगढ़ तहसीलदार राजू देवी, सरदारशहर तहसीलदार रतनलाल, रतनगढ़ तहसीलदार सज्जन कुमार लाटा, नायब तहसीलदार महेंद्र गहलोत, प्रहलाद पारीक सहित अन्य राजस्व अधिकारी मौजूद रहे।

सड़क हादसे में युवक-युवती की मौत

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। उपखंड के मेगा हाईवे पर गांव भानीपुरा के पास सोमवार शाम को ट्रक और निजी एंबुलेंस की टक्कर में एक युवक व युवती की मौत हो गई थी। मामले में भानीपुरा पुलिस ने कार्रवाई करते हुए परिजनों की मौजूदगी में दोनों शवों का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनों को सुपुर्द कर दिए। एएसआई राजेंद्र सिंह ने बताया कि सरदारशहर निवासी प्रभुराम प्रजापत ने रिपोर्ट दी है कि सोमवार शाम करीब साढ़े 4 बजे मुझे सूचना मिली कि मेरी भतीजी 21 वर्षीय अनामिका पुत्री मनोज प्रजापत का एक्सीडेंट हो गया है। जिस पर यह बात मैंने मेरे छोटे भाई मनोज प्रजापत व मेरे भतीजे सोनू प्रजापत को बताई और हमने पता किया तो पता चला कि सोमवार को मेरे भाई की लड़की अनामिका प्रजापत जो पल्लू की तरफ से एंबुलेंस वैन में सवार होकर चालक बीकानेर जिला के पांचू निवासी 23 वर्षीय नवाब अली मिरासी के साथ सरदारशहर आ रही थी। भानीपुरा के पास सोमवार शाम करीब सवा 4 बजे सामने से आ रहे एक ट्रक के चालक ने ट्रक को तेजगति और लापरवाही से चलाते हुए सही दिशा में चल रही एंबुलेंस वैन को टक्कर मार दी। हादसे में मेरे भाई की लड़की अनामिका प्रजापत व चालक नवाब अली मिरासी के गंभीर चोटें आने के कारण दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर मामला दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

राजलदेसर में एतिहासिक घिंदर घिन्दर नृत्य का आगाज, जगमगा उठा शहर

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे में होली पर्व पर होने वाले पांच दिवसीय घिन्दर नृत्य का एकादशी के दिन आगाज हुआ। कस्बे दो जगह होने वाले परम्परागत घिन्दर नृत्य को लेकर तैयारियां पूर्ण कर ली। अबकी बार सजावट ने भी कस्बे की सुन्दरता को चार चांद लगाए। इस बार होली पर ही दिपावली की सी सजावट के घिन्दर मैदान दुल्हन की तरह नजर आ रहा है। कस्बे में वर्षों से चली आ रही घिन्दर नृत्य आयोजन कस्बे में गांधी चौक में गांधी चौक नृत्य कला मण्डल और मैन बाज़ार में लोक नृत्य व घिन्दर परिषद की ओर से करवाया जाता है। दोनो घिन्दर कमेटियां इस बार घिन्दर नृत्य की परम्परा को ओर अधिक सुन्दर बनाने में लगी है। गत वर्ष से नगरपालिका का भी सहयोग शुरू किया गया था। गांधी नृत्य कला मण्डल के अध्यक्ष संजय महावर ने ढोल नगाड़ों की पूजा अर्चना कर घिन्दर नृत्य का आगाज किया। वहीं दुसरी ओर लोक नृत्य व घिन्दर परिषद के अध्यक्ष भंवरलाल नाई ने ढोल नगाड़ों की पुजा कर ढोल बजाकर आगाज किया। होली के रसियों ने विभिन्न वेशभूषा में देर रात्री तक नृत्य किया।

कार्यालय पंचायत समिति तारानगर, चूरू (राज.)

आम जनता से अपील

- सरकारी जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठायें।
- अपने वार्ड, मोहल्ले व घरों के सामने स्वच्छता बनाएं रखें।
- साफ सफाई का ध्यान रखते हुए कचरा निर्धारित स्थान पर डालें।
- खुले में शौच नहीं करें, शौचालय का निर्माण करवायें।
- सरकारी भूमि पर अतिक्रमण नहीं करें।
- प्रदुषण मुक्त यातायात साधनों का उपयोग करें।
- जन्म, मृत्यु एवं विवाह पंजीयन अवश्य करवायें।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सामान्य जीवन स्तर में सुधार करने का प्रयास करें।
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान को बढ़ावा दें।
- प्लास्टिक कैरी बैग का प्रयोग ना करें, जूट/कपड़े के थैले का प्रयोग करें।
- 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर मतदाता सूची में अपना नाम अवश्य जुड़वाकर लोकतंत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।
- ग्राम पंचायत में होने वाली ग्राम सभा में भाग लेवें, ग्राम पंचायत द्वारा करवाये गये कार्यो का सामाजिक अंकेक्षण करवाये।
- जागरूकता सृजन, स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से स्थायी स्वच्छता सुविधाओं को बढ़ावा देने वाले समुदायों और पंचायती राज संस्थाओं को प्रोत्साहित करें।
- सम्पूर्ण स्वच्छता के लिए ठोस और तरल अपशिष्ट कचरा प्रबंधित पर विशेष ध्यान देते हुए समुदाय प्रबंधित पर्यावरणीय स्वच्छता पद्धति विकसित करें।
- पंचायत एवं ग्राम पंचायत स्तर पर मुख्यमंत्री वृक्षारोपण महाअभियान के तहत अधिकाधिक पौधरोपण करें।

केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं में पात्र व्यक्ति आवेदन कर योजना का लाभ उठावें

- मुख्यमंत्री वृद्धावस्था सम्मान पेंशन योजना
- मुख्यमंत्री एकल नारी सम्मान पेंशन योजना
- मुख्यमंत्री विशेष योग्यजन सम्मान पेंशन योजना
- मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना
- मुख्यमंत्री आयुष्मान दुर्घटना बीमा योजना
- मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना
- मुख्यमंत्री निःशुल्क जाँच योजना
- मुख्यमंत्री विश्वकर्मा पेंशन योजना
- लाडो प्रोत्साहन योजना
- श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना
- गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना
- पालनहार योजना
- महात्मा गांधी नरेगा योजना
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि
- प्रधानमंत्री आवास योजना
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

पर्यावरण की सुरक्षा हेतु ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं।

पेड़ हमें फल, छाया और जीवनदायिनी ऑक्सीजन देते है।

संजय कस्वां
प्रधान

समस्त पंचायत समिति सदस्य एवं स्टाफ,
पंचायत समिति तारानगर, चूरू (राज.)

विनोद कुमार धायल
विकास अधिकारी

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।